

प्रकाशक:—

गीतम बुक डिपो,

नई राहक, दिल्ली ।

---

सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन

---

पृष्ठ —

८० वर आदेश प्रेषण

दिल्ली ।



( ८ )

वनों से बाल-काल के वनों के साथ ही निर्द्वन्द्व-वृक्ष, मातृ-वृक्ष, निर्वन्धन-वृक्ष  
आदि भी हैं ।

आता है 'आपसी निर्वन्धन भाषा' का वह सर्वथा मंजोरित, परिवर्तित  
एवं परिवर्तित भाषाएँ हमारे लोगों को निर्वन्धन-वृक्ष में सदायक एवं  
व्यक्तित्वी सिद्ध होगी ।

—सिद्ध

# प्रथम-खण्ड

( निबन्ध-विभाग )

संख्या	विषय	पृष्ठ
१.	निबन्ध-वक्ता और उसके भेद	१
२.	हमारे मातृभूमि की चर्चा	१०
३.	भौतिक शिक्षा	१२
४.	संयुक्त राष्ट्रसंघ	१३
५.	ग्राम-संस्थापन	२३
६.	सुसुप्त शिखर का सम्बोधन	२८
७.	मातृभूमि की महिमा	३३
८.	विकास के कारण	३६
९.	वर्तमान-पाठ्यक्रम	३६
१०.	संयुक्त भाषण	४२
११.	विगत शताब्दी का सुदृष्ट १८३३—४४	४२
१२.	नागरिक वर्तमान	४३
१३.	संस्कृत की महिमा	४६
१४.	सर्वा शिक्षा-योजना (लेमिन्-मिन्)	४६
१५.	संयुक्त भाषण	४८
१६.	ग्राम-विकास समिति के कारण	४९
१७.	विश्वीयता के लक्ष्य के कारण	५३
१८.	शिक्षा की योजना	५८
१९.	सुसुप्त शिखर के कारण	६३
२०.	शिक्षण की योजना के सुदृष्ट १८३३—४४	८१
२१.	शिक्षण के कारण	८०
२२.	संयुक्त भाषण	८३

संख्या	विषय	
२३.	सचद्वित्रिणा	
२४.	मिलनवयना	१०
२५.	हम शोषेजीजी कैसे हो सकते हैं ?	१०
२६.	हमारा मोक्ष	१०
२७.	भारत वर्ष में ग्राम-सुधार	११
२८.	हमारी प्रथम राजक्रीडा ( १८२७ )	१२
२९.	मित्र के कर्तव्य	१२
३०.	महात्मा बुद्ध	१३
३१.	महात्मा गाँधी	१३
३२.	बुद्धनि मित्राजी	१४
३३.	महाकवि तुलसीदास	१४
३४.	कवि-सम्मेलन	१४
३५.	समाचार-पत्रों की उपयोगिता	१५
३६.	वायुमाल	१५
३७.	देशादम के आभ	१५
३८.	श्री-गिष्ठा	१५
३९.	गच्छाई	१६
४०.	भोजन में चर्हिमा का महत्व	१६
४१.	समय का सदुपयोग	१६
४२.	दार्ष्टी	१६
४३.	निराद का निवेदन	१६
४४.	उत्तम-उत्तम	१६
४५.	समाज-समाज	१६
४६.	समाज-समाज	१६
४७.	समाज-समाज	१६
४८.	समाज-समाज	१६
४९.	समाज-समाज	१६
५०.	समाज-समाज	१६
५१.	समाज-समाज	१६
५२.	समाज-समाज	१६
५३.	समाज-समाज	१६
५४.	समाज-समाज	१६
५५.	समाज-समाज	१६
५६.	समाज-समाज	१६
५७.	समाज-समाज	१६
५८.	समाज-समाज	१६
५९.	समाज-समाज	१६
६०.	समाज-समाज	१६

विषय	पृष्ठा
बाला-पालन	२१३
पुटबाळ का खेल	२१४
जीव्य पशु की आत्म-बहानी	२१८
रूपे की आत्म-बहानी	२२१
प्रहर्षिणी	२२६
भारतीय किसान	२२६
गन्तोदी मदा सुखी	२२८
बाजधर का बाप-बहादुर संस्था	२३२
आवरण	२३२
गुह से काम दानि	२३०
हिन्दुस्तानी खेल	२३८
गार्वभीम के विहारीद्वारा	२३४
कादर जीवन की कादर दिवा	२३८
राज-भाषा का राज	२३१
रूप-अन्नादमी दह	२३७
राज के कसबा दं० केदर	२३२
देह की विहाय खेलों की कादरबन्ना ई	२३८
देह की रीति की कादरबन्ना ई	२३३
आजकी समाज के काली का काल	२३७
जीव्य के दलित का महत्त्व	२३२
राज कादर	२३३

## दुमरा-खण्ड

( १९११ ई० १२-१३ )

राज कादर	२३३
राज कादर	२३३
राज कादर	२३३
राज कादर	२३३

संख्या	विषय	पृष्ठ
१.	पिता का पत्र, पुत्र के नाम ( विद्यार्थी जीवन )	१०७
२.	पत्र माता को ( छात्राश्रम के सम्बन्ध में )	१०८
३.	पत्र मित्र को ( पहाड़ की यात्रा )	१११
४.	छोटे भाई को पत्र	११४
५.	शिष्य को पत्र ( कुम्भारि की हाथियों पर )	११५
६.	विवाह का निमन्त्रण-पत्र	११७
१०.	शोक-पत्र	११८
११.	मीति-भोज का निमन्त्रण-पत्र	११९
१२.	गार्डन पार्टी का पत्र	१२०
१३.	विधेयामक उत्तर,	१२०
१४.	विधेयामक उत्तर	१२०
१५.	पुस्तक-विह्वेता को पत्र	१२१
१६.	शोक प्रस्ताव	१२१
१७.	याचना पत्र	१२१
१८.	सुही का प्रार्थना-पत्र	१२१
१९.	हाडी मैच खेलने का आवेदन-पत्र	१२१
२०.	बधाई पत्र	१२१
२१.	अभिनादन पत्र ( मानपत्र )	१२२
२२.	छोटे भाई को पत्र ( व्यायाम के लाभ )	१२२
२३.	कपड़ा खरीदने का पत्र	१२३
२४.	विदाई-पत्र	१२३
२५.	कपड़ा खरीदने का पत्र	१२३
२६.	देखिये अधिकारियों को प्रार्थना-पत्र	१२३
२७.	कचहरी साहब को खगान माफ करने का प्रार्थना-पत्र	१२३
२८.	नौकरी के त्रिये प्रार्थना-पत्र	१२३
२९.	स्पृणितिवैजिटी के सम्बन्ध की सिफारिश का पत्र	१२४
३०.	समस्तिक के नाम पत्र	१२४
	मित्र को पत्र ( मर्ती की सुविधों का प्रोग्राम )	१२५-१२६

## निबन्ध कला और उसके भेद

विद्यार्थ शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'विद्या श्रवण' अर्थात् साधक, प्रवक्तृ से एक श्रवण में बैठे हुए विद्यार्थी। जिस क्षेत्र में एक ही विषय को लेकर विस्तृत प्रकार विभिन्न विचारों को समझा दिया जाता है वह विद्यार्थ का अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्ध होता है। इसका अन्वितार्थ है कि विद्यादाता समझता तब प्रासंगिक ही होनी चाहिए। अध्ययन का सामाजिक विषय को नहीं से दृष्टि होत विद्यार्थी को ही नहीं पाते।

निम्न के विद्वत् विद्वत् को सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती, कुछ निम्न कोटि वर्ग से लेकर अत्यन्त उच्च तक सभी निम्न के विद्वत् हो सकते हैं। भूविज्ञान और भौतिकी तक को संसार के अत्यन्त उच्चकोटि के विद्वत् निम्न का विद्वत् बनाया है। जैविक का विभिन्न वर्गिक हो विद्वत् को मजबूत या निर्भीक बनाया जाता है। निम्न में इसी कारण वर्गिक की बात देखना आवश्यक हो गया है। यदि जैविक विद्वत्-विज्ञान और भौतिक के समस्त विद्वत् वर्गिक को हमने मिला देना है तो यह विद्वत् मजबूत और सारा सचका शोधक तथा आश्चर्य प्रणीत होने लगता है। विद्वत् के उच्च कोटि को के इसी कारण बहुत मात्रा में विद्वत् पर जैव निम्न का ही जमा बजावण के बाद में यह वर्गिक किया है।

काकाभट्ट, जिसके दो पुत्रें बगये के लिए दो नुस्ख लखों को खर्च-  
कर बनाये—दिया गया है। १. दिया का काका भट्ट लख है जिस पर  
जिन्द का करिमाज दिया है। जिस लख काका के काका का करिमाज  
है जो लखी लख जिसके दो दिवान-काका का। यदि दिया के लख का  
दिवान-काका लखी है तो वह लख के का जिन्द लखी जिस  
लखी दिवान-काका का लख काये व का लख काका है, लख जिन्द  
का काका जि दिन्द लखी लख लख लख लख जि दिन्द का काका  
लख लख लख है लख लख लख लख लख लख लख लख लख लख लख



विषय से सम्बद्ध पुस्तकों का अध्ययन कर अन्य विद्वानों के विचारों का पता लगाइये। इस प्रकार मन्थन करने से आपके पास प्रचुर परिमाण में भाव-सामग्री जुट सकेगी और आप तब भली-भाँति विषय का स्पष्टीकरण एवं प्रतिपादन कर सकेंगे। विषय के उपयुक्त सामग्री एकत्र करने में अध्ययन के साथ लेखक को जगत्प्रसिद्ध रहस्य-साधारण विचारों का व्यक्ति-लोकप्रिय निरीक्षण एवं पर्यालोचन भी करना चाहिए। केवल पुस्तकें पढ़ने से ही विषय के उपयुक्त सामग्री नहीं जुटती।

विचार-विमर्श तथा अध्ययन के उपरान्त निबन्ध की दमन्युक्त रूपरेखा तैयार करना चाहिए। जिस क्रम से विचारों का सुन्दर करना हो उसी क्रम से समस्त विचारों का बोधात्मक करके विषय प्रारम्भ करिये। एक विचार के एक अनुषंग (परिमाण) में लिखिये। पुनरावृत्ति तथा अत्रासक्तिक बातों को बचाने के लिए विशेष सतर्कता की आवश्यकता है।

निबन्ध का दूसरा अनिवार्य तत्व है शैली। शैली को लेखक का विशिष्ट स्वत्वरूप भी कहा जाता है। कुछ लोग इसे व्यक्ति का परिधान कहते हैं और कतिपय विद्वानों की सम्मति में यह कारीरिक सौन्दर्य की भाँति व्यक्ति से अभिन्न तत्व की भाँति है। शैली की सीमा में अभिव्यक्ति, भाषा या शब्द-चयन, लोकोपयोग, मुद्रावली आदि सभी आवश्यक बातों का समावेश होता है। अभिव्यक्ति के प्रकार का ही हमरा नाम यदि शैली है तो भाषा चुनकर सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग है। व्याकरण-सम्मत, शुद्ध, ग्रांथक एवं परिष्कृत भाषा का जो प्रभाव पाठक पर पड़ता है वह अशुद्ध एवं अपरिष्कृत भाषा का कदापि नहीं होता; किन्तु परिष्कार तथा ग्रांथक बनाने के मोह में भाषा को दुरुद्ध और बोद्धक बना देना भी शैली की दृष्टि से होव हो कहा जायगा। आवश्यक तो यह है कि भाषा शुद्ध होने के साथ-साथ सरल, सुशील तथा सरस हो। परिभ्रम-भाष्य कठिन शब्दों के बोध से भाषा की छाद देना शैली की दृष्टि से हानिकारक ही समझा जायगा। भाषा वह अच्छी होती है जो बिना प्रयास के वैयक्तिक रूप से पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ती जाय तथा धारा-प्रवाह रूप से चल कर अभिमत अर्थ का

घोषण करे। मूल-निर्धार के समान कल-कल भाद करती हुई अविरत गति से प्रवहमाण भाषा ही निवन्ध की सर्वोत्कृष्ट भाषा है। दीर्घ और ममास-प्रधान विलम्ब वाक्यों के प्रयोग से भाषा को दुर्गम बनाना शैली के सौन्दर्य पर कुटारापात है। उन्हीं शब्दों का प्रयोग समीचीन और व्यावहारिक है जो सरल तथा पूर्णरूपेण ज्ञात हैं। भाषा की प्रकृति को बिना पढ़वाने मुने-मुनाये दुस्तुद शब्दों के प्रयोग में पड़कर शैली के सौष्टव को नष्ट-विध्वस्त नहीं करना चाहिए।

अभिव्यञ्जना को तीव्र एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए वाक्य सौष्टव भी अनिवार्य रूप से बाध्यनीय है। छोटे-छोटे, कटे-छटे, पड़कते वाक्यों से जो तेज और प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है वह लम्बे और विलम्ब पदावली द्वारा कभी संभव नहीं। शब्द शक्तियों के द्वारा भी वाक्यों को समस्त शक्ति पूर्ण प्रोजेक्शनी बनाया जा सकता है। साधारण वाक्यों को मुद्राशरीर और लोकोक्ति के द्वारा टकमाळी बनाने की शैली भी बढ़ी उपयोगी है। इस पद्धति से वाक्य अपनी सांकेतिक सीमाओं का विस्तार करके अर्थ प्रत्यक्ष में समर्थ होता है।

भाषा को सर्वजन-मुख्य और अभिव्यञ्जन को सामिक बनाने के लिए ही मुद्राशरीर का प्रयोग किया जाता है। उपन्यास मछाट प्रेमचन्द जी की भाषा में जो शक्ति और तरलता दृष्टिगत होती है वह एकमात्र हीन्दी मुद्राशरीर के सुन्दर एवं समीचीन प्रयोग के कारण है। स्वल्प, हास्य और विनोद के लिए भी टकमाळी पदावली का प्रयोग बहुत ही आवश्यक है। मुद्राशरीर के प्रयोग में इतका अवरय ध्यान रहे कि वे अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूल हों, अनुवाद मात्र में प्रयुक्त मुद्राशरीर हमारी भाषा में न उपाधायक बलवान हो सकेगा, इसमें सन्देह है। अंग्रेजी, फारसी और उर्दू के अनेक मुद्राशरीर हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुकूल नहीं रहते और अनेक अर्थों में अस्मक का मतलब रहना चाहिए। इसीलिए मुद्राशरीर का प्रयोग बहुत ही सावधानी से करना आवश्यक होता है।

भाषा का सरल बनाने के लिए अनेकानेक उदाहरणों में परिदर्शित





निरन्ध के क्लेश का शिवाय करने समय शेषक को चाहिए वह उसे शिव-भावों के अनुसार शिव्य करे। सामान्यतः निरन्ध मुख्य तीन भागों के होते हैं—शिव्य करना ही होना है। पदार्थ या प्रत्यक्ष या अत्यन्त, नृपरा मान मध्य या शिव्य विचार ही मान घट्ट या उपसंहार। इन तीन भागों में प्रत्यक्ष या अत्यन्त का विशेष महत्त्व है। शिव्य शिव्य के सामने मध्य बड़ी कठिनाई निरन्ध प्रारम्भ करने में ही आती है। वे यह निर्णय नहीं कर पाते कि कहीं से अत्यन्त प्रारम्भ करें और प्रत्यक्ष में क्या करें—यदि एक बार प्रारम्भ करके पाती चले वही तो जाने बहुत कुछ शिव्य या सकल है किन्तु मध्य वही परेशानी तो प्रारम्भ में ही आती है। प्रारम्भ करने के लिए मध्य अधिक धारणक है निरन्ध का शीर्षक—अथ शिव्य के प्रतिपादन के शीर्षक दिया गया है—कुलतः शेषक को चाहिए कि वह सभी शिव्य केन्द्र बना कर उनको परिधि में अपने शिव्यों का आश्रय देने। शीर्षक की भाँति शिव्य या शिव्य भी एक प्रकार की प्रत्यक्ष बन जाती है। वही निरन्ध का प्रारम्भ शीर्षक या शीर्षक बन गया तो समस्त निरन्ध सत्य और प्रत्यक्ष बन आया। किन्तु प्रत्यक्ष बहुत विस्तृत नहीं होना चाहिए भूमिका के रूप में शीर्षक को शीर्षक देकर शिव्य के मूल सत्य मात्र प्रत्यक्ष कर देना ही प्रत्यक्ष में पर्याप्त होना। कभी-कभी शिव्य को शिव्य देकर भी प्रत्यक्ष का काम चलाया जा सकता है। कभी-कभी किसी प्रतिपादन को शिव्य से सम्बन्ध शिव्य को उद्धृत करके भी शिव्य को प्रत्यक्ष की जाती है। कभी-कभी किसी मनोव्यक्त या मनोव्यक्त घटना को शिव्य करके भी शिव्य को प्रारम्भ किया जाता है। किसी शीर्षक शिव्य को शिव्य या उद्धृत करके भी निरन्ध को प्रारम्भ किया जा सकता है किन्तु सबसे सुन्दर शीर्षक तो शीर्षक शिव्य को देकर जाने चले शीर्षक है जो निरन्ध प्रत्यक्ष के बाद शिव्य शेषकों के शिव्यों में प्रत्यक्ष होती है। नये शेषकों को शिव्य को परिभाषा या शीर्षक शिव्य देकर ही प्रारम्भ करना चाहिए।



सभी के निरन्तर धिरे का सकते हैं किन्तु हृद्य रूप में हम इनका पवि  
भागों में धर्मांतरण कर सकते हैं । हम पवि भागों में ही प्रायः अन्य  
सभी प्रकार के निरन्तरों का अन्तर्भाव हो जाता है :—

निरन्तर के भेद—१ वर्णनात्मक, २—विचारनात्मक, ३—विशेष-  
नात्मक ४—व्यक्तनात्मक, ५—आज्ञात्मक ।

१—वर्णनात्मक भेद या निरन्तर के द्वे द्विनमें किसी वस्तु, व्यक्ति  
या द्रव्य का वस्तुतत्त्व बिना वर्णन करने के साथ अपनी कदरना से भी  
कुछमें जीवन् रूपान्तर किया जाय । वर्णनात्मक निरन्तरों की विशेषता यह है  
कि वेत्यक्त की दृष्टि हमनी सुख ही कि वह हम द्रव्य का व्यक्ति का सही-  
हीन बिना मान्य कर सके । पदार्थ के दृश्य पर वर्णन वास्तु का बिना  
पैदा करना ही वर्णनात्मक निरन्तर का मूल उद्देश्य है । वर्णन में कौन-सी  
वस्तु दोहरी कौन-सी महत्त्व करती है, यह भी अपनी कदरना तथा  
दृष्टि से जानना चाहिये । वसाह, भरी, निर्मा, सैव, धारा, मुक्त किसी भी  
वस्तु का वर्णन प्रस्तुत करना साक काम नहीं है । कौरा तत्त्व मात्र वर्ण-  
नात्मक निरन्तर के कर्तव्य को भरता नहीं, उसमें प्रायः सचाय तो कदरना  
और मूल्य दृष्टि से ही होगा है ।

२—विचारनात्मक निरन्तर—हम कौरि के निरन्तर प्रायः घटनाओं  
की कदरना से जाने हैं, इतिहास, भविष्य, घटना आदि के विचार तथा  
विचार ही हम निरन्तरों में रहता है । हम प्रकाश के निरन्तर दिखने समय  
का तो केवल दृष्टि के रूप में दूर रह कर घटनाओं का विचार देना रहे व ।  
हमने सामान्य होकर हमका बिना पता । घटनाओं का उद्दिष्टन करने  
समय कदरने दृष्टि होने का समय, कदरना, घटना, दृष्टिनाम सभी कुछ  
निरन्तर में का जाना चाहिये । जीवन् कदरना महत्त्व निरन्तरों में उस  
कदरना, दृष्टि तथा घटनाओं का बिना भी जाना चाहिये । हम प्रकाश की  
हमका कदरना ही हमका दृष्टि कदरना निरन्तर में का पदार्थ व्यक्ति का  
हमका कौरि का भी कदरना हमका पदार्थ वर्णनात्मक निरन्तर में का पदार्थ  
की दृष्टि कदरना का पदार्थ निरन्तर का पदार्थ है । कदरना का दृष्टि









## ७. सांभुजिक काव्य ( गद्य-काव्य सं० १२००—२००० )

हिन्दी-साहित्य के विकास के इस काव्य या गद्य के वर्गीकरण को समझने के लिये यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिये कि जिस काव्य में छोक-प्रवृत्ति जिस विषय या गद्य को घोर प्रमुख रूप से झुकी रही इसी के आधार पर काव्य का नामकरण कर दिया गया । इनका यह तात्पर्य नहीं कि हम युग में अन्य विषयों की कविता हुई ही नहीं ।

(१) इस युग में जो साहित्य भ्रष्टा गया उसमें घोर रस का प्राधान्य था । कुछ घोर आलेख ही उस समय के कवियों के प्रिय विषय थे । इस काव्य के प्रमुख कवियों में 'पृथ्वीनाथ रामो' ■ प्रयोगा चन्द्रचार्दार्द का नाम सबसे अधिक विख्यात है । 'रामो' नाम से इस काव्य में 'बीसहदेव रामो' और 'गुमान रामो' भी लिखे गये । आलहर लंड भी उसी काव्य की काव्य-शैली का परिचय दे । अमीर खुसरो भी इसी काव्य के जन-प्रिय कवि थे, जिन्होंने अपनी हुई भाषा में सुन्दर मुकरीयाँ चारि लिखीं । इस समय के कवियों की भाषा हिंगल भाषा के नाम से पुकारी जाती है ।

(२) इस काव्य में काव्य रस की कविता का प्राधान्य रहा । गिराफ 'घोर' हमाय हिन्दू जनता में ईश्वर-भक्ति की प्रेरणा उत्पन्न कर गिराफ तथा धर्मपरायणता की भावना पैदा करना इस युग के कवियों का स्वेय था । गोस्वामी तुलसीदासजी ने राम का रूप जनता के समक्ष देना उपस्थित किया जो छोक-प्रवृत्ति की उत्तम भावना से परिपूर्ण था । इस युग में ही प्रचार की मन्त्रि-व्यक्ति का प्रचार हुआ । पश्चिमी पद्धति मित्रुंय मन्त्र कवियों की थी; जिनमें जादूमी, कबीर, दादू तथा अन्य मन्त्र कवि आते हैं । महात्म कबीर ने अपने उपदेशों से सुमहत्त्व मया हिन्दू जनता के धार्मिक मनमर् को दूर कर एक सर्वमान्य ईश्वर का रूप दिया और भेदभाव का दीवार का गिरा कर सबको मृत्यु का कर्म कर राम और रक्षा की पद्धति की स्थापित की । मृत्यु कवि मान्यता ने प्रेम के मानवमानवत्व जिन दर ईश्वर भक्ति का मन्दिर और मन्दिर कर उत्पन्न किया । 'पञ्चानन' मन्त्रिक सुहृन्मर मन्त्रिकी का एक सुन्दर मन्त्राकाव्य है जो अपनी भाषा में लिखा गया है ।

विष्णु-ईश्वर-भक्ति का प्रचार साक्षात्मीय गृहस्थ समाज में उठना । हो सका जिसका साधु-सन्तों में हुआ । गृहस्थ जन एक ऐसे ईश्वर को प्रामाणा चाहते थे कि जो उनके दैनिक-जीवन से सामंजस्य करके उन्हें पारदाओं में डूबा सके । उनके जीवन में आया और उत्साह का संसार कर उन्हें आप्य दे सके । सगुणोनामक कवियों ने इस प्रकार के ईश्वर के रूप करने काव्य में प्रस्तुत किये । राम तथा कृष्ण की असीम शक्तियों के वर्णन के माध्यम कवियों ने ईश्वर की सर्वजन-मुक्तक बनाने की सफल चेष्टा की । गोस्वामी तुलसीदास ने राम के रूप में परमाना की आराधना की जो आदर्श जनता के समक्ष उपस्थित किया हमने शक्ति, शील और मौन्य का अद्भुत सामंजस्य था । महामा सूरदास ने भगवान् कृष्ण के जीवन का आदर्श जनता के सामने प्रस्तुत कर सगुणोनामता का पथ प्रशस्त किया । गोस्वामी ने राम की शक्ति में रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, कवितावली, गोतावली आदि ग्रन्थ लिखे । महामा सूरदास ने कृष्णभक्ति में स्वतन्त्र रूप में कई हजार फुलकर पद लिखे, जिसका संग्रह 'सूरसागर' नाम से प्रसिद्ध है । सूर के अनुयायी कवि 'अष्ट-भ्रात' के नाम से व्यवहृत होते हैं । नाना-दास, रहीम, नीरा, रसखान आदि हमी काब के मन्त्र कवि हैं । यह काब हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ काब—स्वतन्त्रपुग के नाम से विख्यात है ।

(३) इस काब की काव्य-प्रवृत्ति तथा काव्य-भावना करने पूर्ववर्ती काब से निम्न है । इस काब के अधिकांश कवि स्वतन्त्र रूप से काव्य भाषना में लीन रहने वाले कवि नहीं थे, वरन् वे दरबारा या राजाओं के अधिन कवे थे । इस युग में मुगलशासकों का राज्य सुस्थिर रूप से प्रतिष्ठित हो चुका था और हिन्दू राजा भी भोग-विहार में लीन रह कर जीवन-यापन कर रहे थे । विजयनगर राजा और रङ्गो के इच्छानुवृत्त तत्कालीन कवियों ने नाना-भक्त और विद्वान् का करने कविता का विषय बनाया करने । नाना-भक्तों में दादू रूप में इन कवियों ने नाना-भक्तों को नाना-भक्तों को नाना-भक्तों का नाम दिया । किन्तु इनके उदात्त चेतन में शक्ति थी । अतः काव्यभाषा में शक्ति रस का प्रभाव अति प्रबल हो गया

और बेशकहाम, देवदत्त, सिद्दीखान, अमिराम, दयाकर चारि ग गारी कविओं की रचनाओं से साहित्य परिपूर्ण हो गया। इस काल में 'मृगय' ही एक ऐसे कवि थे जिन्होंने गूँगाँर रूप को अपने काव्य में स्थान नहीं दिया, प्रानुन और राम की सुन्दर अभिरमित्रता में वे जीन रहे। इस युग में कविता ने जो स्थिति उन्नति के चरम पर, रस, रीति चारि का ही वर्णन था, अतः इस युग के काव्यों का नाम रीतिपात्र कहा। रीति शब्द का अर्थ है व्यवस्था-उपपत्ति।

युग के साधारण के चलन के बाढ़ मानने में अंग्रेजी शासन का आदिभाव हुआ। अंग्रेजी शासन के सूत्राग के साथ ही एक के अनेक क्षेत्र में नूतन ज्ञानिक उपकरण हुई। शिक्षा और विचार विनिमय के ज़िये नवीन भारत की आवश्यकता अनुसर की गई। पद्य की प्रचारना की दूर दूर तक का कर्म: रस: कवयित्री, शिक्षा संस्थाओं तथा सांख्यिक स्थानों में प्रवेश होने लगा। रीति-मार्गों के स्थान पर गद्य और पद्य दोनों में ही नवीन आवश्यकता के अनुकूल रचना प्रारम्भ हुई। यह नवीनता गद्य के रूप में सबसे अधिक विकसित हुई। अतः इस प्राथमिक युग का नाम 'गद्य-काल' हो गया। इसका यह तात्पर्य करारि नहीं कि इस युग में गद्य-रचना ही हुई। पद्य का भी पर्याप्त प्रयोग इस युग में होता रहा है और जो रहा है किन्तु गद्य का विकास हुआ इसी युग से है। गद्य के प्रवर्तकों में सुश्री सरामुनसाह, सरल निध, हयामकला जी और लक्ष्मीजीसाह हैं।

प्राथमिक युग के प्रवर्तक या सम्प्रदाय के रूप में भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हमारे सामने आते हैं। आपने हिन्दी भारत और साहित्य की सर्वतोमुखी उन्नति के ज़िये साहित्य के सभी क्षेत्रों में नूतन प्रयोग किए। काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध, समाचार-पत्र आदि सभी क्षेत्रों में भारतेन्दु जी की देन अर्ह है, अतः भारत की नवमान युग का प्रवर्तक कहा जाता है। आपके साधियों में श्री प्रतापनारायण मिश्र, बाबू हरदत्त मिश्र, प्रेमचन्द, बाबू मुकुन्द गुप्त प्रसिद्ध हैं।

प्राथमिक युग का दूसरा अन्वय भी आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी

आत्मन होता है। श्री द्विवेदीजी ने भाषा के परिष्कार तथा व्याकरण-मूलक बनाने का जो प्रयत्न किया वह हिन्दी-साहित्य के इतिहास में सर्व-प्रयोगों में अंकित रहेगा। यहाँ तक 'सरस्वती' का सम्पादन करके द्विवेदी ने अनेक लेखक और कवियों का पथ-प्रदर्शन किया। अतः सन् १९०१ से १९२० तक का युग 'द्विवेदी युग' के नाम से हिन्दी साहित्य में सिद्ध है।

द्विवेदीजी के बाद व्यासवाद युग आता है। यह नवीनतम युग भी कहा जा सकता है। प्रांतीय भाषाओं के साहित्य तथा अंगरेजी साहित्य में प्रभाव में आने के कारण इस युग में हिन्दी-साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया। अनेक प्रकार की हिन्दी रचनाएँ इस युग में प्रस्तुत हो रही हैं। सर्वप्रथम मैथिलीशरण गुप्त, चरणप्रसाद व्यास, धीर पाठक, प्रेमचन्द कौशिक, सुदर्शन, जयशंकर प्रसाद, मुनिशानन्दन पन्त, निरादा, महादेवी वर्मा, दिनकर, जैनेन्द्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी, माखनलाळ खन्नुवैरी आदि जैसे प्रतिभाशाली कवि, लेखक और कलाकार उत्पन्न हो रहे हैं।

काव्य, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना, समाचार-पत्र, पत्रिका, आदि सभी क्षेत्रों में प्रचुर परिमाण में सुन्दर कृतियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं। साहित्य के इस विकास को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि स्वतन्त्र राष्ट्र भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा हिन्दी एक समृद्धिशाली भाषा है और इसका अविच्छेद रह्य रह है।

### सैनिक शिक्षा

[ इस लेख में राष्ट्र-पदा के जिने सैनिक शिक्षा की उपादेयता का वर्णन किया गया है। सैनिक शिक्षा द्वारा नवयुवकों में शक्ति-संचार के साथ अनुशासन, आदेश-पालन और संयम की भावना उत्पन्न होती है। ]

जिस देश की भूमि में जंग-हृदय का हनु बड़े होते हैं, जिसके जंग जल में हनायु देह बनता है जिसकी पशुपताशों ने हनु उत्पन्न-विकसित

भीखने दें, जिस देश से हम अपनी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, उम्मीद रखा और समृद्धि का भार भी हम ही पर है।

देश को रक्षा के लिये व्यक्ति और सेना की आवश्यकता होती है। प्राचीन भारत में देश की रक्षा का बड़ा ध्यान रखा जाता था। देश के हम बतों का तो काम ही राष्ट्र-रक्षा था, जिसे हम चरित्र कहते हैं। चरित्रों की दृष्टि से ही सैनिक शिक्षा दी जाती थी। इतिहास बताता है कि भारत के शासक कितने बहादुर सैनिक होने थे, लेकिन धीरे-धीरे वे विज्ञानी होने गये और भारत की तुलसी-परिचयी सीमा से होकर जानेवाली जगहों के कुछ की सारसी पूर से काम उठाकर उन्हें खगानार होने वाले हमलों में हरा दिया। जीतने वाले लोग आरम्भ में अपने सैनिक से और उनका जीवन भी मेहनती था, लेकिन देश-भारत में बढ़कर वे भी आक्रमण करने लगे। यही कारण था कि मुगल-शासन-काल के अन्तिम दिनों में महाराज शिक्षाओं के अपने मुद्दाम बहादुर सैनिकों के बख्तर और गजब जैसे कट्टर और कठोर बाल्याद की भी खोज के चले बसा दिये। बाद के ज़माने महाराज सैनिक शिक्षा और संगठन का सूक्ष्मज्ञ सूख कर राजे बनने और कुछ दूसरे को भीषा दिखाने की दिक्कत में रहने लगे, जिसका परिणाम यह हुआ कि न तो वे ही भारत में निवासन तक पहुँच सके और न मुगल बाल्याद ही दूरते हुए मात्राभ का बचा सक। अंग्रेजों की भारत-विजय का कुछ कारण भारत की वास्तविक दृष्टि था, लेकिन हमने भी बड़ा कारण बतलवा कि अंग्रेजों के सैनिक बल-कला मानने थे और उनके पास सदैव हत के इन्वियर थे। यदि उस समय भारत में सैनिक शिक्षा की कमी न होती तो शायद हम बराबर न होना और हमारा इतिहास ही ही और होता।

कहना बताता सब है कि सैनिक शिक्षा के अभाव में भारत की किनारी दार्शनिक दृष्टि से भारत का विकास नहीं हो पाया। भारत का विकास न होना ही है। अतः हमें अपने अन्तर्गत अपने अन्तर्गत सब भारत का पूरा दिखाने पर हमें बल देना है। अतः हमें अपने अन्तर्गत सब भारत का पूरा दिखाने

मे मर्जी हुई मेरा तो नहीं बनाई लेकिन स्वयंसेवकों की सेना ठीक की  
 भी मेरा का आदेश लेकर काम करती थी। भारत की जनता तो हिम्मत  
 हार चुकी थी और दुखी थी। दामता की बेदियाँ काटे न बटती थी और  
 आदतियों का चन्दा न था। ऐसे समय में उन्होंने लोगों को धैर्य दते हुए  
 साहसी बनाया। इसके बाद उन्होंने बताया कि जीवन संघर्ष है, जिसको  
 जीतने के मुख्यमंत्र हैं—संघर्ष, अनुशासन, त्याग और एकता। इनकी आवाज  
 से पीड़ित जनता में जान जा गई और हमारा देश सम्पूर्ण प्रभुत्वमय  
 लोकशासनिक गदराव बन गया।

स्वतंत्र भारत के पास मैदानी, समुद्री और हवाई—तीन तरह की  
 सेनाएँ हैं। नये दंग के इधवार और दूसरा मामला भी पचास मात्रा में  
 है, लेकिन आज दुनिया बहुत आगे बढ़ चुका है। कहा जाता है कि मुसल-  
 मान भाग में इसलिए विश्वास है कि उनके पास तेज़ बंदे और बंदूके थीं।  
 बाद में अंग्रेजों ने इसलिए विश्वास पार कि उनके पास और भी नये  
 दंग के इधवार थे और उनके सैनिकों को अच्छी सैनिक-शिक्षा हो गई  
 थी। इसलिए आज के युग और हमारे देशों की हारण को देखते हुए  
 कहा जाता है कि भारत के पास इतने अच्छे इधवार नहीं हैं और न  
 युद्ध ज्यादा सैनिक हो, जिनके कि होने चाहिये। ऐसी दशा में देश की  
 रक्षा के लिए यह जरूरी है कि अगर हम पर किसी तरह का हमला हो  
 तो हम उसे कमजोर कर सकें। इसी विचार से भारत में ऐसे कारखाने  
 बनाने जा रहे हैं जहाँ हवाई जहाज और टैंकों के जहाज बन सकें।  
 वैज्ञानिक क्षेत्र के लिए जगह-जगह प्रयोगशालाएँ भी खोली जा रही हैं।  
 सैनिक शिक्षा के केंद्र भी बनाने जा रहे हैं। मछुओं और कृषि में सैनिक  
 शिक्षा का प्रयोग करने जा रहा है। जल-संयोजन यंत्रों में लकड़-लकड़  
 बनाने जा रहे हैं और यह कर्मियों को सैनिक शिक्षा भी दूने लगे। साधारण  
 जनता को भी सैनिक बनाने जा रहे हैं और साथ ही सैनिकों को भी साधारण  
 जनता में भेजने जा रहे हैं। यह हमारे देश की इतिहास बनाने का  
 एक नया प्रयोग है। यह हमारे देश की इतिहास बनाने का एक नया प्रयोग है।





ह विद्ये, लेकिन अपने इस काम से उन्होंने यह बना दिया कि ना का अनुशासन किसे कहते हैं और संग्रोज जाति के महान् बनने का कारण क्या है ?

मैनिक शिक्षा का एक और लाभ यह है कि उसमें मूठ-मूठ न जाति-प्राप्ति का भेद जाता रहता है। सब लोगों में भाईचारे की और एक दूसरे की सहायता देने की गहरी भावना पैदा हो जाती है। इसके तिरिफ्त बटोर जीवन बिताने और अपने काम अपने आव कर लेने की शक्ति पड़ती है।

किन्तु एक और जहाँ मैनिक शिक्षा में इतने लाभ हैं वहाँ दूसरी ओर मैनिक शिक्षा पर मन्त्रत से उपादा जोर देने से हानि भी है। इसके कारण विप्लव तीव्र आलोचकों में दुनिया में दो महायुद्ध हो चुके हैं। तमनी में अपने वहाँ बन्धे-बन्धे की मैनिक शिक्षा देकर यह आदा बि बह हानि देना की गलतिय बना ले, लेकिन उसके प्रयत्नों से संसार का संसार ही हुआ। बरोहों आदिमियों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा और अपार मन, धन की क्षति हुई।

इस समय जब कि विज्ञान की उन्नति परम सीमा पर पहुँच रही है और एतम कम, हाइड्रोजन कम और गहर जैसे अत्यन्त अधिकार बन गये हैं, दुनिया के देशों की आस्थाओं से काम लेना चाहिए। मैनिक शिक्षा की इस मानव-जाति के बहाल से लगा सकने है और इसके विनाश में भी। यदि मैनिक शिक्षा पर इतना जोर दिया गया कि हम मानवता की भूल कर मैनिकवाद नाम के रैलान के इलाकों पर चलने लगे तो हमें बाद इतना चाहिए कि वह समय दूर नहीं है जब कि सारी मानव-जाति नष्ट हो जायगी।

### संक्षेप गण-संघ

[ संक्षेप गण-संघ में वैज्ञानिक वर्गिकताओं व कारण दुनों का वर्णन हो गया है। इस दुनों की वर्गिकता में बहुत सदा समस्त वैज्ञानिक वर्गिकता के कारण व कारण के लिए वर्गिकता की वर्णन हुआ किम





सुने हुए है जिन्होंने सामन्तशासितों के संयुक्त राष्ट्र संबंधों सम्बन्धन में बात किया। मान ही वे सब सार्व-विश्व देश जो इसके सदस्य बन सकते हैं जो कि इसके प्रदेशों और शक्तिपूर्ण देश करने के लिए तैयार हो। मियोरिटी कौमिल (सुरक्षा-समिति) को विकारित पर जनरल असेम्बली एक सदस्य-राष्ट्र के संयुक्त-राष्ट्र के सदस्यता-संबंधी अधिकारों और विशेषाधिकारों का कुछ समय के लिए चीन सकती है। अगर एक सदस्य-राष्ट्र या एक संयुक्त राष्ट्र-संघ के सदस्यों का लगातार उल्लंघन करना हो, तो मियोरिटी कौमिल (सुरक्षा-समिति) की विकारित से जनरल असेम्बली इस सब का सदस्यता से बाहर कर सकते हैं। अभी रिक्त दिनों ३ मास तक ११२० की हैग में स्थायी की अंतराष्ट्रीय अदालत ने यह फैसला दिया कि एक देश की संयुक्त राष्ट्र-संघ का सदस्य बनाने के लिए जनरल असेम्बली और मियोरिटी कौमिल दोनों की स्वीकृति लेना जरूरी है। इसके तत्पश्चात् मियोरिटी कौमिल में स्थायी सदस्यों द्वारा बाटो (विषय) अधिकार बढ़ाने के कारण जापान, चीन, अफ्रीका, अफ्रीका, अफ्रीका, अफ्रीका और अफ्रीका संयुक्त राष्ट्र-संघ के सदस्य नहीं बन पाये हैं। अभी तक इसके सदस्यों की संख्या २६ है।

संयुक्तराष्ट्र-संघ के सभी सदस्य जनरल असेम्बली के भा सदस्य हैं। हर सदस्य-राष्ट्र पाँच तक अपने प्रतिनिधि असेम्बली में भेज सकता है, पर उसका वोट एक ही होगा। अंतराष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा का काम मियोरिटी कौमिल के अस्थायी सदस्यों का चुनाव, इस्तेमाल कमिशन और संयुक्त राष्ट्र संघ की दूसरी संस्थाओं के सदस्यों का चुनाव, संयुक्त राष्ट्र संघ से नये सदस्यों को लेना, राष्ट्रों को संघ का सदस्यता में लाना और इसी तरह के दूसरे महत्वपूर्ण मामले असेम्बली में ही निहाल जायेंगे किये जाते हैं।

मियोरिटी कौमिल — इसमें १५ सदस्य हैं। उनमें, नाम ब्रिटेन, चीन, रूस और अमेरिका कोमिल के स्थायी सदस्य हैं और ४४ सदस्य दो-दो वर्षों के लिये असेम्बली द्वारा चुने जायेंगे। कार्यभार में १५

सभी मामलों पर विचार किया जाता है, जिनके कारण अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष हो जाने की सम्भावना हो।

**न्याय की अन्तर्राष्ट्रीय अदालत :—**इसके १२ सदस्य हैं। किसी एक राष्ट्र के दो व्यक्ति इस अदालत के जज नहीं बन सकते। जनरल असेम्बली और मिक्थोरिटी-कौंसिल मिलकर सिर्फ ऐसे ही लोगों को चुनते हैं, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अच्छे जानकार हों। हर जज ६ वर्ष के लिए चुना जाता है। अदालत आम-तौर पर हेग में ही बैठता है। अदालत संधियों और समस्याओं के कानूनी पहलू पर प्रकाश डालती है और इसका निर्णय हर हालत में मानना पड़ता है।

संयुक्तराष्ट्र-संघ ने पिछले पाँच वर्षों में जो काम किया है। उस पर नज़र डालने से पता चलता है कि संघ को अधिकतर असफलता का मुँह देखना पड़ा है। मिक्थोरिटी-कौंसिल के स्थायी सदस्यों का वीटो अधिकार साम्राज्यवाद, ठम राष्ट्रीयता, जातीयता, हथियारों की होड़, राष्ट्र-संघ के पास अपनी सेना का न होना, प्रादेशिक समस्याएँ—जैसे बुखारेस्त पैक्ट, उत्तरी पटलार्थिक पैक्ट और कामिनफार्मे—इन सबको देखते हुए यदि कोई ये कहे कि भावी संसार का भविष्य उज्ज्वल है तो वह दुराशा मात्र ही है। लोग संयुक्त-राष्ट्र-संघ पर बड़ी आशा बाँधे हुए थे, पर उस सब पर पानी फिर गया। युरुशलम, काश्मीर, हिन्द-चीन, कोरिया, यूनान की समस्याएँ मुँह बाण रही हैं।

संक्षेप में, संयुक्तराष्ट्र-संघ का उद्देश्य महान् है। क्या ही अच्छा हो कि समस्त के समस्त देश इसमें अपना पूरा और सच्चा सहयोग दें और मानवता के कल्याण के लिये इसे सफल बनावे।

### ग्राम-पंचायत

[ इस लेख में भारतवर्ष का मूलोन तथा आधुनिक ग्राम-पंचायत-प्रणाली पर प्रकाश डाला गया है। अज्ञात भारत में जो पंचायतों को बड़ा महत्व प्राप्त था। देश के स्वतंत्र होने पर उनका जो नया रूप मानने आया है, उसका विस्तृत वर्णन इस लेख में प्रस्तुत किया गया है। ]

'पंचायत' भारत के द्विष्ट कोर्ट बना रहा नहीं है। भारत में पंचायत की भारी समझौता उसकी ही पुरानी है, जिसका पुराना हिस्सा है। जिसका हिस्सा में ही स्थानीय स्वायत्त शासन के द्विष्ट प्रत्येक गाँव और 'महा' और 'समिति' स्थापित हो गई थी जो कि केन्द्रीय सरकार का काम के मामले अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व भी करती थी। सामान्यतः, महा-राज, जलक राज्य, आवासन के अर्थशास्त्र और मुख्य सामान्य के समर्थ के शिक्षा-वैक्यों की दृष्टियों के अपने पत्रपत्रों में बता चलाता है कि वह संस्था बहुत पुराने समय से चली आ रही है। अब भी भारत में 'पंच परमेश्वर' की कहावत प्रचलित है। लोक और पंडित राज्यों के समय में द्विष्ट भारत में स्थानीय स्वायत्त शासन प्रस्थापित और गाँव-पंचायतें बहुत कमजोर थीं। इस कोर्ट की स्थिति यह बात हीक तरह से नहीं बना सकता कि भारत में सबसे पहली बात पंचायत नहीं और एक बनी। सामुदायिक संस्थाओं और सामुदायिक संस्थाओं से भारत के केन्द्र काय रूप में ही परिवर्तन होता रहा है। भारत की समाज पर कनका प्रभाव बहुत कम रहा है। भारतीय सामान्य और संस्था काय भी भारत के गाँवों में है और वह गाँवों के भीतर पुनः से स्थापित रहनी चाहिए है। इन गाँवों की समस्या बात बात में चरित्र है और दूसरे भारत के कोर्ट यह स्थिति हो रहा है। और दूसरे से चरित्र पुनः है। गाँवों से ही भारतीय सामान्य का उदय हुआ। जेनी के काम में निपुण गाँवों की प्रतिनिधित्व ही बनी थी। हमारे गाँवों में शासन-संस्था स्थापित करने के द्विष्ट पंचायतों की स्थापना की गई थी, दुर्भाग्य से राष्ट्रीय शासन काय में हमका कोण ही गया। जिसकी इस स्थिति को पूरा करने के द्विष्ट और शासन-संस्था कुछ में सबसे अधिक कोण केन वाले दिशाओं की शासन सुधारों के द्विष्ट महत्त्वपूर्ण गाँवों ने 'समाज' और 'विमान समर्थ' राज्य' की स्थापना का मार्ग बताया।

आइए के अन्तर्गत आनेवाले इस प्रकार के प्रयोगों में आमतौर पर दो प्रकार के विद्युत् प्रवाह होते हैं। इनमें से एक प्रकार का प्रवाह आमतौर पर धीरे-धीरे होता है। यह धीरे-धीरे प्रवाह के कारण ही प्रवाह के अन्तर्गत आनेवाले प्रयोगों में प्रयोग किया जाता है।





को मरने के लिए हर वर्ष भुसाव होते हैं। पंचायत की बैठक हर महीने कम से-कम एक बार जरूर होती है, जिसका समय, तारीख और स्थान समिति (सरपंच) या मन्त्री नियत करते हैं और उसका कम-से-कम एक दिन का नोटिस दिया जाता है। बैठकों और कार्यवाहियों का संक्षिप्त और जिज्ञा मोर्चे के समापति के पास भेजा जाता है।

पंचायतों के काम दो तरह के हैं। एक तो ऐसे काम जो कि हमें हाहात्त में करने होते हैं और दूसरे पंचायत की दृष्टि पर निर्भर हैं। गाँव की सफाई, दवा-दारु और प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था, साक्षरता का प्रबन्ध, पशुओं का हिसाब-किताब, मरुकों के निर्माण, मरम्मत और रक्षा की व्यवस्था, बोरों और कुँवों से गाँव की रक्षा और सरकार द्वारा ग्राम-मुफार के लिए बनई हुई योजनाओं पर चलने के काम और निर्धार का प्रबन्ध—ऐसे काम हैं जो कि पंचायत के लिए अनिवार्य हैं। दूसरी और मरुकों पर रोकथाम का प्रबन्ध, ग्राहमरी शिक्षा का प्रबन्ध, जन्म-मरण और विवाह का खेला रखने का काम, दूध बरगाने और कुँरे सुरक्षित करने का काम, पुरतकाग्र्य जलवा-वस्था-केन्द्र की स्थापना, मनबहुराज के साधनों, जैसे—अखाड़ा, खेल-दूद वगैरा का प्रबन्ध, किसानों की कर्ज देना और परेन्ट उद्योग-पशुओं का विकास, मराय, परमेशाखा आदि बनाना और उसका प्रबन्ध—ये सब ऐसे काम हैं जो काय समिति के अधिकतर सदस्यों की आय से या सरकार के आदेश द्वारा किये जा सकते हैं।

पंचायत गाँव के प्रमुख स्थायीगोश है और। ग्राम कचहरी की स्थापना करते हैं। उसका सहायता के त्रिष कुछ दूसरे पंच भी होना। हर गाँव-मना का एक पंचना गाँव काय है। हर पंचायत का गाँव में अपनी एक व्यवस्थाक डल है। गाँव का रक्षा और जोकी पहर का काम करता है।

पंचायती अशासक के जाते किसे हुए सम्मनों और नोटिफिकेशनों को जानते  
ता है। पंचायत इसके सदस्यों के विषय वेतन और भत्ता देती है।

हर पंचायत का चुनाव हुआ करना एक सेक्टरों है जो कि मन्सूरत  
(सदस्य) को कानून नानकों में सहाय देता है और गाँव-मन्सूर और  
व-पंचायत की बैठकों के विषय कार्यकाल तैयार करता है।

हर राज्य के स्थानीय स्वायत्त शासन-विभाग के अधीन हर विभाग में  
एक मान-पंचायत अस्तित्व में रखा गया है, जो कि मान-पंचायतों में वादनेत्र  
रखा है और उनके संगठन के काम में हाथ बैठाता है।

यह बात याद रखने योग्य है कि निम्न-निम्न राज्यों में गाँव-मन्सूरों,  
वि-पंचायतों और पंचायती अशासकों के काम इनको रखना और सदस्यता  
कुछ-कुछ पृथक् है। लेकिन गाँव-पंचायत बनाने का मुख्य उद्देश्य यही  
कि लोग भारत में निश्चिन्त कर सकाती हों, सद्भावना के साथ  
रखने काम करे, अपने अधिकारों के प्रति सचेत हों और वे अपने अधिक-  
ारों की रक्षा में उत्तम योग्य के साथ काम करें, जिस योग्य के साथ योग्य  
रखने आशा पर पररा देती है। गाँव-पंचायत बनने में राजनीतिक दलित  
में आ हो रही है। लेकिन अगर किसानों को ठीक तरह से शिक्षा दी जाये  
ग भारत निश्चिन्त हो अन्तर्-मन्सूर पर सदा के विषय विषय पा होगा। अगर  
केवल भारत मन्सूरों को गुरु में रखकर, पढ़ते पर करना कन्सूर और  
कन्सूर में निश्चिन्त कर अन्तर्-मन्सूर, अन्तर्-मन्सूर को उपजाऊ बनाने  
जाये कि मन्सूरों को वे जान ह रख कर सकते हैं। हम बात को पूरा  
करा है कि गाँव-पंचायत भारत का राजनीतिक राजनीतिक वैधानिक और  
वैधानिक दलित में बहुत महत्वपूर्ण भाग लेने की भारत के भावी किसान

राष्ट्र-मन्दिर के कंकर, पाषाण वन उन्हें मण्डूक और मुष्ठी बनाने में मगल-  
कोशिश करेंगे ।

## उत्तुङ्ग शिखर का अन्वेषण

[ हिमाञ्च पर्वत शिखर के सर्वोच्च पर्वतों में है । इसकी कं-  
कोटियों की उत्पत्ति का अन्वेषण करने के लिये देश-विदेश के अनेक भाग  
अन्वेषकों ने इस बार प्रयाण किये, किन्तु अभी तक कोई सफल नहीं हुआ  
है । अन्वेषण यात्राओं का ही इस पाठ में वर्णन है । ]

भारतवर्ष के उत्तर में हिमाञ्च पर्वत श्रृंखला १२६३ मील ल-  
म्बी हुई है । इसमें २० शिखर ऐसे हैं जो २२००० फीट से ऊँचे हैं । इ-  
शिखरों में एक "भीरीशंकर शिखर" है जिसे संसार में सर्वोच्च शिखर-  
कहा जाता है । यह शिखर सर्वेक्ष हिमालयादित्य रहता है और सूर्य के ज-  
में इतना प्रदीप्तमान होता है कि अग्नि बहावर्ष हो जाती है । इस स-  
शिखर पर आज तक कोई मनुष्य नहीं पहुँच सका । इसका वर्णन  
और इसके रहस्य को समझने के लिये देश-विदेश के अनेकों आन्वेष-  
अनेक बार प्रयाण किए हैं ।

भारत सरकार के 'सर्वे विभाग' ( भूमि की माप, निरीक्षण व  
करने का विभाग ) की ओर से एक दल हिमाञ्च की कोंटियों की खोज का  
रहा था । इनमें से एक भारतीयों की गतिविधि से ज्ञात हुआ कि हिमाञ्च की  
सबसे ऊँची चोटी २२००२ फीट की ऊँचाई पर है । जयन्त इस गणना की  
पता दल के अध्यक्ष बड़े सम्मानजनक पदभार को दिया । पदभार ने इसकी  
पूरी व त्रुटि परीक्षा की और अभी यह इस चोटी का नाम 'सर्वे विभाग'  
पद गया । आज तक की ही सर्वेक्षण यात्राओं का ही नाम 'सर्वे विभाग' पद

म शिखर तक नहीं पहुँच सका और आज भी यह शिखर गौरव में सिर  
 उँचा किये खड़ा है ।

माउन्ट एवरेस्ट के समीपस्थ भाग का अनुसन्धान करना सरल कार्य  
 नहीं था, क्योंकि यह भाग तिब्बत और नेपाल के पहाड़ी प्रदेशों से घिरा  
 हुआ है । इन देशों के निवासी अन्य देशवासियों को इस प्रदेश में प्रवेश  
 नहीं करने देते । सबसे प्रथम तिब्बत के द्वाहाई लामा ने सन् १९२०  
 ई. अंग्रेजों के एक दल को हिमालय के इस भाग की खोज करने की आज्ञा  
 दी । अज्ञात प्रदेशों की खोज में धन से सहायता प्रदान करने वाली इंगलैंड  
 की रायल ज्योग्राफिकल सोसाइटी तथा नेक्साइन क्लब का नाम उल्लेखनीय  
 है । इनकी और से सहायता पाकर कुछ साहसी पर्वत-भारीहियों का एक दल  
 सन् १९२१ में इंगलैंड से हिमालय की यात्रा करने चला । पर्वतों की तंग  
 खादियों और ऊँचे २ दरों को पार करके ये तिब्बत के ११००० फीट ऊँचे  
 पठार पर पहुँच गये, वहाँ से बर्फ की एक नदी (ग्लेशियर) में होकर यह दल  
 अधिक-से-अधिक १०००० फीट और चढ़ सका । कुल २२८६० फीट की  
 ऊँचाई तक पहुँच कर यह दल लौट आया । इस दल के एक सम्बन्धक  
 डा॰ कैलाश का वही पर बर्फ में मृत्यु हो गई ।

सन् १९२२ में जनरल ग्रुम की अध्यक्षता में दूसरा दल इस शिखर  
 का अनुसन्धान करने के लिये चला । शगरेक घाटी में १६४०० फीट की  
 ऊँचाई पर शिव मठ की बहाव स्थापित किये गये । मानस मानस तथा  
 लावनीयवांग अन्य सहायता के सामान पहुँचाने के लिये अग्निम पहाड़  
 २०००० फीट की ऊँचाई पर चंगडा में स्थापित किया गया । चैम्पू में  
 चार मनुष्यों का छोटा एवरेस्ट का और बड़ा

इनका यह यात्रा रोमांचकता तथा बड़ा विपन्न थी । अधिक ऊँचाई





एक बार मैराइ की तराई से होकर एक स्थित अन्वेषण वाली हिमाचल ओर गई थी । पर वह वहाँ न आ सकी ।

सन् १९३९ में कर्माज ब्लैक ने हवाई जहाज द्वारा शिमा तक पहुँच का प्रयास किया । बिहार के पुरनिया से हवाई जहाज चले । जेर चले ब्रह्मन के परबान् वायुयान एरोस्ट सिलर के ऊपर थे । पहले रात्रों ने ६ देला शिमके जिये करों से मनुष्य के क्षेत्र गरम रहे थे । वायुयान के नीचे स्वच्छ हिमाच्छादित अजेय पवित्र गौरी शिखर स्पष्ट दृश्य रहा था । उसे चकर लगा कर वायुयान झूट आया । परन्तु पैदल यात्रा करके पहुँचना सही योग है ।

---















अहा कैसा अलौकिक आनन्द है ? कैसा स्वास्थ्य बल बुद्धि वर्धक जलवायु है ! सुमे तो यहाँ स्वर्ग का भ्रम होता है ।

यहाँ स्वर्ग सुरलोक, यहाँ कहूँ बसत पुरन्दर ।

यहाँ अमरन का लोक, यहाँ कहूँ बसत पुरन्दर ॥

## कर्तव्य-पालन

विचार-तात्त्विकाः—

(१) प्रस्तावना—कर्तव्य की महत्ता, मनुष्य की उन्नति, अवनति, परा और कीर्ति, सब कर्तव्य-पालन पर ही निर्भर है ।

(२) कर्तव्य-पालन करना मनुष्य का धर्म है ।

(३) कर्तव्य-पालन में सामः—

मानसिक, शारीरिक और आर्थिक उन्नति होती है, सम्मान प्राप्त होता है, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति समाज के आदर्श और भद्र के प्राप्ति होते हैं, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति समाज का बड़ा हित करते हैं, अपने कर्तव्य का पालन करना ही ईश्वर की सेवा मंवा है ।

(४) कर्तव्य-परायण महापुरुषों की गौरव-भाषायें ही संसार का इतिहास है ।

(५) उपसंहार—प्रत्येक व्यक्ति को कर्तव्य-निष्ठ होना चाहिये ।

जगत का प्रत्येक परमाणु कर्तव्यशील है । यदि प्रकृति के समस्त पदार्थ अपने अपने कार्य करना बन्द कर दें तो सृष्टि का सारा रूप नष्ट हो जाय । कर्तव्य-पालन के सहारे ही सृष्टि का यह क्रम चल रहा है । व्यक्ति को अपनी शक्ति तथा बल जिस कर्तव्य-पालन की आवश्यकता पड़ती है उसमें — मनुष्य का आदर्श, सम्मान, उन्नति की उन्नति सब कर्तव्य पालन के द्वारा मिले हैं । यदि मनुष्य अपने कर्तव्य क्रम में व्युत्त हो जाय तो वह समाज का भद्र न होकर समाज का दुःख बन जाय । अतः हमें अपने कर्तव्य के प्रति बड़ा ध्यान देना पड़ेगा । यदि हम अपने कर्तव्य-पालन में लक्षित रहेंगे तो हमका आदर्श बनने का एक कर्मकार वैश्व का कर्तव्य है कि वह सदा

में राज्य का सामना करे, यदि वह व्यवहार कर राज्य को पीठ दिखाकर रथचक्र में  
मात दबे तो संसार में उसे कौन बहादुर कहेगा और उसके इस निम्नीय  
कर्म की कौन प्रशंसा करेगा ?

प्रायेक मनुष्य को चाहिये कि वह अपने कर्तव्य की समझ और अपने  
अनुकूल ही व्यवहार का धारण बनाये । मित्र मित्र परिस्थितियों में मित्र नि  
ही मनुष्य के कर्तव्य होते हैं । मनुष्य को चाहिये कि अपनी स्थिति के अनुसार  
अपने कर्तव्य का पालन करे । कभी व्यक्ति को अपने समाज और राज्य के प्रति  
कर्तव्य के व्यवहार होते हैं । कभी पिता, स्त्री, पुत्र आदि के प्रति कर्तव्य  
पालन करना पड़ता है । किन्तु सदा कर्मवीर वही है जो विपन्न-नाशकों से  
विरुद्ध विचक्षण नहीं होता और सर्वत्र अपने कर्तव्य-वश वा  
जाकर रहता है । वह कर्तव्य-पालन में अपने प्राणों की चिन्ता नहीं करता  
हरण अपने कर्तव्य-कर्म को पूर्ण करने के लिये प्राणोत्सव करने को सर्वत्र  
प्रस्तुत रहता है । ऐसा महापुरुष अपने देश और समाज का सुख उत्पन्न  
करता है ।

कर्तव्य-पालन में ऐसा मिश्रण है जिसका वर्णन करना कठिन है ।  
कर्तव्य-पालन की कल्पना ऐसा होती है जिसमें अपने और पराये का ज्ञान  
नहीं रहता । कर्तव्य-पालन का मार्ग विशाल है । कर्तव्य-पालन की प्रेरणा  
परमात्मा की ओर से होती है, उसकी पूर्ति से हृदय में शक्ति और संतोष  
होता है । कर्तव्य-पालन से मनुष्य की अपूर्व शक्ति होती है । कर्तव्य-वश  
के पथिकों की रक से राजा बनते देखा गया है । कर्म-वीर व्यक्ति सब छोड़ों  
के हृदय पर अपना अधिकार बना लेता है । कर्तव्य-निष्ठ व्यक्ति का सर्वत्र  
भाव होता है । वह समाज की भाद्र और भद्र की वस्तु बन जाता है ।  
समाज उसके व्यवहार का अनुसरण करता है । कर्तव्यनिष्ठ शाही अपना  
और अपने परिवार का तो सुख उत्पन्न करता ही है । किन्तु समाज और  
राष्ट्र भी इससे हीमा पाते हैं और नरनरुद्ध व्यवहार कर उन्नति के पथ  
के अनुगामी बनते हैं । कर्मवीर लोक में तो भय और काँति उत्पन्न करता  
ही है साथ ही वक्त्रोक्तों में भी प्रेम प्रसार करता है । समाज उत्पन्न होता  
है । इतिहास में महापुरुषों के कर्तव्य का निरूपण करने का अन्य सम्मेलन









गौरी श्री ने अपने कर्तव्य-भाव के लिये अपने बाल बाले बापों की बातें  
अपनी छोटी बहन से कर्तव्य की शिक्षा देती पर ही गणेशगर्भ वाले कल  
हूए ।

हमारे देश में कर्तव्य-विधियों के लिये गणेशगर्भ बालबालों के लिये हूए हैं  
कर्तव्य-विधियों के अभाव है । गणेशगर्भ के लिये-बाप ने हमें  
कर्तव्य-विधान की शिक्षा दी थी बिना इस बात के हमारे अन्तः  
हामा कर्तव्य-कर्म पर ध्यान नहीं होता । हमारे देश के लिए बहुत  
हुए की बात है, आज हमारे सामने कर्तव्य-वाद प्रभाव है जिसके कारण  
हम भारत को दुबारा देने हैं । बड़ी बात है कि हमारा देश छोड़े जाने  
नक गणेशगर्भ के लिये में पड़ा रहा । बचपन की बातें और शिक्षा लाने  
कर्तव्य-कर्म के लिये पर अग्रसर होना चाहिए । पर ही हम अपने पूर्वजों  
का मान हम मर्केने और अपने देश की प्राचीन बात की मर्केने मर्केने की  
शक्तिशाली बना मर्केने । नक ही हम मर्केने कर्तव्य-विधियों कहाने के  
अधिकारी होंगे । मतवाले भारतीय बचपन को मर्केने प्रदान करें

## मधुर-भाषण

विचार-सामिका :—

(१) मधुरभाषण—मधुर भाषण की आवश्यकता और महत्व ।

(२) मधुर भाषण से लाभ :—

सर्वशिक्षण, शान्ति, आदर और वर की प्राप्ति होती है । हृष्या व  
पुष्पा वृक्ष होती हैं, मधुरता प्राप्त होती है । आत्मिक स्थान होता ।

(३) कठ भाषण से हानियाँ

श्री दुष्कृता है, पुष्पा उपपन्न हाना से अथ अथयता प्राप्त होती  
मधुरता की मधुरता प्रदान है ।

(४) उपसंहार—मधुर भाषण और कठ भाषण

मधुर भाषण एक प्रकार की शक्तिशाली भाषण है । मधुर भाषण के लिये  
अशोकण मधुर का शक्ति शक्तिशाली मधुरता है । मधुरता का महत्व, मधुरता







धर्मसंस्थापन के लिए था और जर्मन-सम्राज युद्ध राज्य-विस्तार के विशेष आर्थिक दृष्टि से लाभ के लिए हुआ ।

संसार में युद्ध से बड़ी हानियाँ होनी हैं । युद्ध में अगणित निर्मनुष्यों का वृष होना है । बड़े-बड़े बुद्धिमान और कलाकार युद्ध में कत्त जाते हैं । समाज और राष्ट्रों की उन्नति में रुकावट ला जातो है । देश की संस्कृति नष्ट हो जाती है । उनकी शक्ति का अममय में क्षय हो जाता है । अगणित स्त्रियाँ विधवा हो जाती हैं, समाज में अविचार फैल जाता है । अविचार से नैतिक-जीवन पतित हो जाता है जिसके कारण समाज नष्ट हो जाता है । पतित समाजों का अस्तित्व भिड़ जाता है, असीत युद्ध मालूम कितने राष्ट्रों को लेकर बैठा, कितने देशों को जामना की शृङ्खला में जकड़ा और न मालूम कितने परतंत्र राष्ट्रों को स्वतन्त्र बनाया ।

विगत महायुद्ध सन् १९ में भी राज्य-विस्तारात्मक प्रवृत्ति के ही आध पर चढ़ा गया था किन्तु देश में कम्युनिस्ट विचारों का प्रबल व्यवहार उठ ला हुआ जिसके कारण जर्मन-साम्राज्य को विदेश के समक्ष अधिभार का देने पड़े । इसके बाद वेरसाई की अनुदार सन्धि हुई जिसमें बड़े-से-से जीपण भावनाओं का काम कर रही थी । वेरसाई की अनुदार शर्तों ने जर्मन को चौंके लोखों और देश ने अपनी भूख का समझा । जर्मनी में चारों तरफ अशांति की घरायें ला गईं । देश में प्रजातन्त्र-वाद का दुश्प्रहार फैला । यहूदियों और साम्यवादियों ने जर्मन देश की घेरे की घाव में तूफान चला दिया देश ने इस प्रवृत्ति की अधिक काज तक न मड़ा । जर्मनी न दिरङ्गर जैत लेना की सपना दिया । हिटलर के इरादों में जर्मनी का प्रति अगणित प्रसन्न था वह अपने अपने देश का लिए प्राण पसीसा लगा था, उच्च-से-अधम अविचार के बल में सारा जर्मन-साम्राज्य का एक तूफान का आध बन गया । हिटलर ने साम्यवादियों और यहूदियों का बहुत-सा इरादना था जर्मन-साम्राज्य का शोषण करना जर्मनी का साम्य-सम्स्था और दिमावा एक वेरसाई की सन्धि अनुप्राणित अधिकारी में आता बनकर पाश्चात्य-वृत्ति का परम साम्राज्य

ज्ञान कर रही थी। हिरण्य ने अपनी पत्नी जयन्ता को सम्मानना दि देने  
 वृत्त जीवन में जो प्रभु हो चुकी है। जर्मन जयन्ता ने अपने पति के साथ  
 सहिताना और उनकी आज्ञा पर कटि-कटि चलेने को प्रभु हो गईं।  
 जब जर्मनी का हिरण्य मर्य-मर्य था। जर्मन जयन्ता अपने पति हिरण्य  
 के जीवन पर मात्र प्रीतिपूर्वक करने को प्रभु है।

हिरण्य ने हिरण्यवर्ग की मूर्तु के लक्षण में उमंगों की बागडोर  
 अपने हाथ में ले ली थी। उसके समक्ष बैठे हुए वही सावधानी और कुशलता  
 से बिठा था। मन् १०३२ ई० में हिरण्य ने बरमौर की चतुर्था मन्थि की  
 जो शिष्ट के साथ १११२ ई० में हुई थी, लौट दिया। इससे मन्थि दोनों  
 में बराबरी बंध गई। ११३४ में हिरण्य ने राजकुमार पर अपना अधिकार  
 जमा दिया, उसी काज उसके मैन्थ-मैन्थ राज्य की बागडोर बारी और  
 दिया का समय एक मात्र में बराबर हो मान कर दिया। ११३८ में हमने  
 काश्मिर कांग मुहम्मद और अपना अधिकार जमा दिया। इस काजबिह  
 बागडोर ने हिरण्य के शिष्ट में बहुत कुछ विचलन किया, लौट बहा  
 दिया, शिष्ट-वही की शिष्ट कुछ बर्बाद न किया। शिष्ट काज की  
 हिरण्य का का तुलनात्मक बराबर हो गया, उनके शिष्ट हो गया कि उमंगों  
 दिया कुछ के समय पर न बागडोर। साथ ही शिष्ट के उमंगों की मैन्थ  
 लैन्थ की की लौट बराबर। काज एक काज कि दोनों में एक में काज  
 उमंग

[illegible]







इसका इंग्लैंड भेजा जा रहा था। देश के नेता मिले की इस प्रकार की महापणा के पक्ष में नहीं थे। महात्मा गांधी ने महापणा में भाग लेना था, वे कहते थे कि मिले को न एक आदमी तो न एक राष्ट्र। मिले में सर्वत्र घराबि थी। मोरो के चढ़ने से कठिनाता जा गई थी। वैको के इसका विद्रोह होने आरम्भ हो गये थे। किन्तु बाद में वह विद्रोह समाप्त हो गई।

जकार्ड में बड़े बड़े भयंकर घन्टों का प्रयोग हो रहा था। जिसका किसी विचार भी नहीं किया जा सकता था। हिरस्तर स्वयं मोरो के चढ़ने आता था। वह सारी सेवा का संचालन मुर कर रहा था। इसने बड़े बड़े महापणों को डूबाया था। इंग्लैंड पर बड़ी बड़ी भयंकर तोपबाजी की गई जिसके कारण इंग्लैंड विधायियों की मौत दराम हा रही थी। जर्मनी के बाद हिरस्तर की मिनाइ काबुलान प्रायद्वीप के देशों पर गई इसके एक २ देश पर बड़े बड़े काबुलान में तुमने विजय प्राप्त करली। यूनाइटेड का मोरो मिले की मदद के कारण बड़ा भयंकर रहा। मोरो के राष्ट्र पर मिले और जर्मन सन्धियों का समुदाय हुआ, किन्तु विजय जर्मनी के हाथ रही। मिले का बड़ा जन-घन नाश हुआ।

इसका रूप ने स्वयं जर्मनी से जकार्ड माना था। माना कि जब मिले की राजनीति के लेख थे। विजयान हिरस्तर ने रूप के विचारों को खोपसा कर दी। ३ साल तक घमासान चल रहा था। मिले ने जो देशों से छोटी तक का मोरो जमा रक्का था किन्तु विजय 'जर्मन जर्मनी' को छोटी छोटी चली जा रही थी। रूप का राजनामा न न नो का रकार हो चुका है। हिरस्तर की विजय 'जर्मनी का राजनामा' हो रहा है।

सत्तार का अभिप्राय इसी जकार्ड पर निरंतर था। कौन जानता था कि बड़े बड़े तक चलेगा। इसमें समुदायता की कनना विचार हुआ वह सब सब एक अचिन्तनीय विषय था। इनका अभिप्राय हुआ कि यह 'युद्ध किलन हा राष्ट्र' की रहस्यमय को सर्वज्ञ के जिव ज्ञान कर गया। किलन हा राष्ट्र स्वसत्ता को ध्यानपूर्व उपलब्ध कर गये और किलन हा राष्ट्र अपना अभिप्राय समझ ले लिया गये।





नागरिकों का तीसरा कर्तव्य है कि वह अपनी जनता को किसी पारस्परिक हल्लह में न पड़ने दें। यह तब ही सम्भव हो सकता है जब जनता में परस्पर प्रेम हो, किसी के हृदय को किसी प्रकार की सामाजिक या धार्मिक टेस न पहुँचाई गई हो। एक को दूसरे की सहायुभूति हो। सबमें मातृभाव की भावनाएँ हों। जनता में धार्मिक विघोम न हो। जनता में सबको आगे बढ़ने के समान अधिकार हों। प्रायः साम्प्रदायिक भावनाएँ कभी-कभी बड़ा उग्र रूप धारण कर लेती हैं। अतः साम्प्रदायिक भावनाओं को उत्पन्न ही न होने दिया जाय। जनता में सहिष्णुता के भाव साम्प्रदायिक भावनाओं को मिटाने में बड़े सफल सिद्ध होते हैं। जनता में ऐसी संस्थाओं और आन्दोलनों को जन्म दिया जाय जिससे जनता प्रेम-सूत्र में बन्ध जाये और विद्वेष की भावनाएँ ही उत्पन्न न हों। अछूतों और इतर निम्न जातियों को उठाने का भरसक प्रयत्न किया जाय, उनको समान अधिकार दिये जायें। उनको कुओं से जल भरने और देव-दर्शन का अधिकार होना चाहिये। हिन्दू मुसलमन एकता का आन्दोलन जारी रखा जाय, सब को धार्मिक अधिकार ऐसे दिए जायें जिससे एक दूसरे की भावनाओं को टेस न पहुँचे।

नागरिकों का चौथा कर्तव्य है कि वह अपनी जनता की आर्थिक दशा को ठीक रखें। आर्थिक दशा के ठीक-ठीक न रहने से जनता में घोर अशान्ति रहती है। अशान्ति की दशा में कोई कार्य सुचारु-रूप में संचालित नहीं हो सकता। नगर में बेकार जनता बड़ा उत्पात मचाती है, जहाँ तक सम्भव हो सके बेकारों के समस्या को बिल्कुल न बढ़ने दिया जाय। शिक्षित बेकारों का अधिकता जनता और सरकार दोनों को समान-रूप में घबराता है, क्योंकि शिक्षितों में ऐसे ऐसे मस्तिष्क होने सम्भव हैं जिनका अनेक प्रकार का शेनानी मूँह, जिनसे जनता और सरकार दोनों परेशाना में पड़े। अतः नागरिकों को चाहिये कि वह ऐसे उद्योग-धन्यों को जन्म दें जिससे बेकारों को आजीविका प्राप्त हो जाये और वे बेकार रहकर जनता में अशान्ति उत्पन्न न करें। उद्योग-धन्यों और कला-कौशल का उन्नत बनाने के लिए आवश्यक है कि घनिक लोग समिति-प्रणाली को

अपनाये और अपनी समस्याओं का आचल व्यवहार करना सीखें।

नागरिक-कर्तव्य की पाँचवीं बात यह है कि वह अपने नगर के चोर, डाकू और आतंकवाधियों से सुरक्षा प्राप्त करे। जिससे जनता के चोर, डाकू की रक्षा हो। कोई किसी का न भयान। कोई किसी का च अपहरण न करे। चोर सुरक्षा को दण्ड दिया जाय। लोगों को और दूसरों को सजा दी जाय। इस कार्य में सर्वजन का सहयोग अधिक आवश्यक होता। जनता भी कुछ समिति चोर, डाकू का अपहरण करे, जिससे चोर की सुरक्षा हो सके।

समिति ऐसे चोर, डाकू को सजा करे जो चोर, डाकू के सम्बन्ध के नाम पर समाज में अशांति उत्पन्न कर दे। शांति प्रेम के आधार-भूत है। कुछ भी भयानके बिना न भयान न सहायता करनी है। नगर की रक्षा में सर्वत्र उत्तम भावनाएँ ही चलना चाहिये।

नागरिक-कर्तव्य पाठ्यक्रम की छठी बात यह है कि जनता दूसरों का भी पूरा स्वागत करने कि गणमैत्री किसी के साथ सम्वाद न करे और किसी पर अत्याचार होने दे। सबको कानूनी दृष्टि में समान समझा जाय। अदालतों में पूरा स्वागत हो। पञ्चशासन से काम न लिया जाय। साथ ही स्वागत सरल हो जिससे गरीब जनता भी जान उठा सके।

नागरिकता के अधिकारों में सातवीं बात यह है कि जनता को सोचने और भाषण देने की पूर्ण स्वतन्त्रता हो, जिससे प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक शक्ति विकसित हो। मानविक प्रवृत्तियों को दबाने से संस्कृति विकास में बाधा आती है। विचार और भाषण स्वातन्त्र्य का ही अभिप्राय नहीं है कि इससे दूसरों का हानि करवा अपमान करने का काम लिया जाय।

आठवीं बात नागरिकता के कानून में यह है कि जबकि नागरिक को धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो। वह, धर्म के अनुसार चाहे जिस धर्म का पालन करे। कानून के अन्तर्गत दूसरों की भावनाओं को ठस न पहुँचाय और किसी के धार्मिक प्रवृत्तियों को

नागरिकता के अधिकार में सबसे अधिक आवश्यक बात यह होनी चाहिये कि कौंसिल, प्रान्तीय कौंसिल, केन्द्रीय कौंसिल, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्यूनिसिपल बोर्ड में राष्ट्र की समस्त स्त्री पुरुषों को मेम्बर चुनने का अधिकार हो। बहुत ही उचित और न्याय-संगत है। चुनाव में खड़े होने के लिये पक्षिक हैमियत प्रतिबन्ध हटा देना चाहिये। इससे सर्व-माधारण को भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। सरकारी पद प्राप्ति में अति-शक्ति या सम्पत्ति का विचार न किया जाय। केवल योग्यता पद की कसौटी हो।

समाजिक कार्यों में धैर्य से काम लिया जाय। समाज के कार्यों में स्थिरता की बड़ी आवश्यकता है। मानाजिक कार्यों में पश्चात्त बड़ा श्रद्धापूर्ण होता है। स्वतंत्र सम्मति समाज में अधिक महत्त्व रखती है। नागरिकों को चाहिये कि वह पद या धन के लालच से अपनी प्रतिष्ठा को खोयें। न्याय के अवसर पर पश्चात्त से काम न लें। शान्ति और व्यवस्था स्थापित रखने वाले कानूनों का समर्थन करें, इसके विरुद्ध कानून का विरोध न करें। सबको समान अधिकार हों। सबको धार्मिक स्वतन्त्रता हो। निर्बन्ध और असहायों को सहायता की जाय। हिंसाओं के कानूनों को उपयोगी बनवाया जाय। नागरिकों का सबसे उपयोगी कर्तव्य यह है कि वह अपना निर्दोष और निरवयव स्वयं करें। देश की बागडोर नागरिकों के हाथ में हो।

हमारे देश में जनता की अधिकारों का अभाव रहा है। विदेशी गवर्नमेंटों के कारण हमने अपने नागरिक अधिकार तक प्राप्त नहीं हो सके थे। किन्तु अब हमें अपने न्याय-प्रणाली गवर्नमेंट में यही कहना है कि वह जनता के अधिकारों का रक्षण-रक्षण के तन्त्रिक और नैतिक कर दे जिसमें जनता जनता का सब विचार हो जाय। इसके साथ ही जनता का भी कर्तव्य है कि वह अपने राष्ट्रीय महान के पूरा सहयोग दे और कर्तव्य तथा अधिकारों का समान रूप में उपयोग करे।



## ब्रह्मचर्य की महिमा

विचार-तालिका :—

- (१) भूमिका, ब्रह्मचर्य की आवश्यकता
- (२) शारीरिक पुष्टता और सौंदर्य वृद्धि
- (३) मानसिक विकास
- (४) आत्मिक उत्थान और विकास
- (५) ब्रह्मचारियों की गायार्थ
- (६) उपसंहार—ब्रह्मचर्य का लाभ और मनुष्यों का कर्तव्य ।

विज्ञान पाठ वेद-पदों का पढ़ा गया ।

विद्या विद्यास विजुवरों का पढ़ा गया ॥

सारे अक्षर पन्थ सत्तों को दिखा गया ।

आत्मन्-मुखा मार दवा का दिखा गया ॥

बह कीन दवाभन्द् सती के समान है ।

महिमा ब्रह्मचर्य की महान है ॥ “शंकर”

संसार में ब्रह्मचर्य से बढ़कर कोई दूसरा तप नहीं है । ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला मनुष्य देवता कोटि में था जाता है । जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य के महान को समझती है और यथावत् ब्रह्मचर्य धर्म को पालती नहीं कीर्तमान, भगानी, शक्तिमान और दीर्घ-जीवी होती है । जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य धर्म को टुकराती है, वह विरलेत्र, दुर्बल, रुग्ण और भयपातु होता है । भारतवर्ष में कभी कभीय ब्रह्मचारी पुटन होते थे, किन्तु आज के ब्रह्मचारी, दुर्बल और अशक्तिमान पुटन थे, हमका कारण भारतीयों की शिक्षा विधायी और ब्रह्मचर्य धर्म का निरन्तर करना है ।

ब्रह्मचरि ब्रह्मचर्य करने विद्यों को आयुर्वेद का उपदेश देने सत्तों ब्रह्मचर्य का महान बना है—“यु पु शान और वृत्त का नाश करने वाला ब्रह्मचर्य ब्रह्मचर्य है ।” जो यमारा यमारा मनुष्यता भूमि, मान, शारीरिक और दृष्टि सम्पत्ति काहता है वह ब्रह्मचर्य का पालन करे ।



समया संगत में मिश्रित करिण है। आज संगत में देखा तुम्हें की है जो  
 और हनुमान जी और भीष्म विनामद की असीम महिम्न की  
 जानता हो ?

हम महापुरुषों के जीवन का मर्म स्मरण हो जाना है तो हमें  
 होमोपिन हो उठता है। भीष्म विनामद के सामने उनके पत्नी की  
 परशुराम जी को भी हार माननी पड़ा था। भीष्मजी मारते महापुरुषों  
 को भीष्म विनामद के सामने फिर मुकाना पड़ा था। जब: महामर्ष के  
 वाक्यन करना विनामद आश्चर्य है। इस पर एक ऐतिहासिक कथा  
 बड़ी उत्साह-वर्धक है। एक बार भीष्म विनामद काही के राजा की सभा  
 सम्मिलित और सम्पादिका तीन कम्पासों को जीन जाने। सम्पादिका ने  
 सम्मिलित का विवाह तो उन्होंने अपने बेटे नाट्यों चित्रागद और विजय  
 कीर्ण से कर दिया और महामर्ष मंत्र चारन करन के कारण उन्होंने हम  
 को काही कीट जाने की कहा। सम्पादिका बड़ा दुःखी हुई। वह दुःखी हो  
 परशुराम जी के पास गई और अपनी सारी कह कथा कह सुनाई। परशुराम  
 को सम्पादिका की कथा सुनते ही कहया उत्तर हो आई। परशुराम जी  
 सम्पादिका से कहा कि सम्पादिका मैं भीष्म से तेरे विवाह के लिए कहूंगा, यदि  
 न मानेगा तो मैं तुमसे पुत्र करूंगा। यदि भीष्म हार गया तो तुमसे सम्पादिका  
 तुम्हारे साथ विवाह करवा दूँगा।

परशुराम सम्पादिका को लेकर भीष्म जा के पास धाव और कहा कि  
 हम कम्पा के साथ विवाह करदो। भीष्म जा ने हमका सम्पादिका।  
 दिया और कहा कि यदि आप मुझ पुरुष से हरा - न ग - मैं सम्पादिका  
 से विवाह कर लूंगा। दाना में और पुत्र दूँगा। भीष्म जा सम्पादिका  
 महामर्षी थे, परिणामतः परशुराम द्वारा मंत्र चारन करन महामर्षी भी  
 ने महामर्ष के बल पर विजय पाई। परशुराम का राजा है कि यदि भीष्म  
 में शरीरबल न होता तो न कभी अपना प्रतिज्ञा का पालन कर सकते  
 कहादि नहीं जनमानसों ने अचर्य में - शक्ति बल में पकड़ में था  
 या फिर सम्पादिका का जीवन के समुद्र

। बात की बात में उलझ गये थे । इसे ब्रह्मचर्य की महिमा न कहें तो ना कहें ?

हमारी आयु निरप्य खोय होनी जाती है । हमारे मनुष्यक खिलने से हले हो मुरम्मा जाने हैं, इसी कारण हमारी आसत आयु कम होती जा ही है । हमारे देश में दौगिक-नियमों के स्थानों पर भुरे व्यवहार प्रचलित हो गये हैं । अतः देश के नेताओं का कर्तव्य है कि वह देशवासियों को योग्य नियमों पर चलाने का उद्योग करें और ब्रह्मचर्य का उचित रीति से पालन करावें । बिना ब्रह्मचर्य के पालन के सुख और ऐश्वर्य की प्राप्ति करना निरी मूर्खता है ।

ब्रह्मचर्य ही हमारी विद्या, धैर्य और उद्यति का एकमात्र साधन है । ब्रह्मचर्य ही जीवन है, ब्रह्मचर्य ही मानवी शक्तियों को विकास देने का मूल साधन है । अतः हमें ब्रह्मचर्य प्रथम का पालन करके बल, उत्साह और ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहिये । अपने मन को मदैव पवित्र रखना चाहिये । अन्त में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि ऊपर जो साधन बतलाये हैं उन पर चलकर ब्रह्मचारी बनो । ब्रह्मचर्य द्वारा शक्ति उत्पन्न करने के परचातु देश तथा जाति का उद्धार करो । वस यही मनुष्य का धर्म है और इसी में मानव-जीवन की सार्थकता है ।

## वर्धा-शिवा-योजना [ वैसिक-शिवा ]

विचार तालिका:—

- १) प्रस्तावना - वर्तमान शिवा-प्रस्तावों से असन्तोष
- २) वर्तमान शिवा-प्रस्तावों दोषपूर्ण हैं ।
- ३) महात्मा गांधी की शिवा-योजना
- ४) वैसिक-शिवा की विशेषताएँ
- ५) वैसिक शिवा का पाठ्य-प्रस्ताव
- ६) नव शिवा की वैसिक-शिवा
- ७) उपन्यास-वैसिक और अशिवा का निराकरण

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ने हमारी संस्कृति को गहरी धक्का पहुँचाया है। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का स्वभाव कुछ ऐसा है जो हमारे जिसकी प्रति यह आवश्यकता से अधिक हो गई है। वर्तमान शिक्षा हमारी सामाजिक स्थिति को हलना सराबोर कर दिया है और देश को हल भी बना दिया है कि हमको उठाने में पर्याप्त समय लगेगा। हम उस को प्रत्येक भारतीय अनुभव कर रहा है और वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ने एकदम बन्द करने की चिन्ता में है। भारतीय सभ्यता में हम समझती आती समझते उपलब्ध कर रहे हैं।

सन् १९०२ के स्वदेशी आन्दोलन के समय देश में अनुभव कि या कि शिक्षा-प्रणाली में भारतीयता होनी चाहिये। उस समय अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं का जन्म हुआ और प्रचलित हुए, किन्तु वह प्रचलित केवल स्वदेशी तक ही सीमित रहे और स्वदेशी आन्दोलन के साथ ही साथ भारतीय शिक्षा-प्रणाली द्वारा शिक्षा देने पर जोर दिया। देश में गुरुकुलों की विद्यार्थियों की स्थापना हुई। राजा सदेन्द्रप्रसाद ने गुरुदासन में प्रथम शिक्षा, म० मुन्शीराम ने गुरुकुल काँगड़ी और चार्यश्रानिनिधि म० पू० पी० ने गुरुकुल गुरुदासन की बुनियाद डाली। राष्ट्रीय-सहायभा ने जो धन प्रदान किये। असहयोग आन्दोलन के अवसर पर सन् १९११ ई० में गुजरा और काली में विद्यार्थियों का जन्म हुआ। १९वीं शताब्दी के अन्तिम दिने ही देश का यह निष्कर्ष हो गया कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली हमारे सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को हल नहीं कर सकती, उस अनुपयोगिता के सम्बन्ध में अनेक नेमाधों ने अपने विचार प्रकट किये और कहा कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में जो कोई अंधा धारणा है और जो समाज में ऐसे व्यक्ति उत्पन्न कर सकती है, जो समाज के उपयोगी बन न सकें, तब तो अपना विद्वान् स्थापन हो और समाज के काम सहकार्य भाग में एक वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने समाज में एक सच उत्पन्न कर दिया है। १९११ ई० में देशी शिक्षा-प्रणाली को नष्ट करने का प्रयत्न किया है। समाज अब एक समाज उत्पन्न करने का चिन्ता में है जिसमें सहयोग

जी भाषनाय अधिक हों। पुरानी और एक सदी पिछले आदर्श को लेकर चलने वाली शिक्षा-पद्धति को बदलने की बड़ी भारी आवश्यकता है। इस शिक्षा में विषमता है, केवल पूँजीवादी व्यक्ति ही इसे प्राप्त कर सकते हैं, सर्वसाधारण के विकसित होने की इसमें कोई गुंजायश नहीं है। सबसे मुख्य बात यह है कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में भारत के मूल नैतिक-आदर्शों को कोई स्थान नहीं दिया गया है।

विश्व के महापुरुष महात्मा गांधी की दृष्टि भी इस दृश्य शिक्षा-प्रणाली की ओर गई और वह उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। सन् १९३० ई० में भारत के कई प्रान्तों का शासन कांग्रेसवादी प्रतिनिधियों के हाथ में आ गया। महात्मा गांधी ने इस अवसर को उपयुक्त समझा और इस महत्वपूर्ण विषय को जनता के सामने रखकर कांग्रेस मंत्री-महदलों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। इस शिक्षा-योजना के सम्बन्ध में महात्मा जी ने जो धरोहर जनता में हरिजन में की थी उसके अधरपर यह है—“मेरी योजना यह है कि बालक की शिक्षा उसे उपयोग-धन्धे सिखा कर शुरू की जाए, इस प्रकार अपनी शिक्षा के आरम्भ में ही वह कुछ उपार्जन करने लगे। स्कूलों में विद्यार्थी जो चीज बनायें उसे राज्य मौज ले ले। इस प्रकार धन में बाहर राज्य की शिक्षा पर कुछ भी व्यय नहीं करना पड़ेगा। बालकों के स्कूल स्वावलम्बी होंगे।” महात्मा गांधी की आज्ञानुसार देश ने अनुभव किया कि हम कमी को भी क्यों न पूरा किया जाए? अतः २२, २३ नवम्बर सन् १९३० ई० में राष्ट्र के प्रमुख प्रमुख नेताओं का एक सम्मेलन वर्षा में हुआ जिसके प्रेसीडेंट डाक्टर बाबिरहसैन मिन्सिपल जाना मिलिया देहली नियत हुए। महात्मा जी ने अपनी महत्वपूर्ण शिक्षा-योजना को सम्मेलन के सामने रक्खा। सम्मेलन ने बहुमत से इस योजना को स्वीकार किया। इसी योजना को वर्षा-शिक्षा योजना के नाम से पुकारा जाता है। यू० पी० प्रान्तीय गवर्नमेंट ने इस योजना में कुछ प्रान्तीय आवश्यकताओं के अनुसार उलट-पेर करके अपने प्रांत के लिये स्वीकार कर लिया है और इसे वैश्व शिक्षा का नाम दिया है, जिसको विस्तारपूर्वक निम्नलिखित है।

६ वर्षों-शिक्षा योजना की व्यापना यह है कि प्रतीत वर्षों की शिक्षा को देश बनाया जाय और अन्य विषय वर्षों के लिये बनाये जायें। उद्योग-व्यवसायों की प्राप्ति-प्रवृत्ति विचित्र वैज्ञानिक रूप में हो। प्रयोग शिक्षा पढ़े हो, फिर प्रयोगों का ज्ञान बनाया जाय। वर्षों को निर्माण सरकार ७ वर्षों की अवस्था में दिया जाय और १४ वर्षों की अवस्था पर्यन्त तक हाई स्कूल के समस्त शिक्षा व्यवस्था हो जाय। शिक्षा का माध्यम शिक्षा मातृ-भाषा हो, अंग्रेजी भाषा को उपर्युक्त कोटि स्थान न हो। शिक्षा प्रयोग और निःशुल्क हो। वर्षों का वातावरण देना अच्छा जाय जिसमें प्रयोग समस्त मानसिक भावनाओं विकसित हो। शिक्षा समाप्त करने पर प्रयोगों के लिये दर-दर भावना न रहे। यह राष्ट्र का कमाऊ सदस्य बन जीवन-व्यय में करने। वैश्व शिक्षा में नागरिकता की शिक्षा को निर्माण द्वारा दिया गया है। देश को नागरिक शिक्षा की कितनी आवश्यकता यह बात किमी से सुनी हुई नहीं है। वर्तमान शिक्षा में मनुष्य का अधिकार है ? देश के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है ? हमारा विधि भी नहीं कराया जाना। करने का प्रयत्न यह है कि वैश्व शिक्षा समस्त बड़ी बड़ी शिक्षा है। बेकारी और निरक्षरता की समस्या हमसे बड़ी सुगम से हल हो जानी है। कक्षा कौशल और उद्योग-व्यवसायों को विकसित होने पूरा अवकाश मिलता है। वर्षों की स्वाभाविक जिवाणु-कृता से पूरा सुझाया जा सकता है। सब से बड़ा ज्ञान वैश्व शिक्षा में यह है कि वातावरण को ज्ञानवाना नहीं समझते। उन्हें स्कूल अपने घर से भी अधिक प्यारे लगते हैं। ऐसी उच्च शिक्षा से हमें पूर्ण लाभ उठाया—वाशिंग्टन के उसके प्रचार में मन, मन और धन से प्रयत्नवादी रहना चाहिये।

सन् १९३८ ई० को हरिपुरा कांग्रेस में हम शिक्षा-योजना का प्रस्ताव बना और उसे सर्व सम्मति से अपनाया गया १९१४ की रूपरेखा निम्नलिखित थी —

- (१) समस्त देश में नागरिक शिक्षा ७ वर्ष तक अनिवार्य और निःशुल्क कर दी जाय।

- (२) शिक्षा का नाप्यन मायमाया हो ।
- (३) शिक्षा उपयोग-धन्यों को केन्द्र बनाकर दी जाए, पहले विषय-ज्ञान कराया जाए, बाद में माध्यम बनाया जाए ।
- (४) नागरिक शिक्षा पर पूरा बल दिया जाए ।

इसके परभाव मर कामेसी प्रांतों में वर्धा-शिक्षा योजना के अनुसार शिक्षक तैयार करने के लिए प्रारम्भिक स्कूल खोले गये । आज इन स्कूलों में शिक्षा पाये हुए अप्पानक महान् प्रारम्भिक स्कूलों में शिक्षा दे रहे हैं । सभी बेमिक-शिक्षा योजना का क्षेत्र बहुत परिमित है । यदि गवर्नमेंट उसे पदानुवृत्त महापता देती रही तो उसमें योजना का पथेष्ट अभिप्राय सिद्ध हो जाएगा । विगत वर्षों की यदि रिपोर्ट सत्य है, उनमें किसी प्रकार का गोलमाल नहीं है तो निस्सन्देह बेमिक-शिक्षा का अविष्य बड़ा उज्ज्वल है ।

वर्धा शिक्षा के विषय में वर्धा-शिक्षा योजना में बताया गया है कि कावेर की शिक्षा केवल राष्ट्र की आवश्यकता की पूर्ति का साधन बनाया जाए । अर्थात् राष्ट्र की जिन उपयोग-धन्यों की आवश्यकता है अथवा जिन व्यवसायों से राष्ट्र को लाभ होता है, उन उपयोग-धन्यों और व्यवसायों की पूर्ति के लिए वह कावेर शिक्षा को प्रचलित करे अथवा उसकी कोई शिरोय आवश्यकता नहीं है । महान्मा जी का कहना है कि जिस व्यवसायों को जिस प्रकार के मनुष्यों की आवश्यकता है वह अपनी अपनी आवश्यकता के अनुसार विद्यालय खोले और विद्यार्थियों को शिक्षा देकर अपने विषे तैयार करे । यदि-कावेर स्वावलम्बी हो । कला-कौशल और साहित्य के कावेर जनता अपनी उदारता से चलाये । महान्मा जी ज्ञान की अधिकता को व्यय का बोझ समझते हैं जिस में व्यवहारिक जीवन हो हो नहीं सकता । फिर प्रश्न बनता है कि महान्मा जी की स्क्रीन के अनुसार राष्ट्र में योग्य अप्पानकों का अभाव हो जाएगा । उनका मनापान यहां है कि किसी विषय में दिव्यवत्पों रखने वाले व्यक्तियों को ऐसे ऐसे केन्द्रों में भेजा जाए जहां वे कोई उपयोग-धन्या मोक्ष सकें । वर्तमान पुनर्वसिद्धि की बन्ध कर दिया जाए और वर्तमान दृष्टिकोण का



अपने सिरे से परित्यक्त कर दिया जाय ।

अक्टूबर सन् १९१४ ई० में कांग्रेसी-अंग्रेजों ने अपने अपने से हस्तोक्त दे दिया है । जिसके कारण वर्धा-शिवा भोजना का कार्य मर पड़ा है अथवा जिस तीव्र गति से कार्य आरम्भ हुआ था वह गति सिधे से चलता रहना नो विस्मयेह राष्ट्र की व्यवस्था बहुत ! सुधर जायी ।

राम में हमें यही कहना है कि देश को केसिक शिवा को अपने आदिसे और हमको देश के कोने कोने में फैलाना आदिसे सम्पन्न : पञ्चनाम ही हाथ रह जायगा ।

## शत्रुराज वसन्त

विचार-शक्ति —

- (१) प्रभावना—शक्तिर शत्रु की मयाधि पर वसन्त प्रान और शत्रु की व्यवस्था ।
- (२) वसन्त में वर उपवर्गों की शोभा ।
- (३) वसन्त का वसन्त के द्वार पर प्रभाव ।
- (४) शीतलोष्मन्त और मानवी स्वभाव पर वसन्त का प्रभाव ।
- (५) वसन्त और वरि ।
- (६) उपसंहार—वाराण ।

कुछन में केजिन ककारण में कुछ न में,

कवारिन में कश्चिन कश्चीन विकल्पन है ।

कई 'चरमाकर' वराण ह में वोन ह में,

वसन्त में वीक्षण पञ्चाङ्गन वसन्त दे व

हम ह विमान म दुर्भा म वर वसन्त म

वसा वर वसन्त म वर वर विमान है

कश्चिन में वर म वर वर म व वर वर

वसन्त म वसन्त म वर वर वर वर है व 'चरमाकर'

शिशिर की सरदी से दिष्टुराई हुई प्रकृति ने एक थंगड़ाई ली और जगत को एक नवीन स्फूर्ति का अनुभव होने लगा। शीत की भीषणता का अन्त हो गया। पशु पक्षियों का भय दूर हो गया। वृक्ष लतादि ध्यानन्वित हो, पल्लवित होकर खिलने लगे। कोयल मनवाली हो गई। उसने अपना मस्ताना राग थलापना आरम्भ कर दिया। दक्षिण पवन अपनी मधुर मनवाली चाल में चलने लगा। वृक्ष और पौधों ने नवीन पक्षियों से अपना शरीर टक हिया और वह अतुराज वसन्त के स्वागत में फूलों के उपहार लेकर खड़े हो गये। आम मंजरियां अपने प्रीतम वसन्त को आना देखकर प्रेम में पुलकायमान हो गईं और पुलकायलि के मिस इधर उधर झूमने लगीं। वन उपवन पुष्पों के हार ले लेकर अतुराज वसन्त के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे। सूर्य ने भी अब अपनी तिरछी चाल छोड़ दी और ये अब उत्तरायण हो गये और सीधे सिर पर आने लगे। जाड़ा वसन्त का आगमन सुन हिमालय की चोटियों पर जा दिया। वसन्त का भी यावकाल समाप्त हो गया। यह चंचल गति में इधर उधर दौड़ता फिरता है। दक्षिण पवन पुष्पों से पराग का मौरम लेकर दमन्त के शरीर पर टबटन करती फिरती है। सूर्य की किरणें पीली हो गई हैं। पेतों में पीली पीली सरसों फूल रही है। वन उपवन विविध प्रकार के पुष्पों में लदे चित्रकार की चित्रशाला में दिखलाई पड़ रहे हैं।

प्रकृति का रूप अनुपम है। चारों ओर आनन्द ही आनन्द उमंगित हो रहा है। दूरे घासों की सुगन्ध ने भीरों को उन्मत्त बना डाला है। वह उन्मत्त हो फूल फूल पर भागे फिर रहे हैं। तनिक प्रकृति के मनोज्ञ आंगन का तो अबलोकन कीजिये। कैसा आकर्षक और कैसा उन्मादकारी दृश्य है। विकसित कुसुम हृदय को आकर्षित कर रहे हैं। समस्त वनस्थलों में पवन ने ऐसा मौन खड़ा है कि बेचारी कोयल और और अपने हृदय पर अधिकार नहीं रख सकें हैं। कोयल कुहू कुहू करके गला फाड़े डालती है। भौंग अपनी मधुर गुञ्जन से मुरली का मनोहारी स्वर निकाल रहे हैं। परीहा पीउ-पीउ की रट लगा रहा है। गायक का भी सिर हिलने लगा,

हमने भी बगल की रागनी देख ही । कवि का हृदय बसो लयब्रमे का प्रेम मगबाधी भावकी चौर चम्पा लड़े मित्र रही है । हाथ का हथ विहरा ही पक्षता है, हमने हर्षानिष्ठ से सारी वक्षसि को नृत्तों से दिया है । चन्द्रमा की प्रसर किण्वों ने रमिकों के हृदय में सारे का उत्पन्न कर दी है । शिमहिमाने तारों में अवेष्टाकृत आकण्ठ बड़ गया अपने लोचन सेतनामय हो गये । सब में प्रोचन गति प्रवाहित हो उ कवि मानुष चौर प्रेमी वक्षिणों के हृदय काट में नहीं रहे, वे वक्ष हीकर सचकने लगे ।

सदा ! हम समस्त प्रकृति ने अपना कैसा अनुपम रूप बनाया सता और वेले नृत्तों के चोक से खर रही है । तारावा में विकसित कु अपनी मनोहारी लुपि से हृदय को आकर्षित कर रहे है । गुञ्जाव की सवसात्रे भीती से भरा पक्षी है । त्रिनका कक्षित कक्ष-गान हृदय में अनुपम आनन्द उत्पन्न कर रहा है । उषसन चौर वारिकामों के लीके, गुञ्जावी चौर मैत्री नृत्तों को देन देनकर हृदय उमका पक्षता चम्पा, चमेखी और भेठकी की सहक में समस्त वनस्पतों को सहका है । चामों के बाग भाव-मंजरियों से खर रहे है । मंजरियों की मयूर म ने सारे मानव-जगत का मन मोह दिया है । अमराहवा में कोयल का गान सदा विदा हुआ है जो वरवम मानव-हृदयों को अपनी चौर ल रहा है । वेले और विष्टर पूजे हुये है जो अपनी हृदय के उत्साम प्रवर्धित कर रहे है । शीतल, सुतन्त्रित वन अपनी मयूर गति से चक्ष जीवधारियों पर अपना प्रभाव डाल रहा है । चन्द्रमा प्रकृति की पुनरादकारिका सदा को सबलोकन कर निराना मनधन के साथ उ हो रहे है । चन्द्र की चरकीली सदा अपनी ग्यारा प्रेमी नृत्तों के वक्षों से नृत्ती हो गई है । चामों में विष्टर मुद्रा गीत मानव-जगत ऐसा है कि उसके पन तक नहीं दिखलाई पड़ता । उम गुञ्जाव का सह मुन कक्षियों पर भीगे के सुण्ड आ आ कर गिर रहे है चाम ने मानव का सो हुए गुञ्जाव की नुकीली कक्षिया पर गुनगुनान फिरने है । सामय वह गुञ्ज

ने महकता झूंदते हों। अहा! तनिक मनुकों को मधुर तान की तो धव्य हीजिये, कैसा हृदयाकर्षक स्वर है? मोहन की मोहनी वंशी के मधुर स्वर ने भी मात कर रहा है। गुलाब के तापल कटि बेचारे मनुकों को शंकर की कं ग्रिशूल से भी अधिक दुखदायी हो रहे हैं। प्रेमातिरेक के वशीभूत ने भी मधुकर प्राणों की चिन्ता न करके ग्रिशूज रूखाती कांटों के चारों ओर घूमकर लगा रहे हैं। अपने अनन्य प्रेमा को ऐसा तड़ोना देख गुलाब भी अपने प्रेम को न घुसा सके और लिजलिजाते चेहरे से अपना विशाल हृदय अपने प्रेमास्पद के आलिंगन के लिये खोल दिया, अहा! कैसा मनोहारी दृश्य है?

इस सहज मुहावरी अनु के आते ही मानव-हृदय को तो बात ही क्या पूछते ही? मानव-हृदय हृषीकेश के वशीभूत हो योंनों उछलने लगता है। सबके हृदय में एक नए प्रकार की दिव्य स्फूर्ति का अनुभव होने लगा है, न जाने क्यों? मानव-हृदय किसी दूरे तायी के लिए तड़पने लगा है। उसके हृदय में एक प्रेम का टोम उठनी है। उसे फूले हुए वृक्ष लतादि में चारों तरफ कुसुम-घनुर्धारी श्री मन्मथ जी का ही आभास दृष्टिगोचर होता है। शीतल सुगन्धित पवन, रंग-विरंगे कुसुम, भाँतों की गुंजार, आल-संवरियों को महक, कोयल को मनोहारी कूक मानव-हृदय में उधल-पुधल मचाए बिना रह जायें यह कब संभव है? इस समय हृदय पर विजय पाना क्या साधारण काम है? इस समय वह अपने हृदय की उछालों को नहीं रोक सकता। उसे चार तरफ बसन्त ही बसन्त नज़र आता है। चित्र में बसन्त, काव्यों में बसन्त, गीतों में बसन्त, कहीं तक कहें बसन्त का अपूर्व लड़ा ने मानव हृदय को विनम्र कर दिया है। उन्मुक्त और उत्साह में ऐसा मनन हो गया है कि उसे आनन्द-मूर्ति का न ज्ञान नहीं रहा। उसके सरगता बाँ आनन्द-मूर्ति अपने क माँतो के मर में फूट निकला है। कभी गाता है, कभी गुनगुनाता है, कभी उन्मत्त मनाता है और कभी भाव-विभोर होकर नाचने लगता है।

बसन्त का स्वागत मानव-समाज बसन्त-पंचमा ही में आरम्भ कर



बुझते हैं। उनकी सृष्टियों भाव-हृदय में छोड़ोकर आनन्द उत्पन्न करती हैं।

कवि लोग समस्त को श्रुताव कहते हैं। निश्चिन्नेष्ट समस्त का वैभव लक्ष्मणों का भाई। पृथ्वी का वह मुकुट पहनता है। कोटिज उसके द्वार पर स्वीकृत करता है। वन जी/ वनवन राजमहलों की भांति शोभा सम्पन्न हो जाते हैं। लटकणों आभ-मंजरीयों और दुबारे का काम करता है। पुष्पों का पराग ही हृदय की तरह काम देता है। जिधर देखो उधर शोभाही शोभा दिखाई पड़ती है। जिधर देखो, जिये देखो, सब आनन्द में मग्न हैं। सबमें महि आना, महि स्फूर्ति और मया जीवन का गया है।

कवित नृप घन्टाघरों, करत दातु मधुनीर।

मन्द मन्द आसन चरयो, कुंज कुंज कुटीर ॥

### प्रातःकाल धूमने के आनन्द

विचार-तालिका :—

- (१) प्रातःकालीन प्रकृति का सुन्दर रूप।
- (२) सूर्योदय में पहाड़ उठने वाले प्रकृति की समस्त दृश्य का लाभ उठाने हैं "सोरे सो सोरे, जागे सो पागे"
- (३) प्रकृति की मनोरम सृष्टि, पक्षियों का कल्ल माल।
- (४) प्रातःकाल धूमने में लाभ—

एक सुन्दर होता है एक प्रकृति का स्थापान होता है, प्रातःकालीन सूर्योदय में एक होता है, प्रकृति में परिवर्तन प्रातःकाल में प्रकृति का रूप होता है। प्रकृति के सादृश्य में कोमल मधुरता का उदय होता है। प्रकृति में स्फूर्ति आता है, प्रातःकाल में प्रकृति का रूप होता है।

- (१) प्रातःकाल मन्द सुखित वन का समान्य दृश्य।
- (२) इस प्रातः, वृक्ष लताओं का विकास।
- (३) प्रातःकाल और कवि-हृदय।

चन्द्रदेव ने उषा की आकाश में आवना, सौन्दर्य और प्रकाश प्रतिनिधि रूप में खोला। अगवान् आरकर के आगमन के द्वागत् में रिच अनुपम सौन्दर्य से सुसज्जित हो गई। पक्षियों का कख-गान-स्वागत-हुँ-सा सुनाई देने लगा। विकसित पुष्पों का सौरभ कीतख समीर के ताप मिश्रकर उषागत के कार्य में संलग्न हो गया। चन्द्रिक एक नवीन स्तुति का मधार होने लगा। पूज्य प्रसन्नता से पूज्य रहें। सोम सिन्दुओं के पुष्प-मालादि पर कदना कनोका सौन्दर्य स्वीकार कर दिया। मिथर देव के कथर बसन्त-मा तिल रह्य है।

मृत्ति करण मायो पड़न कर इच्छाली चिरवी है। उमने कमल  
से भी का देखकामो बरही। कमल प्रेमी का कोमल स्पर्श पा मित्रित्व  
कर हैस पड़े। कीरे भी कपने हरण पर काबू न रख सके, उमने  
पूज पूज का समसमादन आरम्भ कर दिया और अवनी यह मयूर बागु  
बनाई कि समस्त जन उपवन गुंजायमान हो गया। पक्षियों से भी वन  
हरण का भाव न दृक सका, वह गया। काबू काबू कर कछगान से तन  
हो गये, समाज की दाक पर बैठी कोकिल ने वह रंजित स्वर से  
देखा कि मागी समराइचा मग्न होकर उमने खीं। मयूरों की  
ध्वनि से आकाश गुंज रहा। त्रिषर देखो उचर मृत्ति का समि  
हो रहा है। समस्त दिशाओं में आनन्द और प्रसन्नता का एक  
साधारण है।

[illegible]

सो स्वतंत्रता और प्रकृति की भी प्रसन्नता आ जाती है। हमारा प उत्पाद में भर जाता है और दिन भर काम करने की स्फूर्ति आती है।

शहर और गाँव का वातावरण मनुष्यों, पशुओं, कार्मिकों आदि कारण प्रायः गन्दा हो जाता है। माजियों, पायानों और खासोच्छ्राम कारण हमारे लिए रहने सहने के कमरे और मकान की वायु विषैली हो जाती है। अतः हम विषैली वायु से बचकर जंगल में स्पर्शप्रद वायु सेवन करने को जाते हैं। प्रातःकालीन वायु सेवन से हमारा रक्त शुद्ध हो जाता है और उसमें रक्त-बीजाणुओं की वृद्धि होती है। रक्त शुद्ध हो जाने से धूलि धक्का अन्य प्रकार के विकारी कीटाणु भी नहीं होते। यह वायु पूर्ण लाभदायक होती है। इस समय प्रकृति शान्त होती है। शान्त प्रकृति की पवित्र वायु जीवन के लिये यही आरोग्यप्रद होती है, टहलने में यह ध्यान रखना चाहिये कि घूमने की गति जितनी अधिक होगी उतनी ही यह अह-प्रत्यक्षों को अधिक बल देने ली होगी।

प्रातःकाल घूमने से हमारी इन्द्रियों को प्रकृति का साहचर्य प्राप्त होता है जिससे उन्हें पूर्ण तृप्ति प्राप्त होती है। कोमल भावनाओं का दय होता है। दिन भर काम करने के लिये हमारा हृदय ध्यान में भर जाता है। पर्यटन करने से शारीरिक अवयवों को पर्याप्त संख्या में हिलना चलना पड़ता है। इस कारण कमीशरों रोग, जो हमारे जीवन को कमना देना देते हैं, प्रायः नहीं आते। अस्तिष्क में एक नवीन स्फूर्ति अभ्युदय होता है और शरीर के से कड़े काम करने के योग्य तैयार हो जाता है। हृदय की गति तेज हो जाता है। धार्मिक और आध्यात्मिक स्तरों को मननना मिलता है।

प्रातःकाल पर्यटन से जीवन-इतिम पूरा साहचर्य प्राप्त कर जन वह प्रकृति के प्रत्येक अह-प्रत्यक्ष से परिचित हो जाते हैं। यह पर्यटन जीवन का ज्ञान हो जाता है। प्रकृति की स्वच्छन्दता का देख कर मानवा











हँसी नहीं उठ सकती। यह सदैव 'अधोगति' के गर्त में पड़ी रहती है। हमारी अधोगति के नमूने निम्न कान देस रहे हैं।

अन्त में हम यही कहेंगे कि उपर्युक्त साधनों पर चलकर देश उन्नति के मार्ग में अग्रसर हो सकते हैं। हमें चाहिये कि हम अपने देश में उन्नति के साधनों को सुधारें। शिक्षा और दस्तकारी का प्रचार करें। कुरीतियों को समूल नष्ट करें। प्रेम और एकता को बढ़ाएँ। सहनशक्ति को स्थान दें। सब ही हमारा देश अधोगति के गर्त से निकल सकता है। शिक्षा और धार्मिक प्रवृत्ति ने भी कुछ राष्ट्रीयता में बाधा डाल रखी है उन्हें भी उदात्त रुढ़ सम्भव हो कर करने की चेष्टा करें, कुरीतियों को नष्ट करें। कपूतों से प्रेम करें। राष्ट्रनाशियों दूट को अपने देश में बसाने कुछने न दें, सब ही देश उन्नति का आनन्द उपभोग कर सकते हैं।

## शिक्षा और आचरण

विचार-तालिका :—

- (१) दूरदर्शन—शिक्षा का उद्देश्य।
- (२) शिक्षा और मानसिक विकास।
- (३) आचरण और धार्मिक-शक्ति।
- (४) क्या वर्तमान शिक्षा-प्रणाली आचरण को पुष्ट करती है ?
- (५) शिक्षा से ज्ञान प्राप्ति।
- (६) शिक्षा और सार्वजनिक जीवन।
- (७) शिक्षा और आर्थोविका-उन्नयन की समस्या।
- (८) कुछ महापुरुषों के उदाहरण।
- (९) आज की परिस्थिति।
- (१०) उपसंहार—सारांश।

शिक्षा का उद्देश्य मानवीय शक्तियों को विकसित कर जीवन को सुखस्थित रूप में पूर्ण बनाना है। सचमुच शिक्षा मनुष्य को जीवन-



सर्वोत्तम शिक्षा केवल हमारी मानसिक शक्तियों को विकसित कर देती है ; वह हमें जीवन-संसार के लिए तैयार नहीं करती और न आवश्यक शक्तियों को विकसित करती है । वह मनुष्य जीवन को रोम नहीं बन गई न जीवन बनाने का मार्ग देती है । हमारी सर्वोत्तम शिक्षा हमें धार्मिक शिक्षा नहीं देती, न दया और करुणा का मार्ग सुझाती है और न ईश्वर शक्ति को मान्य करती है । वह हमें केवल मनुष्य नहीं देती कि मनुष्य इन्सान का भाव हो । अतः सर्वोत्तम शिक्षा प्रयासी किसी प्रकार से हमारे आचरण को सुध नहीं करती । जिनका अधिक मात्रा ही उनके मन में ही छिपी है शिक्षा-प्रयासी को बहुत देना नहीं पड़ता हमें जाना प्रकार के शिक्षा का ज्ञान करना है, हमें विविध प्रकार का मनोवृत्ति का ज्ञान होना है, शिक्षाओं की विचार-धारा से परिचित होना है, बड़े व महानुभावों के साहित्य अध्ययन का ऐसा ही ज्ञान होना है कि वह जानें हमारे मन में ही उपस्थित है । और न केवल न केवल साहित्य, मात्र और असाधारण से साधारण गुण और ईश्वर शक्ति का ज्ञान हमको शिक्षा द्वारा ही प्राप्त हो सकने है ।

सदाचार ही समुच्च जीवन की मूल्य है । सदाचार के माध्यम से  
 का सम्बन्ध निर्मित हो चुका है । एक धर्मोपदेशी कहते हैं—धन बचा ।  
 भी कुछ नहीं लगे, बरिष्ठ व्यापक बचा गया तो कुछ बचा गया और ।  
 सदाचार बचा गया तो सर्वोच्च बचा गया ।" निम्नोक्त जीवन में आक-  
 र्शित श्रुति वचन है । "आचारः परमा धर्मः" अर्थात् सदाचार ही परम धर्म ।  
 बरिष्ठ श्रुति सदाचार ही परम धर्म । और इसके अनुसार आचार का न बचाया  
 वह सदाचार बचाया बेसी ही शक्ति है कि कि लगे का बार बार अन्त का न  
 आचार जिसे अन्त बार बार में ही माना रहा किन्तु धर्म दुर्लभ कुछ का  
 न हुआ । सदाचार का सम्बन्ध हमारे व्यवहारिक जीवन में है । निम्न  
 श्रुति, इत्यादि के अन्त निर्देशों के अनुसार ही वास्तविक जीवन में ही  
 बच वर बरिष्ठ सदाचार ही । निम्न श्रुति का अन्त है । निम्न  
 सदाचारों का अन्त बचाया है । सदाचार, बचा और निर्देशों वर भी है ।





की अपेक्षा की उम्मीद करने वाले बड़े-बड़े सिद्धि ही मिलेंगे। वे समा का चार्ज करना नहीं जानते। उनके यहाँ उम्मीदगुस्तवा का नाम ही मनुष्य है। उनमें और पशुओं में भेद नहीं रह गया है।

मनुष्य को चाहिये कि वह अपनी शिक्षा के साथ अपने भावों की भी टीक रखने का प्रयत्न करे, क्योंकि चरित्र-निर्माण का वास्तविक मम वास्तविक ही है। यद्यः पाठशालाओं में शिक्षा और सदाचार की शिक्षा साथ ही साथ होनी चाहिये। सारा येपकारी सदाचारी विद्यार्थी ऐतरेयि स्वमिचारी विद्यार्थी से कितना ही गुना अच्छा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने सदाचार का शिक्षा निकाश रक्खा है। जहाँ सदाचार शिक्षा करता है वहीं शक्ति विकास करती है।

सारा यह है कि हमारी शिक्षा ऐसी हो जो हमें जीवन-संसार सिधे तैयार करे और हमें आध्यात्मिक शक्ति भी प्रदान करे। यह ही शिक्षा का उद्देश्य पूरा हो सकता है, अन्यथा नहीं।

## पुस्तकों के अध्ययन के आनन्द

विचार-संग्रह :-

- (१) प्राप्ति—मानव-जीवन और आनन्द।
- (२) पुस्तकें मनोरंजन का साधन हैं।
- (३) पुस्तक पढ़ने से आत्म-संस्कार और आनन्द-वृद्धि होती है।
- (४) असीम साहित्य-जीवन को बन्द करता है।
- (५) पुस्तकें साम्प्रदायिक देवी हैं और मित्र से अधिक आनन्द प्रदान करती हैं।
- (६) ज्ञान-वृद्धि होती है।
- (७) सत्य-साहित्य मानव-जीवन को उत्तम बनाता है।
- (८) पुस्तक-अध्ययन ही वास्तव में सच्चा आनन्द है।
- (९) उपसंहार—पुस्तक-अध्ययन और हमारा कर्तव्य।



हमारा संसर्ग जितनी ही उत्तम पुस्तकों के साथ होगा, उतना ही हमारा जीवन उत्तम और आदर्शपूर्ण बनेगा। नैतिक पुस्तकें हमारे आचरण में सुधारती हैं। जब हम रामायण पढ़ते हैं तब हमारे जीवन पर असीमा-पावन, भाव-भाव, पातिव्रत-धर्म, जयन्ता और शिष्टाचार के भाव उत्पन्न होते हैं। कबीर साहब के ग्रन्थ हमें सच्चरित्रता को और बरबस सीखते हैं। सूर के पद हमारी हृदय-गत मस्ती-मत्त को घोलने में साधुन में भी प्रति-कार्य करते हैं। पुस्तकें विस्मय-हृदय हमारे जीवन को सुष्टि प्रदान करती हैं। हमारे हृदय की मस्ती-मत्त कभी मैत्र को काटती है, हृदय में शान्ति का बीज बोध करती है।

आपत्ति-काल में पुस्तकें सबसे मित्र की भाँति साम्प्रदाय प्रदान करती हैं और हमारी मानसिक चिन्ताओं को दूरका करती हैं। कभी हमारे हृदय में अपार साहस भर देती हैं और हमें कठिन से कठिन कार्यों के करने को तैयार करती हैं। आपत्ति की घड़ियों में और कठिन समस्याओं के उपस्थित होने पर तब हमें चारों तरफ से मानसिक चिन्ताओं घेर लेती हैं और हमारा हृदय स्थिति होने लगता है, ऐसे अवसर पर महापुरुषों की चेतावनियाँ और उपदेश बड़ा उत्तम कार्य करते हैं। वह चेतावनियाँ हमारे धीरज को बचाती हैं और हमें जाने बचने की आसादित करती हैं, जिनमें हमें आसाद और आश्वासन मिलता है। वह हमारे हृदय के धार पर पड़ियाँ बाँधती हैं और हमें दुःखी नहीं होने देती।

पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञान-वृद्धि होती है और मस्तिष्क विकसित होता है। विद्वानों के विचारों से परिचय प्राप्त होता है। जितने ज्ञान और उत्तम विचार देने को मिलते हैं। हमारा ज्ञान वरोधक होता है। इन विविध आधारों से अपने आचरण का समन्वय करते हैं। अपने में गुणों का अभाव जाने पर जैसा ही अपने में गुण खाने का प्रयत्न करते हैं। हमें उत्तम और भले आचरण का अनुभव होता है। स्वयं और अस्वयं के ज्ञान का मान होता है। हमें मूल्य निरीक्षण का ज्ञान प्राप्त है। हमें अपनी सफलताओं और विफलताओं स्पष्ट प्रकट होन लगती है।







विषय उनके जीवन को सुखी बनाते हैं। विद्यार्थियों को विषय को ग्रहण करनी चाहिये। ये दोनो मुख्य विद्यार्थियों के अग्र हैं जिसके बड़ तेरा जीवन संसार में विजय प्राप्त कर सकने है।

आज्ञा-पाठन मनुष्य का सबसे उत्तम गुण है। संसार में अनुमान के बिना कोई कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। आज्ञा पाठन अनुमान का ही रूपान्तर मात्र है। विद्यार्थी में आज्ञा-पाठन का गुण होना चाहिये वह अपने अध्यापकों की आज्ञाओं का सभी भाँति पाठन करे जैसे कि अपने माता पिता की आज्ञा का पाठन करता है। आज्ञाकारी विद्यार्थी अध्यापक अधिक प्रसन्न होते हैं और उनकी सारी महानुभूतियाँ विद्यार्थी साथ ही जानी हैं। अध्यापक आज्ञाकारी बालकों को बड़े प्रेम से शिक्षा की शिक्षाएँ देते हैं और उसे जीवन संसार के उपयोगी मनुष्य बनाते हैं। गुरुओं की कृपा से सरस्वती की भी कृपा उन्हें प्राप्त हो जाती है। सरस्वती के आशीर्वाद से मनुष्य संसार में अपनी जीवन लीला की लेने समर्थ हो जाता है।

विद्यार्थी में उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त एक गुण यह भी हो चाहिये कि वह अपने गुरुजनों के प्रति आदर और सम्मान के भाव रखे। जो गुण हमें अपने उपयोगी सिद्धा देखकर बहुत से मनुष्य बनाता है जो हमारे प्रति हमारा वह कर्तव्य नहीं है कि हम उसके लिये सम्मान नवाँ हमारे प्रति भद्रा रखें। हमारे दुःख-दर्द में उसका हाथ बढ़ाएँ। ई। विद्यार्थी अपने अध्यापकों की अवज्ञा करते हैं और उनकी आज्ञा उल्लंघन करते हैं। जो मनुष्य उसका दुर्गुण माना जाता है, सम्मान नहीं, उसे विद्यार्थी कभी अपने जीवन में सम्मान नहीं हो सकता। उनका कभी कल्याण प्राप्त नहीं हो सकता। उसे विद्यार्थियों से कभी सम्मान प्राप्त नहीं होनी। वह कभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण नहीं होना। उनका जीवन सदैव अधस्ताओं में बिता रहना है, ऐसे विद्यार्थी अपने माता, सम्मान और राष्ट्र लिये बड़े बालक सिद्ध होना हैं।

नई नई बातें सीखने की प्रवृत्ति रखना विद्यार्थियों में सदैव बनी





प्रमोद की वस्तुओं को अपने से दूर रखना चाहिये, तब ही वह विद्यार्थी कहलायेगा और जीवन-संग्राम में सफल निपाही सिद्ध होगा।

एक नीतिकार ने बताया है कि विद्यार्थी में कीड़े की सी चेष्टा, रुका सा ध्यान, कुत्ते के समान निद्रा होनी चाहिये। कहा है—

काष्ठयेष्टा वक्रस्थानं खान-निद्रा तथैव च।

अवपाहारी गृहस्थायी विद्यार्थी पंचसुषुप्तम्॥

यथा उपरोक्त गुण हमारे देश के विद्यार्थियों में पाये जाते हैं? कौन कहता है 'नहीं'। हाँ, स्वतंत्र देशों के विद्यार्थियों में यह सारे गुण मिलते हैं। उन देशों के विद्यार्थी निर्व्यग्रह में रहते हैं। स्वतंत्र देशों के विद्यार्थी भारतीय विद्यार्थियों की भाँति घर-कम-मुश्किल और गाँधी-गल्लोच नहीं जानते। अपने व्यवसायों की अवदेखना करते हैं। अमेरिका और जापान के विद्यार्थी स्वयं उद्योग-धर्मों में अपनी वढ़ाई का स्वर्ण पुराजित लेते हैं, जिनसे उनकी शिक्षा का बोझ उनके माँ-बाप पर नहीं पड़ता। भारत के विद्यार्थी अपने माँ-बाप के ऊपर भार-भर होकर रहते हैं और देश के बनाव-बिगार में घर की आर्थिक दशा की चिन्ता करते हैं। वे स्वास्थ्य का कुछ-कुछ विचार नहीं रखते। किन्तु स्वतंत्र देश के विद्यार्थी स्वास्थ्य का जितना ध्यान रखते हैं इतना किसी अन्य देश का नहीं रखते।

## विज्ञान के अवस्था

### विचार-नैतिकता

- (१) विज्ञान का उद्देश्य विकास।
- (२) विज्ञान का उद्देश्य नैतिकता —

यथा नैतिकता नाम है, परिश्रम और समय की कद्रो है, मानव सम्बन्धों की पूर्ति होनी है, रोग-निवारण है, विद्या-प्रचार और सनातन में सहायता मिलनी। विज्ञानिका और ध्यान की पूर्ति होनी है।



मनुष्य की शरीर-रचना पर बड़ा मूल्य से मूल्य अध्ययन हो रहा है। इंजिनियरिंग के नये से नये तरीके खोजे जा रहे हैं। निम्न नई-नई औषधियों की खोज-पड़ताल होकर चिकित्सा-विज्ञान में उन्नति हो रही है। किरणों के द्वारा शरीर के भीतरी भागों का परिचय प्राप्त किया जा रहा जिससे रोग का मूल कारण ज्ञान हो जाता है। और इसकी चिकित्सा नियमानुसार हो सकती है। राजवस्त्र, कोट आदि रोगों का निदान जो पहले के ही द्वारा होने लगा है। सर्जरी के कामों में विज्ञान ने पर्याप्त मात्रा में उन्नति की है। मूल्य से मूल्य नापी तक की खीर-काढ़ की जगह है और इसमें पूरी सफलता प्राप्त होनी है।

विज्ञान ने मनुष्य के निम्न व्यवहारिक कामों में बड़ी सहायता सहायता पहुँचाई है। विद्यामन्त्र, सुहृद, वरुण, कामाक्षी, वैश्वदेव, आदि निम्न व्यवहारिक वस्तुएँ इसमें कम मूल्य में विज्ञान ही की सहायता से प्राप्त होनी हैं। आजकल तो विज्ञान की उन्नति की चाम सीमा हो गयी है। आज वायुयान पर सवार होकर विशाल आकाश की सैर कीजिये। अथवा प्रशान्त महासागर के विशाल वनस्पति पर जहाजों द्वारा यात्रा कीजिये। रेडियो पर बैठ कर दुनिया के समाचार सुनिये अथवा गाना सुनकर अपने चित्त को बहलाइये। बिजली के पंखों की सुन्दर ममीर में प्रगाढ़ निद्रा का सुख लूटिये अथवा सूर्य के प्रकाश की उत्तम किरणों वाले बिजली के प्रकाश का सुख लूटिये। कहां तक कहें यदि आपको अपने सुख की सोचा बरानी है तो कीमत पाउकर खगाइये, मित्र-मण्डली की आकर्षक फोटो केमरा से खिंचवाइये। यदि आप गाल-शिव हैं तो मांश भांति के बाघ-वन्धों को क्रिया करके अपने आनन्द को बड़ा कीजिये। यदि दिन भर के परिश्रम ने पेट भर जा रहा है तो खाइये किन्ही मिनेरा-हाउ में बैठकर अपना मनोरंजन कीजिये।

माचरना-प्रचार ॥ अद्विक शिक्षा-प्रचार में उन्नति विज्ञान ने की है अथवापकी द्वारा शिक्षा-प्रचार रेडियो की अथवा सहायता पड़ता है। ही मध्य देशों ने रेडियो द्वारा जनता को शिक्षित बनाया है। भारतवर्ष में



को सद्बुद्धि दे कि वे इन वैज्ञानिक आविष्कारों को गर-संदार में न लानें । गत महायुद्ध में परमशक्ति के द्वारा 'परमबम' का आविष्कारके आधार के नगरों का जो संदार किया गया वह आतंक शक्ति का । बड़ा निदर्शन है ।

संसार में बेकारी बढ़ रही है, उसका एकमात्र कारण वैज्ञानिक उन्नति है । मशीनें सदस्यों मनुष्यों का जीवन छीन लेती हैं । संसार के कच्चा-कोयला और घरेलू उद्योग-धर्मों की वह मशीनों का प्रसार बीत किये देता है । यही कारण है संसार की बेकारी सुरमा के बदल की सीध बढ़ती ही जाती है ।

वैज्ञानिक उन्नति ने संसार में बड़ी हानि बढ़ की है कि मानवी-अभिवृत्तियां बढ़िमुंशी हैं गई हैं, जिसके कारण उनकी अत्युत्त आकांक्षा बनी ही रहती है । वैज्ञानिक जंग से बनी हुई वस्तुयें ऐसी आकर्षक हैं जो मानवी-हृदय को बचल बचनी और भीकती है । वैज्ञानिक वस्तुओं के मनुष्य की विद्यामिता और सौन्दर्य में अभिवृद्धि की है । आज का संसार 'आमो' पीपी और मौत्र करो' के सिद्धान्त पर चला जा रहा है । वह किसी सम्य बात की सुनने तक को तैयार नहीं है । धर्म के बग़्गन बीसे बढ़ गये हैं । धर्म की लुके लज्जाने हंसी उड़ाई जा रही है ।

निष्कर्ष यह है कि विज्ञान ने जहाँ मानवी-जीवन को सधुर बनाया है वहाँ उसको कटु भी बनाया है । जहाँ मनुष्य के साधन बुराये हैं वहाँ उसके लक्ष्य की आँधी भी तैयार की है, किन्तु मनुष्य दुःख को नहीं दूर रहा । एक युग ऐसा आयेगा कि मनुष्य इन आविष्कारों को प्रकाश की दृष्टि से नज़रेगा ।

१)

## मनोरंजन के साधन

विचार-नालिकायें —

- (१) मनोरंजन जीवन की कौनो आवश्यक है ?
- (२) समयानुसार मनोरंजनों में परिवर्तन ।
- (३) रेडियो द्वारा मनोरंजन ।



मनोरंजन और मनोविमोह में बड़ा आश्रितकारी परिणाम कर दिया है। विज्ञान ने हमारी मनोवृत्ति को बदल दिया है। जो भेद-व्यभिचार हमारे मन को गूँथ बदलाने से बचने में बहुत बड़ा साधन नहीं रहा मर्यादा। जो दरप दरप बहुत धीरे चलने से बड़ा साधन को के इतिहास होने है।

मनोरंजन की सामग्रियों में सबसे ऊँचा स्थान आनन्दक रेडियो का है। इस यन्त्र ने संसार का हलका उपकार किया है कि संसार के सभी से बचने गायक का गाना आप अपने घर के कोने में बैठकर सुन सकते हैं। रेडियो के आविष्कार ने मानवी गायन-कला की पूरी निरुद्धि कर दी है। अब कहीं आनन्दक भरने की आवश्यकता नहीं रहने ली। संसार के विचार गवैरे प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध हो सकते हैं और अपनी गायन-कला से संसार को मोह सकते हैं। रेडियो के परचार सामोकोन और हारमोनियम आदि जाने मानवी-जीवन के अभिजाता की पूरा कर सकते हैं।

मनोरंजन का दूसरा उपयोगी साधन सिनेमा है, जिसमें प्रत्येक समाज का व्यक्ति काम लुका सकता है। दिन भर की मानसिक बलाभित मित्रों के बिचे सिनेमा से सुख और सफा मनोरंजन कोर्न नहीं है। बिचपद का प्राकृतिक दरप बड़ी सुन्दरता से प्रकटित किये जाते हैं। दरप-विज्ञान को संगीत-कला के समस्त आकर्षक और मनोहारी दरप बिचपद पर बचकोन करके बच भर के बिचे संसार को सुखाया जा सकता है।

कार्पोराट और सरकन के भेज भी मनोरंजन के साधनों में कम उपयोगी नहीं है। मोटर-साइकिल का मोटो के चक्कर घूमना, चक्कर का साइकिल चढ़ाना और मनुष्य का भलि में कूटना, भागत हुये घोड़ों का लड़े होकर चलना, सिड और बकरा का साथ-साथ खेल करना मनुष्य के हृदय में कम कीनुदल उत्पन्न नहीं करते। मानवीय स्वभाव है कि वह मनीन और विविध वस्तुओं को अवलोकन कर सुख अनुभव करता है। मट, बात्रीगर, मैसमोरम आदि के खेल दम्भ-दम्भे लोदन को जो नहीं चाहता। चौक, लाल, शतरज आदि ऐसे खेल हैं जो घर के पर





बन्दर का नाच और कहीं पशु-पक्षियों के विचित्र खेल हो रहे होंगे ।

अभिप्राय यह है कि हम वैज्ञानिक युग में मनोरंजन के साधनों का अभाव नहीं है । मनुष्य अपनी रुचि के अनुसार कोई-न-कोई खेल ऐसा ही सकता है जिसमें उसका जीवन आनन्दकारी बन सके । भावः देखने में आता है कि जिन मनुष्यों के जीवन में कोई मनोरंजनकारी वस्तु नहीं, उसका जीवन कुछ अधिक सुखद नहीं देखने में आता । अतः मानवी जीवन में कोई-न-कोई मनोरंजन की वस्तु होना आवश्यक ही नहीं बरन् बड़ी आवश्यकता है ।

## संस्कारित्रता

विचार-शालिका :—

- (१) संस्कारित्रता मनुष्य-जीवन की सर्वोत्तम वस्तु है ।  
परिपक्व व्यक्ति देश और समाज दोनों का कर्त्तव्य है ।

- (२) संस्कारित्र कैसे बने ?

सत्य, दया, नम्रता और उदारता के नियमों का पालन करके पूरे कामों में उपराम लेकर और परचास्ता करके । बुराई को आसानी से छोड़ना और काम करके । सत्यवादिता का अभ्यस्य और भ्रष्ट गुरुत्वों की संगति करके ।

- (३) संस्कारित्रता में काम —

काम निश्चय उलम्ब होता है और हममें सारा उलम्ब होता है । मनु-समाज परिवार व्यक्ति को सम्मान की दृष्टि से देखता है । संस्कारित्रता जीवन में शान्ति और सुख उत्पन्न करती है । संस्कारित्रता मानवी जीवन को ईश्वर की सेवा का अर्थ से ही है । सेवा के प्रति सम्मान के भाव उत्पन्न होते हैं । आज्ञा पालन का अवसर पड़ता है । पवित्र कामों की ओर से हृदय में आकांक्षा ( दृष्टा ) उत्पन्न होता है ।



## (१) सारांशः—

शायेक व्यक्ति को चरित्रवान् बनने की चेष्टा करनी चाहिए। समाज में सत्चरित्रता का बाहुल्य हो सुख, शान्ति और सद्गति उत्पन्न करना है। सत्चरित्रता का पाठ भेद पुरुषों की सति, वृत्तम साहित्य और वृत्तमर्थों की सेवा ही में मयो-मोनि शिवा का बहना है। चरित्र की ऊँचा उठाने के लिए 'कर्मार्थ' जैसे पत्रों और गोता, रामायण आदि कीटि की पुस्तकों को अध्ययन करना चाहिए। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अश्वमेध, अचरित्र, अन्धकार और अमय आदि सब देने हैं दिन पर चरित्र से अनुभव स्वर्ण ऊँचा उठता जाता है। दिन पुरुषों पर सदैव दया दृष्टि रखना भी सत्चरित्रता की भावनाओं को साधन करता है। चरित्र गुणमनों के प्रति सम्मान और आदर के भाव तथा उनकी अज्ञान-वासन एवं देवा आदि देने गुण है जिससे अनुभव अनुभव आचरण पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।



## मित्रव्यपता

## विचार-नातिका :—

- (१) प्रस्तावना—मित्रव्यपता की आवश्यकता और उपको गलत।
- (२) अन्तर्गत की दानियाँ।
- (३) मित्रव्यपता का लाभ।
- (४) मित्रव्यपता का अनुभव।
- (५) मित्रव्यपता में दानि।
- (६) मित्रव्यपता का अर्थ और प्रभाव।
- (७) मित्रव्यपता का अनुभव का साधन।
- (८) अनुभव - इस मित्रव्यपता दानि चाहिए।

अनुभव करने और दानि का अनुभव करने को दानि करने के लिए वर



अपमन्यवी होती है। वे जो कुछ उपार्जित करती है उसे वह तुल्य दान दे किन्तु सम्बन्धियों में देना नहीं होगा। वह आमासी आश्रयका के लिए अवरय कुछ-न-कुछ बचाती है।

यह मनुष्य जाति के विकास का युग है। समाज में अब विश्व में व्यवस्थित और गिणायक प्रवृत्तियों विकसित हो रही हैं। मनुष्य में अब पाने की अवेका विचारशीलता, दूरदृष्टि और कर्तव्य-बुद्धि पर्याप्त मात्रा में विकसित हो रही हैं। आज मनुष्य अपने लिए ही नहीं ओचित रहता बल्कि वह अपने परिवार, अपने समाज और अपने राष्ट्र के लिए भी ओचित रहता है। यदि वह अपनी सामर्थ्य को बिना समझे ही व्यय करता बला बाध तो वह अपने उत्तरदायित्व को पूरा न कर सकेगा। ऐसी परिस्थिति में वह स्वयं ही कह डेगावेगा हो किन्तु वह अपने अधिकारों को भी धुँस बनाने में समर्थ न हो सकेगा। वही देश शान्तिवादी होने वाले हैं मितमन्यव, मित्रविहारी और मितमन्यवी धर्मियों को संख्या अधिक होती है। माना, विचारों को चाहे कि वह वाक्य-काज ही से अपने बच्चों को मितमन्यवा बनाने की चेष्टा करें। बाइको में मितमन्यवता के विकास होने के आत्म-विकास की मात्रा बढ़ती है। मितमन्यवता का मुख्य अन्वयम से जाते हैं। मितमन्यव के अन्वयम से अपमन्यवी मनुष्य भी मितमन्यवी बन सकता है। मितमन्यवता की बात मनुष्य जीवन की संवत् बनावती है और सद्गुणों के विकास करती है, दुर्गुणों को शीघ्र ही। कल्पित मनोवृत्तियों को न करती है। सादगी और स्वावलम्बन का पाल बहाली है। सफ़रों को सव सामर्थ्य देना करती है। सद्-असद् का ज्ञान उत्पन्न करता है। मानव मनोवृत्तियों को मन्मान में ले जाने की विवश करता है।

मितमन्यवता एक कठोर सवम है। इसमें आत्म-निषेध और आत्म शासन की प्रवृत्ति बनती है। इससे आत्म प्रतिष्ठा और स्वतन्त्र स्वावलम्बन का विकास होता है। दया और करुणा को बनाने का पूरा अदकारी मितमन्यव है। धर्म की स्थिरता मितमन्यवता में हो सकती है।

मितमन्यवता जीवन में सरलता और सादगी उत्पन्न करती है।

दोनों गुण ऐसे हैं जो मनुष्य में देवत्व का गुण स्थापन करते हैं। मित्र-व्ययी कभी किसी का मुँह नहीं ताकता, वह अपना काम गुप्ताद रूप में खड़ा खेता है। राष्ट्र और समाज भी मित्रव्ययी के आभित जीवित रहते हैं।

मित्रव्ययता के अध्यामियों को चाहिए कि वह कभी अपनी आमदनी से अधिक व्यय न करें। सदैव अपनी आमदनी को आवश्यक कामों में ही व्यय करें। आवश्यकता से अधिक व्यय करना किङ्कर्ण्यता कहलाती है और आवश्यकता से कम व्यय करना कंजूसी कहलाती है। मानव-जीवन में कंजूसी एक भयंकर रोग है। कंजूसी से रोग्य और परमार्थ कृप भी प्राप्ति नहीं होते। बुद्धिमान् व्यक्तियों को इस रोग से दूर रहना चाहिए।

मित्रव्ययता राष्ट्र और समाज को जब ही तक लाभकारी है तब तक मित्रव्ययता द्वारा संचित धन से राष्ट्र और समाज को सेवा हो। यदि मनुष्य मित्रव्ययता के साधन बर्तने में सावधान न रहे तो वह मित्रव्ययता कृपणता में परिवर्तित हो जाती है। कृपणता राष्ट्र और समाज दोनों के लिए बड़ी हानिकारक है। धन का वितरण राष्ट्र के स्थास्थ के लिए आवश्यक है।

मित्रव्ययता की उपलब्धि के लिए मनुष्य को बहुत सावधानी से काम लेना चाहिए। मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी दैनिक आय व्यय का हिसाब रखे। दैनिक आय-व्यय का हिसाब रखने से यह लाभ होगा कि व्यय की आवश्यक और अनावश्यक मदें ज्ञात हो जाएँगी जिससे अनावश्यक मद को बन्द करने का साधन मिल जायगा। जहाँ तक सम्भव हो मनुष्य को अपना आमदनी और व्यय का लेखा रखना हो लिखना चाहिए, नौकरों के भत्ता कमा न रहना चाहिए। यदि नौकरों के बिना काम न चले तो हिसाब-किताब का चौकसा रखना बड़ा आवश्यक है। नौकरों को बढ़त-बदलते रहने से नौकरों को धोखा देने का अवसर कम मिलता है। खाप-भण्डारा का प्रबन्ध कभी नौकरों के भरोसे न छोड़ना चाहिए।







नित्य स्नान करें। थोड़ने, बिछाने तथा पहनने के बस्तों को साफ़ रखने का कपड़ा छीर मकान गन्दगी से दूर हो। गरीर के प्रत्येक जगह गन्दगी से दूर रखने साथ-साथ-सर्व-देखा रखने त्रिवर्ग की गन्दगी छीर केबनी न हो। बिचारे को सदैव दूर रखने। नि की शुद्धि से बाहरी शुद्धि का बड़ा सम्बन्ध है। शुद्ध हरण बाहरी ग को परमद नहीं करते।

दीर्घ-जीवन का दूसरा साधन है उत्तम भोजन। दीर्घ-जीवन की अभिलाषियों को चाहिए कि वह भोजन को स्वच्छता और सादगी विशेष ध्यान रखें क्योंकि जीवन का दूसरा उत्तम भोजन। ऊपर निर्भर है। हमें सदैव शास्त्र पचने वाला और पुष्टिकारक भोजन करना चाहिए। मस्तिष्क की शक्ति बढाने और हृदय की गति ठीक रखने के लिए दाढ़, भात, रोटी, दूध, तरकारी, इरे फल और से बकर दूसरा भोजन नहीं है। भोजन सदैव सम शुद्ध और गन्ध हो करना चाहिए। ऐसा भोजन कभी नहीं करना चाहिए जिसको से घृणा उत्पन्न होती हो। सदैव ताजा भोजन करना चाहिए। भोजन आवश्यक उत्पन्न करता है और स्वरूप-शक्ति को नष्ट करता है। भोजन देश, काष्ठ और परिस्थिति के अनुकूल होना चाहिए। बहुत पचने के अनुसार भी भोजन होना चाहिए। हरे शाक और दूध को भोजन में अधिक महत्व देना चाहिए। भोजन में शाक, मिर्च, अचार, मुरम्बे इत्यादि का बाहुल्य सर्वथा स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है। भोजन में जिनसे ही कम पदार्थ हो उतना ही अच्छा है। भोजन जिन ही मात्रा और निम्न प्रमाण से रहित होगा। जितना ही वह अधिक स्वास्थ बढ़ेगा। भोजन में समस्त पदार्थों का होना आवश्यक है क्योंकि शुद्ध भोजन इस में पचना है जो। अनक रोनों को उत्पन्न करता है। भोजन में विषम पदार्थों का मात्रा या चरित्र नहीं है। सदैव भोजन देना चाहिए जो सामान्य से पच। फल मात्रा और अन्न के विशेष हरे होते हैं। अधिक वस्त्र और कुछ फल स्वास्थ को हानि पहुँचाते हैं।



में प्रगाढ़ मित्रा का भोग करो । स्वस्थ पुरुष को प्रगाढ़ मित्रा को गहरी नींद देने वाले पुरुष दीर्घ-जीवी होते हैं ।

दीर्घ-जीवी बनने का पौर्वर्षी साधन है नियमित जीवन । निर्दिष्ट जीवन में स्वास्थ्य का सत्वाभास हो जाता है । दीर्घ-जीवन के निर्दिष्ट को प्रत्येक काम सावधानी से करने की सख्त सलाह दी जाती है । काम नियम-बद्ध होना चाहिए । यदि कोई काम करना ॥ तो परहे । समय लेना चाहिए, तब उस काम को आरम्भ करना चाहिए । पुरुष यह है जो काम को सोच समझ लेने के बाद आरम्भ करे और योग बनने काम को नियत समय पर नहीं करते वह कभी योग सफल नहीं हो सकते । जो काम करने हो उन्हें कभी राख दूख न बस काम में फँस जाओ । किसी काम को इसलिए न बसा कि वह अविध्य में हो जायगा ।

दीर्घ-जीवी होने के लिए बड़ा साधन है ब्रह्मचर्य । ब्रह्मचर्य से शक्ति बढ़ती है, दीर्घ-जीवन प्राप्त होता है । स्वास्थ्य ठीक रहता । ऊँचा और बल बढ़ता है । समार में यश प्राप्त होता है । सुन्दर बंश चढ़ता । रोगों का नाश होता है । ब्रह्मचारी की सेवा-शक्ति इसलिए तीव्र हो जाती कि वह वीर्य की रक्षा करता है । मनुष्य उसके मस्तिष्क में सदैव विचार प्रवाहित होते हैं । वीर्य की रक्षा से मस्तिष्क पुष्ट होता है और पुष्ट होने से सेवा तीव्र हो जाती है । समार में मिलने वाले काम हुए हैं सब ब्रह्मचर्य के बल पर हुए हैं । ब्रह्मचर्य के बल पर ही देवताओं ने पर विजय पाई है । कहीं हमारे योगवान्, साधुध्यान तथा प्रसिद्ध पूर्वज और कहीं योगहीन, अकर्मयोग और निश्चय उनका मन्त्रान् हम की आकाश पालाश का जन्म है । हमारा हम जनन का कारण योगवान् की ब्रह्मचर्य-नाश ने हमारा मुख, गोल, आंगोष्ठ, बल, विद्या, आनन्द और सब मिट्टी में मिखा दिया है ।

“मरण विन्दुपालेन जीवन विन्दुधारणम्”

योगवान् ने कहा कि वीर्य एक ही है वह करना मरण ।



(४) इत्यादि ।

(८) उपसंहार—उत्तम जीवन का महत्व ।

हमारा शरीर प्रत्येक समय कुछ-न-कुछ काम करता रहता है। जब बेमुप होने हैं तब भी हमारा हृदय और केन्द्रे तथा अन्य अंग-अंग अपना कार्य पूर्णतः करते रहते हैं। काम करने से शरीर विपन्न हो जाता है। खजने, खन खोजने, खनिक भी खोजने विपन्न हो जाता है। अतः हमें अपने शरीर से भी शरीर में कुछ-न-कुछ कार्य है। यदि किसी व्यक्ति को लोड कर किसी कड़े परिश्रम पर लगा दिया। और काम के परिश्रम से फिर लोड काप तो इस व्यक्ति का भार बर्तन का अवरण कम हो जाता है। स्पष्ट है कि काम-चला करने से शरीर होता है। अतः हमें भी शारीरिक श्रम करना चाहिए। और शरीर का भार कम हो जाता है। यह शारीरिक श्रम शरीर के लिये आवश्यक है। अतः ही से शरीर के हृदय (Cells) के रक्त पर नए लोड बर्तन और शरीर का भार कम हो जाता है।

अब समझना चाहती है कि हमारा भोजन कैसा होना चाहिए।  
आहार ही शरीर का सर्वस्व है किन्तु आहार के महत्व को लोगों ने समझा ही नहीं है। इसी कारण से संसार में दुर्घटना की मात्रा निरन्तर बढ़ती है। आहार जीवन प्रकाश का होना है—मानसिक, शारीरिक और सामाजिक। हमारी आदत, चरित्र, नीति और भुक्त की वृद्धि केवल आहार पर ही निर्भर है।

[illegible][illegible]



घोरे ७, ८ बजे शाम को भोजन करना अधिक है। शाम को भोजन करने के बखते मर जाए बीबी बड़ा हुआ गर्म दूध पीना चाहिए। एह में मरैब बीरे-बीरे पीना चाहिए। एक मोन हूँ में दूध को पीना स्वास्थ्य में अधिक लाभ नहीं करना। भोजन कमो अधिक गर्म न करना चाहिए। अधिक देर का रक्का हुआ भोजन भी न करना चाहिए क्योंकि ऐसे भोजन में अनेक प्रकार के विचार उत्पन्न हो जाते हैं। भोजन करने के एक बखते एक कोई शारीरिक और मानसिक परिश्रम न करना चाहिए। भोजन में समय नहीं एक हो सके, बाको कम रिचे गो बहुत खरबा है। भोजन के। बटे बाद हवाधुमार बागो को केना स्वास्थ्य के लिए अधिक दिनकर होता है। भोजन के परचार कुछ दूर सवे: सवे: रहना बड़ा उपचारे और स्वास्थ्य-बर्द्धक है। भोजन करके आठवाई पर नद जाता खर नहीं है।

भोजन में कसाहार का स्वाद अधिक महत्व का है। कसाहारी को कसाहार करना आवश्यक आवश्यक है। कड़ो में संशोधनी तक नष्ट होती है। भोजन करने के ही बखते बाद कसर काया उत्पन्न है। कड़ो में भोजन स्वास्थ्य, वायु, शक्ति और बुद्धि को बढ़ाता है। शरीर मज्जम को हलका रहता है। हस्त माफ़ होता है। मन में कुबामनाएँ नहीं उत्पन्न होतीं। कड़ो में मूर्ख-मेरू और निरक्षरी अधिक होती है, हम कारण कसाहारी कभी बीमार नहीं हो सकता।

भोजन करनेवाले बदायीं में दूध से बकरा कोई दूसरी वस्तु नहीं। सबसे अधिक गुणकारी भोजन दूध है किन्तु पारोप्य दूध ही में से सारी विशेषताएँ हैं। दूध बकर और बीब को बढ़ाता है और मन को शान्ति देता है। दुग्धाहार से बुद्धि अधिक होती है और विचारों में पवित्रता आती है। दूध मरैब करे में खान कर पीना चाहिए। दूध के स्वास्थ्यबर्द्धक कीटाणु गर्म करने से मर जाते हैं। खल दूध ताजा और पारोप्य दिया माप गो बहुत ही अच्छा है। देर के रक्मे दूध दूध को बिना रक्मे किए कभी न पीना चाहिए।









का प्रबन्ध न होने के कारण चाहे वर्षे छात्रों मानव-मौल के बन्ध-उल्लंघन होता और सरकार को मद्देन करके अपने बरगानों का भ्रम करना चाहिये। बरगानों के साथ ही साथ दुष्ट मनुष्य के-कोई का प्रबन्ध करना चाहिये जिससे मनुष्यों की मनुष्य की तरफ हो। तब ही हर पाँच मील के आसपास पर मनुष्यों के शत्रुत्व को छोड़ दें। जो अपने-अपने बहुतसी शत्रुओं को जिम्मा हो और अपनी कोषियों प्रबन्ध हो।

हमारे गाँव गन्धगी के कारण मनुष्य बहुत दुष्ट है। जहाँ-जहाँ दूध-करकट पड़ा रहता है। स्वाम-रवान पर देशक और कीचड़ को मँडरी रहती है। लोग आम राहों पर ही बैठकर पाकाना खाते हैं। मनुष्यों को भी गाँव के-दिग्ग हो जाना देते हैं। जहाँ-तक स दुष्ट ही दुर्गन्ध-मालूम होती है, किन पर अनिश्चित मनुष्यों-निर्वास रहती हैं। गाँव के अन्दर और बाहर मँडरे-कुँदरे पानी के गड्ढे होते हैं, जिनमें छात्रों मनुष्य उत्पन्न होते हैं। वर्षे बहुत से तो गाँवों की मनुष्य का दिक्कत ही नहीं रहता। अनेक छोटे-छोटे पाकाने भर जाते हैं, जिनमें मनुष्य उत्पन्न करने वाले स दुष्ट उत्पन्न होते हैं, जो गन्धगी और गाँवों की चारों तरफ फैलती है। बस मनुष्य के सहोदर गाँव वर्षे बहुत ही मँडरे हैं। साथी वालों का कारण गाँव वालों की चिन्ता है। गाँव-मुखा जोगें-मनुष्यों को चाहिये कि वह गाँव वालों को सदाई के काम समझें और गन्धगी की पुगड़ों को उनके सामने रखें।

गन्धगी के कारण गाँवों में अनेक प्रकार के रोग फैल जाते हैं, जिनमें प्रत्येक वर्षे गाँव-निवासी पाक-रुपण होते हैं। मनुष्य पुनः ही जान लेकर ही दम लेता है। जीवक दिनों में दैजा फैलता है। इस आवश्यक है कि गाँव-गाँव में दूध और दाने मिश्रण का प्रबन्ध हो, जिससे बच्चे आम-निवासा करने का मोल न मों।

गाँवों में पाक पानी मिश्रण का कार्य प्रबन्ध करो है। गाँव-वालों को कच्चे कुँदों का मनुष्य पानी पीने है चम्पक। नम्रियों का पानी पीने है।







लिये सरकार, मुख्य और सरले मनोरंजन होने चाहिये। प्राचीन माता-मनोरंजन के दिने गोंद-गोंद रेडियो बनवा रही है, किन्तु यह मनोरंजन गोंद बाजो की रक्ति से बहुत ही महंगे पड़ेगे। आपराधकता है कि यदि मैं देशी रेडियो को बंद करने की योजना की जाय। दूसरी प्रतियोगिताएं रातें आयें, हमको पुरस्कार, दिने आयें। नगर की कामोद्-प्रमोद की रों की गोंदों में व्यवस्था करना सीक नहीं और न ऐसा मनोरंजन गोंदों के अनुकूल ही हो सकता है।

गोंद की गन्दगी को दूर करना भी गोंद-सुधार का एक प्रतीक है। गोंद की गन्दगी प्रायः षण्ण सालों प्रादुर्भाव की काम होती है। गोंद, कुप, गन्धियों और गन्धियों की गन्धी होती हैं जिन्हें देखकर घिन आती है। गोंद माता के बच्चे और रिश्तेदारों के गन्दे रहते हैं। काम-सुधार का गोंद को चाहिये कि यह सफाई का पूरा ध्यान रखें। गन्धियों की और कुपों। सफाई पर विशेष ध्यान दें। इनके मकानों की साफ़ि बढ़ें, घर रहने और कुपों के बंदने के घर सफा-सफा बनवायें, घर वैशालि रंग से बने हुए हों, मकानों में बिजुलियों और रोशनदान वर्षाव्य संस्था हों। जगान की दर बहुत सफ़िक है, जगान कहाँ तक सम्भव हो गवर्नमेंट को कम कर देना चाहिये। वर्तमान कानून भी कुछ ऐसे दोषपूर्ण हैं जिनमें काफ़ी संशोधनों की आवश्यकता है। सरकारी फ़ाकिसरों को चाहिये कि यह अपनी रीज-दाय बाकी नीति को दिवदुख देखें। गोंद बाजों के प्रेमपूर्ण बातचीत करें, जिससे उनका भय दूर हो जाय।

अंग्रेजी भाषिकों से लेती की कड़ी हाथि पहुँचती है। अंग्रेजी भाषिकों का प्रथम सरकारी तौर पर होना चाहिये।

गोंदों में कक्षा-कीशक के रंगे और प्रदक्षिणियों होनी चाहिये, जिनमें प्रतियोगिताएं होनी चाहिये। प्रतियोगिता में जीतने वालों को पुरस्कार भी मिलने चाहिये। इस प्रकार रक्त के पथ पर चलकर गोंद कादर्श गोंद बन सकते हैं। कम, राष्ट्र-निर्माहकारी नेताओं को चाहिये कि यह अपनी सारी शक्ति को काम-सुधार में लगा दें। हमारा कीमत्य है कि जनता को





संमेली दूधमा की लक्ष्य मजदूर हो गयी। मारदा गुरु-कपूर ने  
 गये और चरमी प्राण रचनम्भार को दे करे। विदेशियों की इस  
 और आचार-विचार ने भारतीय हिन्दू मुसलमानों की और-विश्व को जो  
 दोनों आदिमों को हो शत्रुता और दोनों आदिमों ने मित्रता मन्.  
 में सधुक्त दयान किया। इस संदुक्त दयान को ही हम दयान-राज-  
 के नाम से पुकारते हैं।

द्विज समाज की परमा आचारे सामने रखी जा रही है, उनका सं-  
 वा परिचय देना उचित जान पड़ता है। भारत में संमेली  
 वंशे पर्याप्त महारहें में गढ़ चुके थे, उनका उन्मादना साधारण बात  
 था। विपरीत का अन्तिम भारसाह बरादुरसाह बरादुरों और कर्षि  
 धिरा दूधमा अपने जीवन की अन्तिम परिधों गिर रहा था, हिन्दू का  
 दुर्दैव रसो की भीति साधारण को पैर उठों की लक्ष्य बनी दुर्दैव थी। का  
 के बाजिदुधमाशाह को हिन्दू-ममा को अन्तिमों ने घेर रक्ता था। ग  
 मकान की सीढ़ियों पर चढ़ने के लिए भी सुन्दर सुनारों के कंधों  
 आभय तक रहा था। पत्रों की रचनम्भार की भी पर पर्याप्त सन्ना  
 पानी कासकर बुझाया जा चुका था। मारदों का हिन्दू-साधारण-रक्ता  
 का रचन संमेली दूधमत ने हिन्दू-मिन्न कर दिया था।

भारत का एक एक देश क्रमशः विदेशी शक्तियों के हाथ में प  
 जा रहा था। लोगो में शक्ति का हिन्दू मजदूर नहीं था। देश में नेता ने  
 बुद्धि था, प्रतिभा था किन्तु मजदूर बनना अपना दावखी और अपना-अप  
 गम अन्तर्गत को चुन था। मजदूरों का यह दाव था कि परावर व  
 हमारे का किरा का। लक्ष्य न था। द्विज पर नये लक्ष्यों को चतुर भी  
 जनता में और भी अन्तिमों का भारा क बर रही थी।

उधर उन्मादना का एक पुत्र निरक्षर भीति ने भारतीयों के इतर  
 पक्ष परमा पटुवाया। इस भीति ने मजदूर होकर हिन्दू ने ही मजदूर  
 अधिकार चुन कर दिये गये। मन् १८८८ ई. में मितारा संमेली रा  
 में मित्रा किया गया। लक्ष्योवाहें का राज्य बलहीतो में एक भीति



इन्कार करते, मस्ती करने पर पकड़ने निद्रोह का बीड़ा डुबाने  
रफ़पाव होगा। धीरे-धीरे खंभेओं को भारत से बाहर जाने का  
हवा पकड़ गया। स्वतन्त्रता की भावना जो पिछाईयों द्वारा  
हुई थी, वही हिन्दू सुपक्षिम जनता में फैली। सबने समझ  
लिया कि खंभेओं को देश से बाहर भिजे बिना हमारी राष्ट्रीयता  
पनप सकती।

भारतीय-हृदयों में जो अग्नि सीतर ही सीतर भुजग रही थी,  
एकएक १ मई सन् १८९२ ई० की मेरठ छावनी में चक्क उठी।  
हसकी चिन्तागिरियों प्रसन्न: वह उड़ कर भारत के कोने कोने में पहुँच  
जाय प्रत्यक्षित करने लगी। सर्वत्र निर्गियों के निरुद्ध-पक्षी  
बनकर उड़ कर आ गया। दिल्ली के मुसलमान बड़े-से ही खंभे  
लुप्त बैठे थे। ११ मई को वहाँ ही मेरठ के आभिकारी मिठाई उ  
के झिन्ने पाये, सहसा दिग्भ्रम में हवाकावट की धूम मच गई।  
बहादुरशाह की अवसा मन्त्राट घोषित कर दिया गया और उसी के  
पर दिल्ली में सर्वत्र अग्निहोत्र और हवाकावट का तावड़-तुल  
मिचल होने लगा। जहाँ जो कोई खंभेज अवसा खंभेज का अवसा  
हमेशे तुरन्त पकड़ार के पाठ पढ़ाया गया। निद्रोह की यह विकाराज ही  
ममर। मध्य भाग में फैल गई। इनमें से कानपुर का हवाकावट भी  
चल रहा। कानपुर पर नाना साहब का आधिपत्य था। इस मी  
पागल, बनारस, लखनऊ आदि स्थानों पर यह अवसागी अग्नि हवा  
लगी और समस्त देश में भारत में यज्ञ की भावना का अस्तित्व  
गया। महान् सर्वोत्तम मानव छाने छूटे राज्या के अन्तर्निहित, अन्त  
अस्तित्व का एक नये को जिनना है।

भारत में सारा जिनना यह जन्मिना रहा है। इन विप्लव हुई शक्ति  
न कभी मिटकर सपना जन्म का जिनना नहीं किया। यही कारण है  
भारत में अनेक आक्रमण हुए और अनेक केवल विप्लव एक  
सामना किया और वह पराजित हो गई। दूसरा शक्ति को कानो पर



प्रागल्भ्यन कहें, हम तो हमें एक जीवित जाति की राय दोगे ।  
 वह राष्ट्र का मनुष्य प्रभाव था, उसमें राष्ट्र की संयुक्त भावना थी और  
 परवन्त्रता के खयाल को दूर से हटाने का प्रथम प्रयास था ।

## मित्र के कर्तव्य

विचार-तालिशायें:—

(१) इस्तेमाल—सामाजिक जीवन में मित्र का स्थान ।

(२) मित्र के कर्तव्य—

मित्र की प्रापचिकान्त में रहना । मित्र को सम्मान  
 देना । मित्र को संकट में साम्यता और सहायता देना । मित्र  
 दिन-दिनान ।

(३) कर्तव्य सुश्रुति की मित्रता ।

(४) मित्रता कैसे मनुष्यों में होती है ?

(५) मित्र का चुनाव ।

(६) मैत्री और स्पर्ध-साधन ।

(७) उपसंहार—हमें कैसा मित्र बनाना चाहिये ?

मनुष्य के समाज में मिलने वाले हैं, उनमें मित्रता का नाम ।  
 सहज का है । मित्रता में मानवी जीवन की शक्तियों और मनुष्यता  
 विकसित होता है । मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह चाहता है कि  
 मित्र-कुल कर रहे । मनुष्य क्या पशु-पक्षी भी मिलकर रहने को  
 करते हैं । मनुष्य जान यह है कि मित्रता का मान में एक प्रकार की म  
 का जाता है, जीवन मानव प्रभाव बढ़ा जाता । मित्र-गोष्ठी में  
 खड़ा मनुष्य बन जाता है । इसी कारण विद्वानों ने मित्रता की शक्ति  
 से समाज का नाम । मानव नृत्तमानव का न मित्रता के सहज को  
 सुलभता ■ बलान दिया है —

“ज न मित्र दुःख राष्ट्र दुःखार्थ । निरिद्धि विनोक्त प्राणक म  
 मित्र दुःख मित्र मम रक्त के जाना । मित्र के दुःख निरि मेह समाज



सत्ये मित्र की व्याख्या करते हुए मनु'हर्षि ने एक स्थान :  
 कथञ्चापि हे कि—'मित्र वह है जो मित्र को पार से बचाता है, मित्र  
 की घोषणा करता है, वह शत्रुओं को विधाता है और मित्र के  
 वकाशिल करता है, वह विपत्ति में मित्र का साथ नहीं छोड़ता। शास्त्र  
 में ऐसे गुणों से विभूषित मित्र तो साधारण कुंभर का घरदार ही है।  
 शास्त्र में औरत, धर्म और भारी चाहे सबे ही साथ जोड़ जायें' किन्तु वह  
 मित्र साथ नहीं छोड़ सकता।

मित्र का धर्म है कि वह दुःख के समय हमें साहाय्य दें, हमारे दुःख  
 मूल को छपना ही दुःख मूल समझे, हमारे गुण से उसे मुक्त हो, उसे  
 दुःख से उसे दुःख हो, सब हम साध्य लो रहे हों तब वह हमें 'साहाय्य'  
 और और सर्वत्र हम साहाय्य कराना रहे, हमें कभी हताश न होने दे,  
 हमारी कर्म-बुद्धि को उत्तेजित करे, हमारी सामर्थ्य के साधनों के  
 बढ़ावना बर्तुंवाये, जीवन-संसार में कभी वह पीछे न रहे और न हमें लगे  
 रहने दे, हमारी कर्म-विधि के साधनों को वरिष्ठ करे, हमें ऐसे कार्यों में हमारे  
 विषयों को और पराजित में मूल शामिल मित्रे।

सब मित्रों की कथानियों में संसार का इतिहास भरा पड़ा है। एक  
 और मुरादा की मैत्री का कारण बहुत बड़ा है। मुख्य मुरादा है  
 मित्रता की मन्त्र में सब एक हीगात्र मन्त्रावली हो रहा है, वह  
 किशोरीनाथ की कृष्णचन्द्र चामुन्दर और कदा दाने-दाने को शत्रु  
 काया हीन मुरादा ? साधारण वातावरण का समर्थ है, वास्तु में  
 कल्पना स्वयंसेवक मुरादा का दान दत्ता दत्ता स्वयंसेवक ही होते  
 हैं। उनका दान कल्पना में यह वह ही जाता है। ३ अरवि दान है  
 'मन्त्र-दत्ता' की वही यह मन्त्र। मन्त्र ३३ मन्त्रों के रूप में कल्प  
 करता है ३ मुरादा कथनों का एक ही दान ही और मन्त्र ही  
 का करण है—

—हेन विद्वान् मुरादा ॥ ... कल्पक वरिष्ठ मन्त्र मन्त्र हीन।

कदा मन्त्रा 'दुःख मन्त्र' मन्त्र 'दुःख मन्त्र' मन्त्र 'दुःख मन्त्र' मन्त्र





काल में सरा सावित न हो तब तक उसमें कोई दुष्ट मित्र बने है । सचा मित्र वही है जो दुःख में हमारा साथ दे और सुख में आनन्द को दूना करदे । अहो स्वार्थ है वही मित्रता नहीं है पालु । और निःस्वार्थ मित्र की परीक्षा करना कठिन है । नवयुवकों को इस का विशेष ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि नवयुवक तनिक मोड़ी चक्कर में पड़े और हमका जीवन पतन की ओर गया ।

कहा भी तो है "सुर, मुनि, नर सबकी यह रीति, स्वार्थ का सब प्रीति ।" यह कथन अचरितः सत्य है, अतः हमें मित्र के निर्णयपूर्ण सचेत रहना चाहिये । अन्धेक परिचित नान्द मित्र नहीं हो स

आजकल तो स्वार्थी मित्रों का प्राधान्य है, जो सुख के समय आनन्द देने हैं और दुःख के समय हमें छोड़कर अलग हो जाते हैं तब हमारे पास वैसा है तब तक जो मित्र साथ ही साथ रहते हैं, जो पाम नहीं रहता तब मित्र भी-दो-न्यारह हो जाते हैं ।

अन्त में कहना बड़ी है कि मन्थे मित्र वही है, जो हमें सहायता दें और साम्प्रदाय बंधायें । कबीर ने कैसा सुन्दर कहा है—

'कहि रह्योम सम्पति सते, जबत बहुत बहु रीति ।

विपति कसौरी जे कसे, सोई सोई मोत ॥'

## महात्मा बुद्ध

विचार-तालिका:—

- (१) प्रस्तावना:—बुद्ध जी के जन्म से पहले की स्थिति ।
- (२) जन्म-काल (२६८ ई० पू०) ।
- (३) माता-पिता और आश्रम प्राप्ति ।
- (४) माना की मृ०पु, मोक्षी द्वारा प्राप्ति ।
- (५) जीवन पर बाइरी वस्तुओं का प्रभाव ।
- (६) वैवाहिक सम्बन्ध और साधुता का जन्म ।



काज में लरा साबित न हो तब तक उसमें कोई शुभ मित्र बने है  
 है । तथा मित्र बही है जो दुःख में हमारा साथ दे और सुख में त  
 आनन्द को दूना करे । उही स्वार्थ है बही मित्रता नहीं है परन्तु त  
 और निःस्वार्थ मित्र की परीक्षा करना कठिन है । नवयुवको जो ए  
 का निरोध प्यास रमना चाहिए, क्योंकि नवयुवक तनिक भी क्षि  
 बन्धन में पड़े और पुनका जीवन वसन की ओर गया ।

कहा भी तो है "सुर, सुनि, मर सबकी मह रीति, स्वार्थ का  
 सब रीति ।" यह कथन अक्षरशः सत्य है, अतः हमें मित्र के निर्माण  
 स्वार्थ से बचना चाहिए । अन्येक परिचित व्यक्ति मित्र नहीं हो सक  
 आनन्द तो स्वार्थी मित्रों का प्राधान्य है, जो सुख के समय ।

आनन्द होने है और दुःख के समय हमें छोड़कर अलग हो जाने है ।  
 तब हमारे पास वैसा है तब तक जो मित्र साथ ही साथ रहने है, उ  
 पास नहीं रहना तब मित्र भी-बो-ग्यारह हो जाते हैं ।

अतः में कहना बही है कि अपने मित्र बही है, जो हमें संकट-क  
 महात्मना दे और आनन्दता बंवाये । कबीर ने वैसा सुन्दर कहा है,—

'कहि रहौम लागति भयो, बसत बहून बहू रीति ।

गिनति कसौरी के कम, मोई भाँवे मीत ॥'

## महात्मा बुद्ध

विचार-मार्गदर्शक —

(१) महात्मा — बुद्ध जो कि भारत में पदचि की विधि ।

२. महात्मा — बौद्ध धर्म का प्रचार ।

३. महात्मा — जो कि भारत में भारत में भारत में

४. महात्मा — जो कि भारत में भारत में भारत में

५. महात्मा — जो कि भारत में भारत में भारत में

६. महात्मा — जो कि भारत में भारत में भारत में



के भी नहीं होने पाये थे कि इनकी माता का देहान्त हो गया। आपका भरण-पोषण आपकी निमाता माया ने किया। माया के गर्भ एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसका नाम देवदत्त था।

सिद्धार्थ बड़ा सुन्दर था, उसका शरीर-मण्डन बड़ा उत्तम था, बड़ी प्रशंसा थी। सिद्धार्थ ने अपने शैशव-काल में 'होवहा विराह होन चीन्हे पाउ' वाली जोड़ोकि चरितार्थ का था। आपकी बड़ी सावधानी-ईर्ष्य हुई। बड़े-बड़े सम्प्रदाय और विद्वान् आचार्य शिष्या के त्रिदे निपुण हुए। आपने अष्टाङ्ग में अगाध ज्ञान, जिनसे देस आचार्य योग चक्रित होने थे।

कुम्हक उनका भूष, सत्ता और मित्र था, जो चीन्हीमें बसे हैं की भाँति सिद्धार्थ के साथ रहता था। वह सिद्धार्थ का मनोरंजन करने साथ जाता, उसकी विचार-धारा में अपने परामर्श देता। कुमार ने कुम्हक के साथ कविचवरदु बगर की मेर और बगर से व का भी निरीक्षण किया। सिद्धार्थ ने उस भ्रमण में एक रोगी, एक एक घुनक और एक सरवण चरुण न्यायी को देखा। सिद्धार्थ का इस सांसारिक दुःखों की देवका समझित हो गया और महसूस उनके। मैं विचार उठे कि संसार दुःखों का कन्द है। इन दुःखों से कबोका हल मिल सकता है ?

सिद्धार्थ का मन और चिन्तन में निरन्तर द्वार खोला। उन्हें यह भावने लगा कि संसार का राग, मोह और दुःख है, इनसे किस मनुष्य मुक्त हो सकता है ? सिद्धार्थ का इस विचार-धारा ने। सदावन का विनिर्जन कर दिया। व सावन लग, कहीं सिद्धार्थ भ्रमण में हो गया। यत निता व एक परम सुन्दरी विदुषा कम्पा बरणा। उनका विवाह कर दिया। विवाह हो जाने पर कुछ काल के। सिद्धार्थ के मन का उतावलापन साम्प्रदाय और एक पुत्र या उत्तर को गुरु के नाम से नामक हुआ। सिद्धार्थ व पुत्र का समाह दूसरी बड़ा समझा। यह उनके दरब में एक रत्न निरखत था।



निकल सकेंगा। अपनी बीधा के तारों को अधिक मत कम, घरे! अपने भी स्वर में निकलेगा और वह दूर जायेंगे।” हम गीत ने विद्वान को घोर उपरचर्या से रोका और उन्होंने सोचा कि घोर उपरचर्या से वास्तविक शान्ति नहीं मिलेगी और न शरीर को कष्ट देने से चात्मा सबल होती है। उन्होंने तब करना छोड़ दिया। उनके साथी भी एक-एक करके भी दो-ब्यारह हो गये और कहने लगे कि विद्वान को साधना शुरू हो गया है।

एक दिन गौतम ने नदी में स्नान किया, स्नान करने के परचाए पर पुनः पुनः वृक्ष के नीचे चिन्तन में निमग्न हो गये। सहसा उन्हें सामने लगा कि उन्हें साव के दर्शन हो गये हैं। जीवन-मरण का समस्या ही हो गई और साधारण लोगों को उन्हें भीषण मिल गई। घर के प्रभु हो गये। यहीं से अब आपका नाम गौतम बुद्ध हो गया। आपको जो सत्य प्रकाश हुआ था, उसको वह निरस्य करने चले पड़े।

अब गौतम ‘बुद्ध’ हो गये और संसार को दुःखों से छुड़ाने की निकल पड़े। अब उन्होंने उस पीपल के वृक्ष को छोड़ दिया, जिसके नीचे उन्हें सत्य का प्रकाश हुआ था। उन्होंने पहले उन पाँचों शिष्यों की सोच की जो इन्हें उप-भ्रष्ट समझ कर छोड़ गये थे। बुद्ध जी ने सर्व-प्रथम उनके सामने साय-मकार को रखता और वे इनके अनन्य नक्त हो गये। बुद्ध जी ने बताया कि दुःख तीन हैं—जन्म दुःखमय है, उदय दुःखमय है, रोग दुःखमय है, मृत्यु दुःखमय है, जिसे हमारा हृदय नहीं चाहता। हमें समर्पित होना ही दुःख है, अनृप्य साकारा दुःख का कारण है, त्रिष वस्तु के विभाग में दुःख है।

बुद्ध जी का सिद्धान्त था कि मनुष्य का वासनाय जन्म-मरण कष्ट में घुमाये किता है। मनुष्य का विविध अनिच्छावाय और वासनाय उसे भव-बन्धन में बाँधता है। उसको उचित नित्य मुख का इच्छा मरुत पाण्डव बनाये रखता है। वह जगत में इन्द्रिय सुखापमान का किय जितना जाकावित रहता है, इतना किता अन्य वस्तु के किय नहीं रहता, हमका

















मुधारक थे। सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। भारतका चरित्र और उज्ज्वल था। भारत को एक राष्ट्र बनाने वाले भी भारत की मूर्ती नर्मो में एक का संसार करने वाले भी आप ही थे। भारत के हृदय सञ्चाट थे। आपके जन्म से भारत का गौरव रहेगा, जब तक संसार में सूर्य और चन्द्रमा वर्तमान हैं। किन्तु कि १० जनवरी १९४८ को नाथूराम गोडसे ने भारतकी हत्या कर दी भारत को आपकी आत्मा नहीं आवरणकला थी।

## भारतीय इतिहास का प्रसिद्ध पुरुष ( छत्रपति शिवाजी )

विचार-तालिका :—

- (१) शिवाजी का जन्म के समय भारत की परिस्थिति ।
- (२) जन्म और माता पिता ।
- (३) शिवाजी की शिक्षा-दीक्षा ।
- (४) प्रारम्भिक जीवन ।

संततन और आसपास के चारों । बीजापुर के मुगल से देह-बाध और अकर्मकर्मों की मृत्यु । मुगलों से पैतृक शाहसताली का भागना । आगे में कभी होना और अगुआई में निकल आना ।

- (५) राज-स्थापन और प्रबन्ध ।
- (६) व्यक्तित्व ।
- (७) शिवाजी शासक के रूप में ।
- (८) आचरण ।

- (९) मृत्यु ।
- (१०) उप हार—शिवाजी का महान्वय ।

मुगलों का साम्राज्य था किन्तु क सूर्य के समान प्रसरत हो रहा था। इस्लामी धर्म और उसके अत्याचारों के विरुद्ध कोई जावन नहीं खोज सकता था। मुसलमानों के अत्याचारों की आवाज नहीं रही थी। सारी हिन्दू जाति निर्मला में डूबी हुई थी। वार्षिक भावनाओं के बशीर





गांधीजी मुन-मुन कर शिवाजी परम उत्प्रेम्ण हो गये और  
अग्रज साहब ने मर गया। दादा कोंकण शिवाजी का अधिक  
विकास न कर सके। पर हाँ, उन्होंने शिवाजी की व्यावहारिक शिक्षा  
पूरा पारगत बना दिया। आलेख करना, अस्त्र-उत्तर बखाना,  
आदि-आदि करना मर कोंकण ने हमें पिला दिया। शिवाजी  
में निपुण हो गये। शिवाजी के बगने शीर्ष और दुर्गिबानुष के  
मरहटा जाति को अपनी तरह आकर्षित कर दिया और शिवाजी  
शीर्ष और मारस निम्न बढ़ता ही गया। उसने मरहटों में संतान  
एक फैल दी।

शिवाजी के इरादों में शूरवीरों के आदर्श थे। वे प्रथम पराजयी होने  
बनने के अभिजाती थे। समर्थ रामदास के राष्ट्रीय उपदेशों का प्रथम  
शिवाजी के इरादों पर पड़ा। एक तो शिवाजी स्वयं मराठाओं की, एक  
गुरु रामदास के उपदेशों का प्रभाव। शिवाजी कार्य-क्षेत्र में दूर से  
स्वतन्त्रता की हमें शिवाजी के इरादों में उर्ध्व मारने वाली। शिवाजी के  
स्वतन्त्र भारता के साथ ही साथ समस्त मरहटा जाति में स्वतन्त्रता की  
मारवा गूँज उठी। शिवाजी की संगठित सेना ने ऊपर-ऊपर हमें आत्म  
आत्म कर दिया। उन्होंने पुण्ड्र, सोन, जूँदर आदि जिलों पर अधिकार  
बना दिया। बीजापुर का नवाब शिवाजी को हस्त बढ़ती को न सह सका  
और मर ही मर कुत्ते जगता और बाधा कि शिवाजी को बढ़ावा दिया  
बाध, किन्तु वह इस कार्य में सफल न हो सका।

अब बीजापुर का नवाब शिवाजी को न बढ़ सका तो उसने साहूजी  
को बैर कर दिया। शिवाजी ने साहूजी को लिखा। साहूजी के आदेश  
में आनन्दित होकर बीजापुर के नवाब ने साहूजी को बोध भी दिया, किन्तु  
इसे शांति न मिली। शिवाजी उनकी आज्ञा में चुभने लगा। उसने  
अपने सेनापति अजयराव को एक बड़ा सेना देकर शिवाजी को बहाना  
मेला कि यदि शिवाजी मुझको बिना हथियार के आके तो मैं उसके  
साथ अपनाथ बना कर दूँगा। शिवाजी ने उसके प्रस्ताव को और











































आता है। इधर-उधर घूमने की सभ्यता अभिलाषा बनी रहती है।  
 की शिक्षाया रहती है कि वह अधिक-से-अधिक ज्ञान संविदा को  
 एक स्थान पर रहने की इच्छा में वह कभी सम्मन नहीं हो सकता।  
 कारण इस बातों में देशात्म-विषय के साथ पाने है। संसार के  
 देश देशात्म-विषय के कारण उद्यम हुए हैं।

पुराने समय में देशात्म करना बड़ा कठिन कार्य था। मार्ग  
 दुर्गम थे। मार्ग बन्द और सुरेखों से भरे थे। मार्ग में बने बने गा  
 नदियों को पार करना बड़ा कठिन था, क्योंकि उम्र युग में उनके  
 का जमाना था। मोदी-मोदी हर की यात्रा में बड़ा समय लगता था।  
 लोग बैरक, लोहे अथवा बैरकाली पर बाधा करने थे। मार्ग में लोहे  
 आगिनियों का सामना करना पड़ता था, किन्तु सामक्य विज्ञान के जमाने  
 के कारण देशात्म करने में बड़ी सुगमता होगई है। आज रेल, वायु  
 वायुमल, मोटर कारों के द्वारा मनुष्य कहीं से कहीं जा सकता है।  
 वैज्ञानिक साधनों के संसार को एक छोटा सा घर बना दिया है जो  
 देशों के विषयों की दृष्टि से हो गये हैं। अब यात्रा करना सामान्य  
 हो गई है। जगह में अब कोई मजबूती नहीं रहा है। अब का  
 कोविड कायाव हो गया है।

देशात्म ज्ञानधन का सबसे बड़ा साधन है, इसी कारण  
 मनुष्य को देशात्म ज्ञान देना पड़ता है। देशात्म का मुख्य उद्देश्य  
 ही ज्ञान का प्रसार है किन्तु इसमें प्रत्यक्ष देशने का  
 महत्त्व है।

देशात्म ज्ञानधन का सबसे बड़ा साधन है, इसी कारण  
 मनुष्य को देशात्म ज्ञान देना पड़ता है। देशात्म का मुख्य उद्देश्य  
 ही ज्ञान का प्रसार है किन्तु इसमें प्रत्यक्ष देशने का  
 महत्त्व है।









की भौगोलिक परिस्थिति के विपरीत है । वर्तमान शिक्षा कियों को भी आधुनिक, विज्ञानी और अक्षरमय बना रही है । अक्षरमयता के अति फैलाने का भूत अक्षरियों पर भी सवार हो गया है । शिक्षा के अति भयंकर हो रहा है, किन्तु भारतीय जनता अभी इसे उधेका भी नहीं दे रही है । स्वामी स्वामी की भावना, जो भारत में गार्गी, उषा, दुष्यन्त करने की थी, वह आज वेदों और अक्षरों की संस्कृति के रंगी दृष्टिगोचर हो रही है । आज हमारी आधुनिकता, ऐत-पुष्टि और औद्योगिक-प्रादुर्भाव से भरी पड़ी है । स्वाभाविक सौन्दर्य के स्थान पर कृत्रिम सौन्दर्य स्थापन पकड़ता जाता है, भगवान् कुरुक्षेत्र हो करे !

सहस्रिका का भूत भारतीय जनता के मिर पर सवार करता जा रहा है । हम सहस्रिका के विरोध में तो नहीं हैं, किन्तु हम इसे अवस्था तक अक्षरों और अक्षरियों की शिक्षा साथ-साथ ही इससे अधिक अवस्था भीगने पर अक्षरों और अक्षरियों के पुष्प-पुष्प रहस्य होने चाहिए ऐसा प्रयत्न करने से राष्ट्र को अधिक स्वयं न करना पड़ेगा । किन्तु इस आधुनिक और आधुनिकता का साथ-साथ पढ़ना आवश्यक है । गरीबों के बिना नहीं रह सकता । हाँ, धर्म और धार्मिकों पर कड़ा नियंत्रण तो से कोई मुख्यमन्त्री निकल आये, किन्तु वह अभी सम्भव नहीं की धार्मिक शिक्षा का अभी अभाव है । राष्ट्रीय गवर्नमेंट के बिना गवर्नमेंट कोई राष्ट्रीयधर्म नियम नहीं बना सकती ।

भारतीय शिक्षा में परिधम-प्रियता का गुण होता है, किन्तु वर्तमान शिक्षा के कारण महिला-समाज का यह गुण भी मिटता जा रहा है । परिधम प्रियता के स्थान पर आधुनिक और विज्ञान पर फैलाता जा रहा है । हमारा शिक्षित आधुनिकता के काम-काजों में घबराती है और धर्म की दृष्टि से इतनी है । व्यवहारिक जीवन को यह कल्याणों के स्थान करने में अपना गौरव समझती है । हम इसी के देखते हैं कि हमारी शिक्षा लाभ के स्थान पर हानि ही कर रहा है ।



सुखमें विशुद्ध भारतीयता नहीं है। विशुद्ध भारतीय शिक्षा के लिए  
में संग्रह करना सम्भव नहीं।

## सफाई

विचार-तालिफा:—

- (1) स्वभावता—स्वच्छता आत्म-सुख की द्वितीय सोता है।  
प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ में सफाई है। वस्तु-वही भी स्व-  
समर्थ करने हैं। कुत्ता खपपी पंखु बरकार कर बैठा है।  
मानव-जीवन में स्वच्छता की वही आवश्यकता है।

सफाई के दो प्रधान भेद—बाह्य सफाई जिसका उत्पत्ति शरीर,  
निवास-स्थान, जलवायु और भोजन की स्वच्छता से है। आन्तरिक  
से मानव मन और हृदय की सफाई से है।

मानव-जीवन का हारमोन्स इसकी आन्तरिक स्वच्छता पर  
अनुपम प्रभाव ही आन्तरिक सुख में बतलता है, वृत्ता ही स्व-  
सुख प्रतिक है। संसार सभी व्यक्ति की पूजा करना है जिसका वास्तव  
सुख हीना है। मनु आचरण वाले व्यक्ति समाज में चार और प्र-  
की दृष्टि से देखे जाते हैं। समाज इसके चारों का अनुकरण करती है।  
समाज का प्रत्येक सदस्य सदाचारि व्यक्ति कहिये मन रहता है। चाहे  
सदाचारि सभी आन्तरिक सुख के कारण ही आवश्यक के हारमोन्स  
कर हुए हैं।

बाह्य सफाई का भी अभाव मानव जीवन पर प्रतिक प्रभाव है।  
बाह्य सफाई समाज के अभाव को दूर करती है। यह अनुपम की प्र-  
कृति पर प्रभाव का प्रभाव होता है। यह प्रभाव प्रकृति की  
प्रकृति पर प्रभाव का प्रभाव होता है। यह प्रभाव प्रकृति की  
प्रकृति पर प्रभाव का प्रभाव होता है। यह प्रभाव प्रकृति की

सफाई का भी अभाव पर प्रभाव अभाव प्रभाव है।



जिसमे उनकी समीपता बढ़े । ऐसी व्यवस्था होने पर ही सम्झनी दूर हो सकती है सम्भव नहीं ।

## जीवन में अहिंसा का महत्व

विचार-मालिका:—

(१) प्रस्तावना—अहिंसा की व्याख्या ।

(२) अहिंसा से काम—अहिंसा मनुष्य-जीवन को उन्नत करने वाली है, मनुष्य-समाज का दिन-मापन करती है, मानव-जीवन की सुख शान्ति देती है, अहिंसा ही शान्ति का सचनी है, नहीं । अहिंसा और सत्यवाद-संसार ।

(३) अहिंसावादी महापुरुषों की जीवन-गाथाएँ ।

(४) उपसंहार—अहिंसा का महत्व ।

संसार में सर्वत्र हिंसा का साम्राज्य है । एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का शत्रु हो रहा है । साम्राज्य-सोलुख जातिवादी सम्प्रदाय स्वयं करके जातियों और राष्ट्रों को मिटा रही हैं । स्वार्थ-परायण राष्ट्र स्वार्थ-पुष्टि को मिटाने के लिये अनेक राष्ट्रों का एक शोषण करते । यूरोप के रोमांचकारी छत्र किसके छत्र को नहीं दिखाते ? स्वार्थ-परायण जातियाँ स्वतन्त्रता के नाम पर कैसा तर-संसार कर रही हैं ? महाजन लोग अलग-अलग कमरों की ग्लास खींच रहे हैं । भू-भोवलि महापुरुषों का लून जूमने में मस्त है । सत्तावादी प्रचलन अक्षय की वायना की वृत्ति के लिए महलों प्राणियों को मार-मार रहा है । जिस देमिये उधर हिंसा हो का एकमात्र साम्राज्य रहित हो रहा है । निम्न नये जियेने और घातक यन्त्रों का आविष्कार हो रहा है । बड़ी बड़ी जहाजों जैसे बनाई जा रही है । बड़ बड़ बमबर्षक गोले तैयार हो रहें हैं, बड़ी-बड़ी निकाराज लाप लवान हो रही हैं जो सैकड़ों मील पर जाकर अपना काम करे । इस निकाराज हिंसा का अथवा प्रचलन अहिंसा को जान करना अहिंसा का ईसा उद्घाटन है ।









(४) समय की वाचस्पदी करना ही उसका मनुष्ययोग है ।

(५) समय के मनुष्ययोग से लाभ :—

गौरव प्राप्त होगा है, विपत्त को शान्ति मिले।  
आत्मिक उत्थान होगा है और थोके में बस और  
होता है ।

(६) मनोहरता और समय ।

(७) परमेश्वर—दमारा कर्मण्य ।

आज के जो आस कर, आज के जो आस ।

वच में वरमै होगी, चहुँदि करेगा कब त "बरीर"

जो देश और समाज समय का आदर करते हैं, वही देश  
समाज उन्नति के सिन्धु पर विश्रामे है । जो राष्ट्र समय को अपने  
और आत्म-प्रभार में स्वीकार करते हैं, वह संसार में अपने  
मिठा कर है । वही शान्ति संसार में अपना गौरव वार्त्ता का बही  
मिलने समय के मूल्य को समझा है । परिचामी देशों में समय के  
को समझा है । इन लोगों के पास काम है, किन्तु समय नहीं है।  
लाभ समय है, मगर काम नहीं । हमारा समय गमना होने का  
आत्म-प्रभार में स्वीकार होता है । चहुँदि करता है कि हमारा समय  
क्या आ रहा है । इन शारीरिक कार्यों में स्वभावतः गुना है, किन्तु सभी  
आधी राष्ट्र शारीरिक कार्यों का करने में अपना गौरव समझते हैं ।

उन्नति जिस शान्ति समय का लाभ करती है और अपने  
काम करने में लगे नहीं जाती । समय का मनुष्योपयोग करने वाली  
मनुष्यत्व समय को मूल्य देता है । समय जिसका आधार है  
मनुष्यत्व । समय को मूल्य देने का मूल्य है ।

समय के जो मूल्य है । समय का मनुष्योपयोग करने का  
काम देता है और समय के मूल्य का मनुष्यत्व का मूल्य है ।  
समय का मूल्य है । समय का मूल्य है । समय का मूल्य है ।  
समय का मूल्य है । समय का मूल्य है । समय का मूल्य है ।



काम वह तुम्हें आखिरी बनाकर हम लेगा। आखिर हमारे शक्ति  
मानसिक और आत्मिक पतन का मूल कारण है। समय के संपूर्ण  
आखिर ही सबसे बड़ी बाधा है।

ओ काम तुम्हें करने दें, उन्हें निर्धारित समय पर ही समाप्त कर  
हमारे राज-दुख या बहाने-बाजो आखिरी नहीं। किसी काम को कम या  
न रखो। बरतों या हफ्तों में मायः काम बिगड़ जाते हैं। अतः  
निश्चित कार्य को निश्चित समय पर ही समाप्त का हो और कोई  
परिणाम में करने को न लाओ। बातचीत करना आसानी-वसोई का  
है, किन्तु हम बात का ध्यान रखना चाहिये कि गपराव में बहुत-सा  
विनाश समय का दुर्घटन करवा ही है।

मित्रों-तुलने वाले लोग मायः आते-जाते रहते हैं। मित्रों के  
बाजों में बात-चीत में बड़ा समय व्यतीत होता है। अतः हमें चाहिये कि  
हम मित्रों-तुलने वालों का समय निश्चित कर दें। यदि हम ऐसा न करें  
तो हमें काम करने को समय ही न मिलेगा। ऐसी दशा में मनोदुःख  
समय ही नहीं है। सबसे व्यवहार निष्कारक नहीं। ओ कुछ करना है  
हमें मर्याद बंद हो, कहन-बाजी में मत रकनी। बातचीत में मने तुम्हें हम  
कोषी। बातचीत में निम्नानु में बरहेम करो। पीठ पीछे किसी  
आलोचना करना उनसे नहीं है। आलोचना ही करनी है तो निश्चित  
करा। महापुरुषों के आचरण पर काम, जिसमें आत्मा और बन्दा दोनों  
काम है। कालकाल सर्वत्र आत्मा की अभिव्यक्ति देखकर ही करनी चाहिये  
आत्मार्थिक बाला में अपने का समय बचाव होना है।

अतः काम करने में समय बचाने का सबसे बड़ा उपाय यह है कि हमें अपने  
काम में मर्याद बंद हो, कहन-बाजी में मत रकनी। बातचीत में मने तुम्हें हम  
कोषी। बातचीत में निम्नानु में बरहेम करो। पीठ पीछे किसी  
आलोचना करना उनसे नहीं है। आलोचना ही करनी है तो निश्चित  
करा। महापुरुषों के आचरण पर काम, जिसमें आत्मा और बन्दा दोनों  
काम है। कालकाल सर्वत्र आत्मा की अभिव्यक्ति देखकर ही करनी चाहिये  
आत्मार्थिक बाला में अपने का समय बचाव होना है।



## होली

विचार-तालिका :—

- (१) परमात्मता—त्वोद्धारों का महत्त्व ।
- (२) वसन्त ऋतु के त्वोद्धार और होली ।
- (३) होली क्यों मनाते हैं ?

वसन्तागमन के इर्ष में, ऋतु-परिवर्तन के कारण  
मनीष चमत् द्वारा सन्नि-पूजा के कारण ।

- (४) होली के सम्बन्ध में प्रचलित कृत-कथाएँ, प्रह्लार का  
कथा और कृत्यावतार में जाग और दाम का स्थान ।
- (५) होली के सम्बन्धित विविध वर्णन :—
- (६) होली पूजा, परस्पर मँड और कुड़ विधीय वर्णन ।
- (७) होली उल्लास के साम-दान ।
- (८) होली उल्लास मनाने में आवश्यक सुधार ।

प्रत्येक समाज में त्वोद्धारों का विधान है । प्रत्येक  
कामे मित्रों के अनुसार त्वोद्धारों को मनाता है । त्वोद्धार उन्नी  
नीच को प्रकट करते हैं । त्वोद्धार समाज में सन्नि, संगमन, होली  
सन्नीपना गन्धन करते हैं । समाज में कुछ त्वोद्धारों ऐतिहासिक हैं  
जिनमें परम्परागत इतिहास का सम्बन्ध होता है । कुछ त्वोद्धार समाज  
के उल्लास-विषय की बात में मनाते जाते हैं, कुछ त्वोद्धार ऋतु-पूजा  
और मनीष चमत् के जागमन की लुत्ती में सम्बन्ध होते हैं । समाज  
का त्वोद्धार निम्नलिखित प्रकार के त्वोद्धारों की विराम में से है । त्वोद्धार  
वसन्त ऋतु के त्वोद्धारों में सर्वाधिक स्थान रखता है । यह ऋतु  
पूर्विका के दिन सम्बन्ध होता है ।

इस दिन का नाम वसन्त ऋतु के त्वोद्धार है । इस त्वोद्धार  
वर्षों के जाग नाम के त्वोद्धारों विशेष वर्णों की वाग्वरी मदी है ।  
ये (समस्त) की जाग नाम त्वोद्धारों में मकर होती है, इसी कारण  
त्वोद्धार अतिविक्रम कहलाता है ।

















के लिए यह बड़े महत्व की वस्तु है। हमारे देश में शिक्षा के निम्ने माध्यमों का प्रयोग किया जा रहा है। इतिहास, भूगोल और विज्ञान शिक्षा जैसे विनेमा द्वारा की जा सकती है, जैसे किमी अन्य माध्यम नहीं हो जा सकती। भूगोल के अनेक प्राकृतिक दृश्य, माने और का दृश्य जैसे सिनेमा में देखने आता है, जैसे इसे दृश्य को जाकर देखने में भी नहीं आता। ऐतिहासिक घटनाएँ निरूपण का भाँति दृश्यरूप में कराई जा सकती हैं। विविध स्थानों की रचना-संरचना की परिस्थिति का ज्ञान विनेमाओं द्वारा भी अच्छी प्रकार होता है। जहाँ विनेमाओं की अपेक्षा दृश्य में भूगोल का ज्ञान कराने में जहाँ असमर्थ रहते हैं।

सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सुधार भी सिनेमा की इस प्रकार से करते हैं। कुछ फिल्म चरित्रों द्वारा का कार्य करते हैं, कुछ कुछ विवाहों के निषेधात्मक लेख लेखने हैं। कुछ रानी-जाति के अंधाधुनिक का ही दिग्दर्शन कराते हैं। इसी प्रकार के लेख समाज प्रशिक्षण कार्यों के प्रति प्रयास उत्पन्न करने हैं।

विज्ञान और सुधार के लिये भी विनेमाओं का उपयोग बड़ा उपयोग है। व्यापक ज्ञान विनेमा के चित्र-पट्टों पर अपनी वस्तुओं का विशाल है, ताकि उनका वर्णन का बिक्री करे। प्रचार-कार्य में सिनेमा से एक काई माध्यम नहीं है। शिक्षा द्वारा उन वस्तुओं के प्रशिक्षण चित्र दिखाते जायें, जिससे हम समाज से दूर करना चाहते हैं। दूरक लोग दृष्टि का ज्ञान प्रयास करें और उनका व्यवहार करना छोड़ देंगे।

विनेमा जहाँ उपयोगी वस्तु है, वहाँ इससे हानि भी बहुत कम है। जब से विनेमा का प्रचार हुआ है, तब से देशों के लोगों की नीति कम हो चली है। जो लोग विनेमा देखने के आस्थापी हैं, वे लगभग अपनी नीति न बैठे हैं। विनेमा के चरित्रों और अपने चित्र मानवी जीवन पर बुरा प्रभाव डालते हैं। आधुनिक फिल्म कंपनियों ने ऐसे अहविषय लेखों का फिल्म तैयार करवा है। कुदासना-पूर्ण लेख



## अछूतोद्धार

### विचार-मालिका:—

- (१) प्रस्तावना—अछूतोद्धार की आवश्यकता ।
- (२) हिन्दू-समाज में अछूत कौन है ?
- (३) अछूतों के प्रति उच्च जातियों के आचारादर ।
- (४) अछूतों के आचारादर का दुष्परिणाम ।
- (५) अछूतोद्धार के साधन :—

अछूतों के प्रति महात्म्यमूर्ति और समानता का ज्ञान  
 दिया जाय, उनकी गरीबी दूर की जाय, उन्हें प्रशिक्षण  
 दिया जाय, हमसे दूरात की जाय, सम्मिलन-प्रवेश और निर्यात  
 आदि की सुविधा रिवाज काय ।

- (६) अछूतोद्धार और महात्मा गांधी ।
- (७) उपसंहार—हरिजन सेवा-संघ और युवक कार्य ।  
 हरिजन भी चाहो भजन, तो हरि भजन करु ।  
 मन द्वारा ही भजन है, साधन मिलन करु ।

यह समय का आनन्दपूर्ण है सर्वत्र शांति भी । सब लोग प्रेम-  
 से बने हुए हैं । बल और शक्ति में अन्तर प्रेम का । दूरात और  
 मान देने के लक्ष्य की नहीं है । आनन्दपूर्ण में सब से निराली शक्ति  
 मानिज्य दूरात और निराली अन्तर्निधि का अन्तर्निधि दूरात सब से  
 हमारी अन्तर्निधि अन्तर्निधि ही है ।

महात्मा अन्तर्निधि के अन्तर्निधि के अन्तर्निधि अन्तर्निधि की शक्ति  
 अन्तर्निधि की शक्ति के अन्तर्निधि, अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि  
 है वह सब अन्तर्निधि है । अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि  
 है अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि  
 अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि  
 अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि अन्तर्निधि













भारतीय हरिजन-सेवा-संघ की स्थापना की है, जिसका कर्तव्य है कि हरिजनों के रहन-सहन को ठीक बनाये। उनको इस प्रकार की शिक्षा दी जाये कि उनमें जोर उठ करे जाने वाली हिन्दू जनता में कुछ भी भेद न रहे। महारमा जी ने १९३४ ई० में हरिजन-ग्रामोन्नयन की स्थापना देने के लिए सारे देश में दौरा लगाया। महारमा जी को इस कार्य में आशाशील सफलता मिली।

हरिजन ग्रामोन्नयन बड़ी शक्ति से चल रहा है। सचिव में लाल ग्रामोन्नयन से काफी आशाओं की जा रही है। हरिजन-ग्रामोन्नयन बड़े चरित्रवत्ता निराश तथा हरिजनों को समानता का पद दिखाने का कार्य प्रदान कर रहा है। हरिजनों में भी विकास की भावनाएँ जागृत हो रही हैं। ग्रामों में सफाई आने लगी है। ग्रामों में संगठन के भाव जागृत हो गये हैं। ग्राम जातिवादी अपने दायित्व को समझने लगे हैं।

पं० मदनमोहन मालवीय और पं० सावरकर भी ग्रामोन्नयन के कार्य में बड़ी उपरता दिखा गये हैं। चतुर् आशा है कि हिन्दू जनता में सुभाषण के भाव सर्वत्र जागृत हो जायेंगे। जब सुभाषण की भावना समूह बन जायेगी, तब ही भारत के माय का सूर्य उदय होगा। हमारी राष्ट्र-कामना ऐसी ही है।

## स्वावलम्बन

### विचार-तालिका:—

- (१) परतापना—स्वावलम्बन की आवश्यकता।
- (२) स्वावलम्बन की आवश्यकता।
- (३) स्वावलम्बन से लाभ—समाज में सुख, शान्ति और आनन्द वृद्धि होती है। धर्म-सुधार आता है और कोर्त मित्रता।
- (४) स्वावलम्बन और समाज-कामना।
- (५) परतापना व्यक्ति में समाज का अहित होता है।



भाग्य-मरीचे पर अपना जीवन व्यतीत करना है, वह कुछ भी कर सकता, प्राणुम रूप 'अथा' पणित होता है। स्वार्थकर्मों के में ऐसा जीवन काम है जिसे वह नहीं कर सकता। संसार में अर्थ है जो स्वार्थकर्मों को प्राप्त नहीं हो सकता।

स्वार्थकर्मों व्यक्ति मदैव सुखी रहता है, उसे रोटी और समरवा नहीं सताती। जो अपने पैरों पर खड़ा होगा, अपने परिश्रम काके आदमा, वह मरना क्यों भूला-भंगा रहेगा। दुर्गो रहता है। जो अपने हाथ-पैर नहीं दिखाना और दूसरों का आश्रय है। स्वार्थकर्मों मदैव प्रसन्न रहता है और सकलकर्मों को भी नहीं रहती है।

स्वार्थकर्मों अनुपम दिवाचारी और आत्म-नियन्त्रक होता है। अपने जीवन को परिश्रमकर्मों अधिन में समझ कर सोना करता है। आत्म दमन करता है। स्वार्थ से प्रत्येक कार्य को आरम्भ करता है। की मरहना तक पूर्वोद्देशक कामका हमतार करता है। अथवाप्य दुर्गो के द्वारा वह अपने आत्मा को विकसित करता है।

स्वार्थकर्मों अनुपम मिताचारी होने के कारण सादगी को प्रयत्न करता है। वह बड़ा मिताचारी होता है। प्रत्येक कार्य को करता और काम करता के साथ करता है। आकाश हमसे को आगता है। कोश की राख स्वार्थकर्मों के घर नहीं गल पाती। बाल्य में वह दिवाचन की भाँति कटका रहता है। आशानाशन मृत्यु की भाँति अचक रहता है। स्वार्थकर्म, शांति और आत्म आनन्द-वस्तु प्रदान करता है। दुर्ग को प्रयत्नता दुर्गो भाँति-वारी से दुर्ग आनन्द प्राप्त करता है। आत्म और मर्त्य मृत्यु मर्त्य की भाँति वह रहता है। स्वार्थकर्मों आत्म मर्त्य मर्त्य की भाँति रहता है। स्वार्थकर्मों आत्म मर्त्य मर्त्य की भाँति रहता है।

स्वार्थकर्मों आत्म मर्त्य मर्त्य की भाँति रहता है। स्वार्थकर्मों आत्म मर्त्य मर्त्य की भाँति रहता है। स्वार्थकर्मों आत्म मर्त्य मर्त्य की भाँति रहता है।





समावेश करें । अपने कला-कीर्तन और लघु-कथनों को अपने अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को स्वयं निर्माण करें ।



## आलस्य

### विचार-तालिका—

(१) प्रस्तावना—आलस्य की व्याख्या । (२) आलस्य से —जीवन-शक्ति का हानि, पराधीनता का उद्भव, दूसरों का दास्य-पतन और स्वास्थ्य हानि । (३) स्वावलम्बन का महत्व । (४) हमें आलसी न होना चाहिये ।

आलस्य एक प्रकार का रोग है, जो मनुष्य को हमें हमें दुर्गति की भांति मष्ट करता रहता है । समाज में अज्ञान, अविद्या अथवा केवल आलस्य के ही कारण पैदा करते हैं । आलस्य अथवा को दृष्टिगत करता है । शारीरिक शक्ति को नष्ट कर मूर्च्छित निकम्मा बनाता है । विद्याभिलाष, अकर्मक्षमता और पराधीनता आलस्य के स्वरूप मान्य हैं । किसी कवि ने आलस्य के सम्बन्ध में कहा ही दुर्गति कहा है—

आलस्य पैरी जयन तन, सब सुख को हर लेत ।

ज्यों ही लघु-कथनों से, मिले परम दुःख होत ॥

आलसी आदमी आत्मवाद की भाव में अपना जीवन नष्ट करता है । इसका जीवन व्यर्थ के बाद-विचार और तपस्या में व्यती होता है । आलस्य के साथ ही साथ रोग, विनाश और दुरिच्छता भी घर में पदार्पण करने है और हमको चाचा हुआ देखकर मूर्च्छित पराधीनता स्वयं आकर अपना अधिकार जमा लेती है । जब आलस्य पर अपना पूरा अधिकार जमा करता है, तब उसकी हृष्टता शक्ति को नष्ट करता है तत्परन्तु उसके श्रोत्र और भाव को नष्ट कर देता है । अजीबता और बर्बन्दा उसकी बड़ प्रेम से आलस्य करती है । दुरिच्छता आलस्य को अपना प्यारा मन्त्र बनाती है । दुर्धर्म और



में भी दिखकिराते हैं। प्यारे बच्चों ! आओ और आनन्द जीवन-चेत में उठाओ और मरचे कर्मवीर बनो। स्वातंत्र्य का आनन्द को आभय न दो। यदि तुमने आनन्द पर विजय प्राप्त कर घब कोड़े शक्ति देवी नहीं, जो तुम्हारे अभ्युत्थान में काम करे। उठो और सिंह गर्जना करते हुए भारत को आनन्द दिया है। हवी आनन्द ने उसकी पराधीनता को अपहरण किया है। अगली हवा मोह-निद्रा को त्यागो और देश को सच्चा कर्मवीर बनाओ।

## घन का सदुपयोग

विचार तालिका —

(१) प्रस्तावना — घन का महत्व। (२) घन का सदुपयोग — उपर और नीचेका, विचार की रचना और शिक्षा, राष्ट्रीयता का व्यव, घन के जीवन पर घन-मन्त्र। (३) घन का आविष्कार। (४) घन के सदुपयोग में काम। (५) उपसंहार — समाप्त करने का।

समाज के समस्त गुण घन से प्राप्त होते हैं। मान, प्रियता, सब सदुपयोग घन से प्राप्त करता है, सभी को शिक्षाओं के आर गुणों का आविष्कार घन है। समाज घन की रचना के महत्व करना है, सदुपयोग सदुपयोग की दुम के बीच की शिक्षा में घन सदुपयोग इसके द्वारा पर काम करने का बड़े महत्व है। इसके समस्त आकाशवाणी कार्य घन ही से सम्पन्न होते हैं। घन के रचना द्वारा ही उन ही से सम्पन्न होता है। घन के बड़े घन समाज का कार्य बड़े घन से सम्पन्न होता जाता है।

समाज के समस्त गुण घन से प्राप्त करता है, सभी को शिक्षाओं के आर गुणों का आविष्कार घन है। समाज घन की रचना के महत्व करना है, सदुपयोग सदुपयोग की दुम के बीच की शिक्षा में घन सदुपयोग इसके द्वारा पर काम करने का बड़े महत्व है। इसके समस्त आकाशवाणी कार्य घन ही से सम्पन्न होते हैं। घन के रचना द्वारा ही उन ही से सम्पन्न होता है। घन के बड़े घन समाज का कार्य बड़े घन से सम्पन्न होता जाता है।



कुछ भाग आवश्यक दान करे। दान वही उत्तम है जो वाक्य हुआ रहे। दान पाकर वाक्य में वह शक्ति या भाव, जिसमें मंगिने की आवश्यकता ही न पड़े। इसी कारण विद्या-दान को कहा गया है, क्योंकि हमसे वाक्य का सर्वदा मूल भाग हो उस शतः विद्या-संस्थाओं को दान देना धन का सदुपयोग करना है।

मानव-जीवन में केवल रोटी कपड़े ही से काम नहीं जीवन को मजुर और सरस बनाने के लिये आवश्यक है कि प्रमोद के लिये भी कुछ धन व्यय किया जाय अर्थात् अपने मजुरता जाने के लिये आवश्यक है कि वह मनोरंजन और भी कुछ व्यय करे। इसी प्रकार आकस्मिक घटनाओं के स्वरुप के लिये व्यय करना भी धन का सदुपयोग है। ऐसे सब समय धन व्यय करने में आगा-पीड़ा न करना चाहिये। सड़कों, पीड़ाओं और रोगों के लिये अपनी आमदनी में स बचाव ही बुद्धिमानी है।

देश के उद्योग-धर्मों और कला-कौशल को पुष्पति देने अपनी सम्पत्ति को खगाना धन का सदुपयोग करना है। इन का उपयोग देश की आर्थिक दशा के सुधारने में सहायता करता है। का सचा उपयोग वही है, जो देश की उत्पादन शक्ति को बढ़ा दे।

लोकोपकारी कार्यों में धन व्यय करना अथवा लोक-हितकारी को दान करना धन का सदुपयोग नहीं, बरन् अपने हित करना भी धन का सदुपयोग है। अथवा दवाखाने, मकान में रहने, को अच्छी शिक्षा देना, अच्छा मांजन करना और अच्छे वस्त्र धन धन धन की को आनन्द नहीं देना बरन् देने के लिये के आनन्द का संचार करना है। धन उपर व्यय करना समाज के सदस्य पर व्यय करना है, किन्तु सदस्य वह भवान रहना चाहिये कि धन विज्ञानिना धन व्यय नहीं हो रहा है। विज्ञानिना धन व्यय हुआ धन हमारे उपर विष मुख्य प्रभाव डालता है परन्तु हमारी



प्रचार और सुधार-योजना । (४) स्थलिक धारणाओं का ।

(५) आक्रमण काल में रेडियो का उपयोग । (६) रेडियो का ।

(७) उपसंहार—रेडियो द्वारा प्राम-सुधार ।

जब मनुष्य शारीरिक और मानसिक परिधम से एक जाता है, तब स्वभावतः उसके हृदय में अभिजाता उठती है कि वह अपनी शक्तों और मानसिक बलान्वित किसी प्रकार दूर करे । इस बलान्वित हृदय के लिये वह मनोरंजन के साधनों को ढूँढता है । कोई संगीत-यंत्र लेकर संगीत का आनन्द लेता है, कोई सिनेमा-हाथ में लेकर चलचित्र देखता है, कोई प्रकृति की मन-सावनी चला कर प्रकृति को मिला होता है, कोई रेडियो के डिमारे की सुरम्य भुवन मोदिनी होना मिलता आनन्दानुभव करता है, कोई बल्लभ-घरों में जाकर घने अंधेरे और लैन्डों द्वारा अपनी मनोरंजन करता है, कुछ पुरवराजाओं में ही बलान्वित दूर करते हैं और कुछ रेडियो द्वारा अपनी स्वाभाविक शक्तों दूर करते हैं ।

मनोरंजन के साधनों में रेडियो का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है । इसके द्वारा बिना तार की सहायता से किसी दूर की व्यक्ति सुनी जा सकती है । रेडियो का उपयोग मनोरंजन, व्यापार और संगीत सुनने के लिये किया जाता है । किसी बड़े नगर में रेडियो स्टेशन होता है अर्थात् से समाचार, व्याख्यान और संगीत ब्राडकास्ट (बिडकास्ट) किये जाते हैं ।

सन् १९२१ में मारकोनी नामक इटली के एक वैज्ञानिक ने रेडियो का आविष्कार किया । समार में सबसे प्रथम ३ नवम्बर में मारकोनी (मन्देश मेन्ने का) स्टेशन स्थापित हुआ, जब से अब तक निरन्तर इस आविष्कार में ही रही है ।

ब्राडकास्ट स्टेशनो पर समार के समाचार स्थापना और उपस्थित रहते हैं । प्रत्येक काय के लिए पहल से ही प्रोद्योग बना जाता है, जिसकी सूचना पंद्रह दिन पहले ही मंत्र-साधारण को दे





कच्चा-कीमत्त की बातें सुनाई जा सकती है, जिससे सर्व-सामान्य काम उठा सकते हैं।

प्रचार कार्य में तो रेडियो के समानांतर काम चलाया जा सके। स्वयं से भाव सुनसना से रेडियो भी प्रचार को उत्पन्न बना सकते। जनता में इसका प्रचार कर सकते हैं।

ग्राम सुधार का कार्य जैसा तुलम रेडियो द्वारा हो सकता है किन्नी दूसरे माध्यम द्वारा नहीं हो सकता। रेडियो द्वारा गाँव व्यापार, हस्त और वस्तु-प्राप्त सम्बन्धी अनेक बातें बताई जा सकती हैं। जब भारतवर्ष में भी इसका प्रचार हो रहा है और हमने काम उठा रही है।

रेडियो द्वारा प्रेसिडेंटों की बीमारियों के सम्बन्ध में गाँव बहुत कुछ समझाया जा सकता है। उनके सीधे-साधे मुत्से उन्ने जा सकते हैं। लेटी के बीड़ों के निवारण के उपाय भी बहुत से बताये जा सकते हैं। साथ देखने में आता है कि गाँव बाड़े अनेक रोगों के शिकार हो जाते हैं। हमें स्वस्थता परिचय कराकर अनेक रोगों से बचाया जा सकता है। सकामक बचने के विषे उन्हें अनेक चेतावनी और सावधानी दी जा सकती है। मामूली औषधि उपचार भी बताया जा सकता है।

रेडियो द्वारा जनता का सम्मान्य धारणाओं का निर्मूलक हो है। जनता में अनेक कुरीतियों का उन्ना केना रा जाता है। और गवर्नमेंट में पचाप्त कटुता फैल जाता है, किन्तु रेडियो द्वारा निवारण बड़ा आसाना हो सकता है और उसका धारणा भी मिटाया जा सकता है।

सरकारी दूसरे अधिकारों के विचार इन से रेडियो बड़ा काम करते हैं। जब गवर्नमेंट जनता का कोई बुरा अधवा रिवाज नहीं है तो बचारे व उद-धन्य गाँव गाँव हम सुचना से रह जाते हैं। धनी, शिक्षित और आधिकारी लोग ही हम निर्दोश



सम में हम यही कहेंगे कि देशियों का अधिक बड़ा हज़ार ।  
आत्मार्थ जैसे सिद्ध देस को उठाने के लिये हमका उपयोग भा-  
व्यरवक है ।

## आज्ञा-पालन

विचार-शालिका :—

(१) प्रस्तावना—आज्ञा-पालन की व्याख्या । (२) वहाँ की जा-  
पान । (३) आज्ञा-पालन में उचित अनुचित का विचार (४) वहाँ  
पालन के लाभ—सुख-शान्ति और वृद्धि होती है, विचारों पर निय-  
रहना है, भेष और महानुभूति करती है, निश्चित जीवन बना  
मानविक शक्तियों का विकास होता है । (५) आज्ञा-पालन के उपाय  
(६) आज्ञा-पालन का मोक्ष । (७) उपसंहार—आज्ञा-पालन  
हमारा सम्बन्ध ।

अनुभव-जीवन में आज्ञा-पालन का गुण भी बड़ा महत्व होता  
है। जिस व्यक्ति और समाजों में व्यवस्थाओं के पालन करने की बला  
होने लगे। वह व्यक्ति और समाज बड़े हैं। प्रत्येक अनुभव की शक्ति  
होती है कि जो कुछ मैं कहूँ उसका बल, उन समाज माने और  
अनुसरण करे। यदि हम मायात्मक एक कथन के अनुसार कार्य  
करना है तो हम अनुभव के आनन्द का विकास नहीं करना । यदि  
हमका कार्य करना का बाध करना है तो हमका निरमरुह करना  
बाध है न ही । यदि हम ही अनुसरण है कि आज्ञा मो कहने को  
नहीं अनुभव का अनुभव का अनुभव का अनुभव का अनुभव का अनुभव  
है न ही, न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही  
न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही  
न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही न ही



विचारों पर पूरा नियन्त्रण होता है। आज्ञा-पात्रन समाज में प्रेम सहानुभूति उत्पन्न करता है। संगठन-शक्ति को बढ़ाता है। जातियों अलग-अलग और एकजुट कर दी जाती हैं। जो परिवार अपने की आज्ञा की अवहेलना करता है, जो सेवा अपने सेवापति को का उपेक्षा करता है, जिस समाज की कोई व्यवस्था नहीं है, या नहीं तो कम अवस्था ही मष्ट हो सकती है। जिस समाज के बहुत हैं और 'हमों खुनी दीगरे नेम' के सिद्धान्त वाले होते हैं, या प्रायः मष्ट हो जाती हैं।

सम्यक् राष्ट्र एक ही नेता के आदेश पर चलने में अपना हाथ समझते हैं। अपनी व्यवस्था को ठीक रखते हैं। सब अनुशासन के नियमों को पात्रते हैं, वह राष्ट्र समझाती होने हैं और हमें का संसार जाना है। व्यवस्थित परिवार जो अपने स्वामी की आज्ञा का अवहेलना करते हैं, प्रायः बड़ी परिवार सुखी देखने में आते हैं। आज्ञा-पात्रन में और दुराग्रह कभी न जाना जायेंगे। वह और दुराग्रह ऐसे अवस्था में जो अनुप्य को उठने ही नहीं देते। हमें चाहिये कि हम समाज की आज्ञा और नियमों का पात्रन कर अपने को आज्ञा-पात्रन करने का इच्छा बनायें। और दुराग्रह प्रायः अंगुली जातियों ही में अधिक देखने में मिलता है, सम्यक् जातियों में वह अवस्था प्रवेश ही नहीं कर पाता। आज्ञा-पात्रन के गुण से मानव जीवन में निम्न गुण विकसित हो सकते हैं। प्रायः अनुभव करने से जाना है कि अनुप्य में उत्तम गुणों का विकास तब ही हुआ है, जब वह आज्ञा-पात्रन के गुण में व्यवस्थित रहता है। आज्ञा पात्रक सिपाही हो अनुर सेवा-नायक बनने देखा गया है। आज्ञा पात्रक चर्या कक्षा और पत्रिका की समानता केवल आज्ञा पात्र करने के कारण ही कर सका था।

आज्ञा पात्रन वाशिगटन ही सिपाही ने राष्ट्रपति हो सका था। तक बड़े मानवी हृदयों में मनुष्यों के विकास के लिये आज्ञा-पात्रन



और निर्णायक । (३) कुटुम्ब के लेख की  
 देशियों की सुरक्षा, स्व-रोपण, मनोरंजन, सजकता और  
 पराजयता, भौतिक वृद्धि और प्रेम और महाभूमि की कर्मिणी  
 (४) कुटुम्ब की अन्य क्षेत्रों से गुजरना । (५) उन्मत्त—लेख का

कुटुम्ब का लेख हमारे देश में चमकी संरक्षित के  
 साया है । अन्य चमकी क्षेत्रों को अपने वह क्षेत्र गुजरना, सजा के  
 अधिक उपयोगी है । हम क्षेत्र में न तो अधिक चमकी ही है और न  
 अधिक सामान गुजरने की आवश्यकता । मैदानी क्षेत्रों में वह क्षेत्र हमें  
 अधिक मनोरंजन और स्वास्थवर्द्धक है ।

वह क्षेत्र समस्त औरत भूमि में खेता जाता है । इसके बिना  
 गज खम्बी और १० गज चौड़ी भूमि की आवश्यकता पड़ती है ।

लेख की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है । मैदान के सामने हमें  
 ही-ही पोख गाड़ दिखे जाने हैं, यही स्थान गोख के खूबक बिन्दु होते हैं ।  
 इसके अनिरिक्त हम क्षेत्र में किसी सामान की आवश्यकता नहीं पड़ी  
 बस, एक गैर सब स्लेटर के होने चाहिये और स्लेटर में हवा जाने  
 एक पत्र । बस, हमने अधिक सामान इस क्षेत्र में नहीं गुलावा पड़ा  
 देती क्षेत्रों को भी न वह क्षेत्र सबसे सस्ता क्षेत्र है ।

क्षेत्र के मध्य में एक मध्य रेखा "Centre" रेखा होती है, जिसे  
 मैदान ही भागों में विभाजित हो जाता है । इसके अनिरिक्त ही रेखा  
 और मीचने हैं, जिन्हें हमें गोख लाइन "Goal Line" और  
 टच रेखा "Touch-Line" कहते हैं । ये समस्त लाइनें सफेद रंग  
 चिन्हित करनी ज़रूरी है ।

इस क्षेत्र में डाकी क्षेत्र का भी निर्धारण-व्यवस्था शिक्षाक्षियों  
 ही टोनिवा अन्तर्निहित होता है । ये शिक्षाक्षी ५ भागों में बंट जाते  
 हैं जो मध्य भाग "पी. डी.", बाएँ का "हाल बैंक", इसके पीछे "उ  
 बैंक" और मोन एयर कदमने हैं । जाने बाएँ शिक्षाक्षियों की सम्पत्ति  
 होती है इनका कदम है कि वह "बाएँ" को विरोधी शिक्षाक्षियों

हमें बता दें। बीच-बाड़े मोर मिठाईयों का स्वाद बड़ा स्वादपूर्ण  
गहै। वे मोर की भी स्वाद करते हैं और चागे बाहर बागानियों के  
वे हमरी टोली पर आक्रमण भी करते हैं। वे आक्रमण "बाह"   
:से करने चागे भी मोर बताते रहते हैं। पीछे मोरने बाड़े होते हैं।  
। मोर की चागे मोरने बाड़ों के चागे बता देते हैं और अपनी मोर के  
हमें विशेषी पार्टी द्वारा मेरी मोर की रोहरे की चेन्ना करते हैं।  
'बेकीर' बाड़ा लिखाही होता चाहिये।

: मोर के आत्म में दोरी पार्टियां "Toss" मिश्रण द्वारा वह मिश्रण  
ती है कि पहले मोर की लेकर बीच पार्टी चागे बंदगी। जिस टोली की  
भी चागी है, वह बाह को नजर रेखा पर स्वयं है और आता द्वारा  
हो चागे बताती है। यह मोर हो जाता है, एक छि बाह की हमी  
गले पर बाधा जाता है। माधुसूदनदा यह मोर १२ मिटर में कंठा जाता  
। बीच में १० मिटर का बाहल्य भी दिया जाता है।

: मोर की कोई मिठाई हीन में नहीं होता। यदि किसी बाग में  
मिठाई मोर की हाथ में लुके तो मोर फिर नजर रेखा में विशेषी दृष्ट  
की पार्टी को चोर बताता है इसे "Toss" या और कहते हैं।  
तो प्रकाश यदि किसी प्रकाश टोली के लिखाही हमरी टोली के लिखाही को  
बादे, पहले का बाधा पहुँचाने की चेन्ना द्वारा मेरी टोली (Toss)  
गना जाता है।

: मोर के अपने को बाधने दरी माधुसूदनदा में हो जाती है। मोर की  
मिश्रणमय दृष्ट में प्रकाश के लिए एक बाधक चुना जाता है, जो मोर  
की बहुत दूर पर स्थित है और जो दृष्ट बाधक मिश्रण में हो जाता,  
मेरी टोली बहुत है। प्रकाश के लिए दृष्ट बाधक चुना जाता है।  
। मोर के अपने को बाधने प्रकाश के प्रकाश में बाधक के द्वारा दृष्ट  
विशेषी बाधकमें हो जाता है जो मोर वह प्रकाश के बाधक में प्रकाश  
(Toss) के मोर होकर बाधे है प्रकाश बाधक का बाधक के  
प्रकाश होकर वह बाधक बाधे।



घर निर्धारक : (३) कुटुम्ब के क्षेत्र की उपयोगिता—मौस-  
वेष्टियों की सुरक्षा, रण-सोपान, मनोरंजन, मनोरंजन और कर्म-  
परायणता, भौतिक बहुराष्ट्र और प्रेम और महानुभूति की अभिवृद्धि ।  
(४) कुटुम्ब की अन्य क्षेत्रों से गुजरना । (५) उत्सर्जन—क्षेत्र का महत्व ।

कुटुम्ब का क्षेत्र हमारे देश में कर्मों की संरक्षित के साथ साथ  
आया है । अन्य क्षेत्रों को अपेक्षा यह क्षेत्र मुख्य, सत्या और  
अधिक उपयोगी है । इस क्षेत्र में न तो अधिक दमक ही है और न  
अधिक सामान्य गुणों की आवश्यकता । मैदानों के क्षेत्रों में यह क्षेत्र सबसे  
अधिक मनोरंजक और स्वाभाविक है ।

यह क्षेत्र समान और भूमि में फैला जाता है । इसके त्रिभुज १००  
गज लम्बी और ६० गज चौड़ी भूमि की आवश्यकता पड़ती है ।

क्षेत्र की व्यवस्था हम प्रकार की जाती है । मैदान के आसने सामने  
दो-दो पौधे गाढ़ दिये जाते हैं, यही स्थान गोत्र के लूणक चिह्न होते हैं ।  
इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में किसी सामान की आवश्यकता नहीं आती ।  
बस, एक गेहूँ मर स्टैंडर के होनी चाहिए और स्टैंडर में हवा करने की  
एक पद । अब, हमने अधिक सामान इस क्षेत्र में नहीं लुप्तवा पड़ता ।  
देखी क्षेत्रों की भी यह क्षेत्र सबसे सत्या क्षेत्र है ।

क्षेत्र के मध्य में एक अन्य रेखा "Centre" रेखा होती है, जिससे  
मैदान दो भागों में विभाजित हो जाता है । इसके अतिरिक्त दो रेखाएँ  
और खींचते हैं, जिन्हें कण्टः गोत्र-लाइन "Goal Line" और  
दूसरी रेखा "Touch-Line" कहते हैं । ये समस्त आसने सट्टेदू पदों से  
चिह्नित करदी जाती है ।

इस क्षेत्र में हाकी क्षेत्र की भाँति ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ियों की  
दो टोखियाँ व्यवस्थित होती हैं । ये खिलाड़ी ५ भागों में बंट जाते हैं ।  
आगे खेदने वाले "घोड़क", बीच के "हाल बैक", इसके पीछे "कुट-  
बैक" और गोत्र एक कड़वाते हैं । आगे वाले खिलाड़ियों की संख्या २  
है । इनका कर्तव्य है कि वह "हाल" को विराधी खिलाड़ियों के

गोख में बड़ा है। बीच वाले तीन गिजाहियों का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण होता है। वे गोख की भी गढ़ा करते हैं और आगे बढ़कर अग्रगणियों के पीछे दूसरी टोखी पर आक्रमण भी करते हैं। वे साधारणतया "बाज" को खेजने वालों की ओर बढ़ाते रहते हैं। पीछे खेजने वाले होते हैं। यह गेंद को आगे खेजने वालों के आगे बढ़ा देते हैं और अपनी ओर के गोख में विरोधी पार्टी द्वारा भेजी गेंद को रोकने की चेष्टा करते हैं। 'गोख-धीर' अर्थात् गिजाही होना चाहिये।

खेज के आरम्भ में दोनों पार्टियाँ "Toss" सिस्टम द्वारा यह निर्णय करती हैं कि पहले गेंद को लेकर कौन पार्टी आगे बढ़ेगी। जिस टोखी की बारी आती है, वह बाज को मजबूत रखा पर रखती है और प्रहार द्वारा बाज को आगे बढ़ाती है। जब गोख हो जाता है, तब फिर बाज को इसी स्थान पर छोड़ा जाता है। साधारणतया यह खेज २५ मिनट में खेजा जाता है। बीच में १५ मिनट का आराम भी दिया जाता है।

गेंद को कोई गिजाही हाथ से नहीं छूता। यदि किसी कारण से गिजाही गेंद को हाथ से छू ले तो गेंद फिर मजबूत-रखा से बिस्फी दख दोनों पार्टियों को घोर बहाता है इसे "Foul" या दोंर कहते हैं। इसी प्रकार यदि किसी प्रकार टोखी के गिजाही दूसरी टोखी के गिजाही को धक्का दे, पकड़े या बाधा पहुँचावे तो ऐसी दशा में भी दोंर (Foul) माना जाता है।

गोख के नियमों की सारगर्ही बड़ी सादृश्यता से की जाती है। खेज की सुस्पष्टरहित दृष्ट से बहाने के बिना एक व्यक्ति चुना जाता है, जो खेज की बहुत स्थान से देखता है और कोई कान नियम-विपर्यय नहीं होने देता, उसे "रैफरी" कहते हैं। अनेक पार्टी का दृष्ट दृष्ट रैफरी होता है। रैफरी के निर्णय को अनेक विचार-मार्ग है। रैफरी को महादत्ता के विरुद्ध ही लाइनमें और होते हैं जो नियम पर दख है कि बाज मजबूत रखा (Toss)। बाज के अन्तर्गत एक गेंद है पकड़ गेंद। बाज के अन्तर्गत होकर गेंद पकड़ा गेंद।





बनारों कि हड्डी-बलजी सब पूर-पूर हो गई। मेरा प्यारा सखा विनोबा मुझसे हमेशा के लिये चुपक हो गया। जिसको विरह-अग्नि छात्र भी मेरे हृदय में मजबूत बेरवा जलज्वर कर रही है। कुछज हमनी ही रही कि महीन बाबो ने मेरे अस्तित्व की नहीं दिया। सौभाग्य से समय बचा अतृप्त था। मदा'मा गाँधी का आन्दोलन देख मैं सर्वत्र गूँज रहा था। विदेशों का बापकाट हो रहा था। विदेश को मात्र मेरने का भी बापकाट हो रहा था। अतः मुझे विदेश-यात्रा का कर्त्तव्य न लेना पड़ा। देश में हरदो-आन्दोलन ने जोर बढ़ा। हरदो के लिये लोग छात्रावैद्य हो रहे थे। हवी काय से नों मुझे अज्ञातपर और अन्ध, की हवा न लानी बनी। मैं जिस से मारादेव देवार्द्र के हावों निकलर सेवा-गाँव पहुँचा। मदा'मा जी के अल्लभ में बाँदो छोटा पुनर्दिवों से मेरा परिमार्जन हुआ। अब मैं दूब के समान उगज्ज होकर कमकने लगा। मदा'मा गाँधी के कोमल करों से मैं पुनर्दिवों की आहुति में परिवर्तित हो गया। मदा'मा जी का कोमल का-सल, बर्बा का मजूर संगीत मेरे हृदय में छात्र तक आनन्द उल्लस कर रहे हैं। ओह! मैं दम दमिक आनन्द को कभी न भूलूँगा।

अब मैं छात्रस के लड़ाई विमान में भेज दिया गया। वहाँ मेरे साथ बापी लग्ना और लोको का गई। मार-पीट भी हुई, भीषा-तानो हुई और मैं एक मान की आहुति में कर दिया गया। मैं कलोन द्वारा निकला, मुन्दर बना-दना एक था, कोमल की आचर्यक हो या नहीं। मैं तो मारा, मदा'मा जी कुचक था, किन्तु अन्धेरीयन मेरे में पूर-पूर कर मारा था। ऐसा दसा में भी पूर गाँगा जी की हवा से मुझे एक अमेरिकन मुद्रा कुमारा ने मारा। मैं चुकचिद और मेरे मुल-महज दर एक आनन्दमय मुन्बराट्ट था गई।

अब मेरा दूबज्ज बना दू बनूँ है। दम कुमारी ने मुझे दोम-कोक के दर्ज कलाव, ऐसे मेरा'मा'मा मे दमके हमने बापुओं के पोढ़ने में मदा'मा का। समझो न मुझ कुँ की आहुति में बह कर जाने



संसार का कौन-सा रहस्य है, जो मेरे द्वारा न सुंछाया जाता हो ? संसार का ऐसा कौनसा काम है, जो मेरे द्वारा सम्पन्न नहीं होता ? संसार में ऐसा पद और पदाधि कौनसी है, जो मेरे द्वारा प्राप्त न की जाती हो ?

मानव-मनोवृत्तियों पर मेरा पूरा अधिकार है । आत्म-सम्मान और आत्म-रक्षा के भाव मानव-द्वय में मैं ही भरता हूँ ।

बड़े-बड़े वज्र-सूत्रों को धर्मावतार और दयासागर की पदविषा में ही दिखाता हूँ । सर, माइत और रायबहादुर आदि की पदविषा में ही प्रसार के प्राप्त की जानी हैं । फिर साय बगलूये संसार में ऐसा कौन-सा गुण अवशिष्ट है, जो मेरे में निवास नहीं करता ?

आप मेरे द्वारा मेरी प्रशंसा सुनकर किञ्चित् आश्चर्य में हुए होंगे, किन्तु आश्चर्यविन होने की कोई बात नहीं है । आइये,-तनिक मैं आपको अपनी जीवन वृत्तात्म सुनाऊँ ।

मैं पश्चिमी जर्मनी की एक ग्लान से स्त्री-रूप में उत्पन्न हुआ । मेरी जन्म-परीक्षा की गई और मेरे साधियों को मुझसे पूछकर दिया गया । मेरी की बातनामों का कण्ट अनिर्वचनीय है । मैं भय से बानी-बानी हो गया और अपनी मृणु निकट आई जान पर पर काँपने लगा । किन्तु प्रत्येक आशक्ति के पदबाध शक्ति का वा आना स्वाभाविक है । कारीगरों ने मुझे जम्मे-जम्मे, बनजानों में हाँककर ध्वस्त कर दिया । अब मैं जड़ों की आशक्ति में बद्ध गया और मेरा नाम बोधी रख दिया गया ।

भारत-नवर्षमेंट ने एक जड़ों की लरीय किया और जम्हूँ रचनाक में सेत्र दिया । बड़ी टिह दुवाग मेरी जन्म-परीक्षा की गई, त्रिममें मुझे पुन-जन्म का गार मद्रवा पड़ा । मेरे मोल-मोल टुकड़े करकर मुझे एक जर्मनी के आइर दुवाया गया, त्रिममें एक तरह जड़े ओमें की मूर्ति का टप्पा था और दूसरी तरह में निर्माण की त्रिनि का टप्पा था । वम मेरी स्त्री-मज्ञा हूट गई और मैं मगवा । नाम न पुकारा जाने लगा । इस समय मेरी वमक-दमक और अपूर जने बरी ही चन्नी है ।

मेरी स्त्री-मज्ञा हूटने ॥ मुझ मेर-पगार की मूची । मैं अपने मरकों









योग तब तक सम्भव नहीं, जब तक कला-कौशल-सम्बन्धी कोई कानून पास न होजाये । विगत सन् १९३७ ई० में जब राष्ट्रीय सरकारों की भारत में स्थापना हुई थी, तब राष्ट्रीय सरकारों ने कला-कौशल को उन्नति देने के लिए पर्याप्त धन खर्च किया था किन्तु उनकी समस्त योजनाएँ केवल कर्मना की वस्तु रह गईं ।

भारत का भाग्योदय हो और भारतीय मनुष्यों में कला-कौशल और उद्योग पण्यों को रुचि पैदा हो, देश में राष्ट्रीय सरकार बनें, राष्ट्रीय सरकारें अपनी-अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कला-कौशल को उन्नति देने के लिए प्रशिक्षितों का आयोजन करें, तब ही देश का भला है ।



## भारतीय किसान

सूर्य अग्नि वर्षा रहा है । पृथ्वी तबे के समान जल रही है । चारों तरफ सन्तारा घाया हुआ है । पशु-पक्षी गर्मी के ताप से भाकुल हो दबड़े स्थानों में जा चुके हैं । घाया भी गर्मी की भीषणता को न सह सकी, वह सिमट कर धुल के नीचे हो गई । हम गर्मी की भीषणता में जल के समस्त प्राणी विधाम कर रहे हैं किन्तु अभागा किसान अब भी काम में जुटा हुआ है । गर्मी ने उसके शरीर को कुनसा कर कोयला बना दिया है, झोलें पैर गई हैं, मुँह झकान है, नो पैर और नो मिर है, बदन पर कपड़े का नाम नहीं, केवल जसर में एक लँगोटा मात्र है । सारा शरीर पसीने से भीगा रहा है किन्तु वह अपनी नपस्या को नहीं छोड़ता ।

मध्याह्न का समय है । श्वक बाका रोटियाँ लेकर स्तेत पर आ रही है । उसके बच्चे भी साथ-साथ जा रहे हैं । किसान अपने अनवरत परिश्रम में सज्जन है । मुँह चार पत्रे का आया है किन्तु अब १२ पत्रे भी विधाम लेने का नाम नहीं लेता । अपनी स्त्री को आया हुआ देखकर उसने हल धारा । रुखी रोटियाँ पाने लगा, वह नहीं जानता कि मसाल में कनेक प्रचार की चटनी और तरकारियाँ हानो है । बेचारी श्वक भार्या भी अपने



सम्राट के हिसान अपना पेरश्वर्य और विद्वानमय जीवन व्यतीत करते हैं, वहाँ भारत का किमान तन बँकने की वस्तु और घोट की कुशा निवारण करने के लिये समन तक नहीं पाया ।

हमारे किमान का जीवन इस कारण भी संकटमय रहता है कि उसका अधिक समय बेकारी में व्यतीत होता है। साल में कई महीने बड़ बेकार रहता है। यदि उसकी बेकारी के समय को खाने के बिदे कुछ उद्योग-धन्यों का प्रयत्न हो मात्र तो बहुत कुछ उसकी दशा सुधर सकती है। इन बड़े-छोटे उद्योग-धन्यों को पुनः जीवित कर देने में किमान पर्याप्त संख्या में घरने को आगे बढ़ा सकता है।

कठिनाई, कृप-समयकृपा और निरक्षरता हमारे किसान को पनपने नहीं देते । अशिक्षा हमकी सामयिक शक्तियों को विकसित नहीं होने देती । यह संसार की परिस्थितियों से निष्कपल अपरिचित होता है । कठिनाई, बरखाही, चौकीदार, मिठाही, धानेदार और सुखिया हमकी अक्षरज्ञता से काम बढाते हैं । हमें समझाना शुरू-समोदने हैं । हिमाच-कठिनाई न जानने के कारण महाजन लोग हमें लूट डकड़ बनाने हैं । महान्न हमें अहंता देना और हमसे लपना होता है ।

साध के गौरव दीर्घा के समुद्र है, जिससे बसीभूत होकर किमानों में बहार्-भगदे बहुत होते हैं । मुकामेबाओ बेहर बर गई है, जिन पर किमानों का घन सागरिजित व्यव दाला है । अशिक्षा के कारण किमान बहा सागरदुर्गी रहता है । वह मरना, कटना और विवाद साहि समझों पर समान-समान व्यव करना है, अन्यथा कारण वह अर्थ समझ दा माला है । और साधक-धन दुखा रहता है ।

विमान का पहला चक्का घूमना शुरू हो गया है। इसके अलावा इस विमान का प्रथम उड़ान भी हो गई है।





हो जाती है तब इनका नियंत्रण कठिन हो जाता है, उसके धैर्य और संतोष पहले से ही छूट जाते हैं। संसार की चण्ड-भंगुरता जब तक हृदय में नहीं बैठती तब तक मनुष्य कस्तूरी के हरिण की भांति वासनाओं की वशीभूत होकर इधर-उधर भटकता रहता है और उसको विनाश (नाशवान) वस्तुओं में आनन्द दिखाई पड़ता है। अतः आवश्यक कि लौकिक पदार्थों में विराग उत्पन्न किया जाय। उनसे विशेष अनुराग न बढ़ाया जाय। मन की प्रगतियों पर नियन्त्रण रखा जाय। जहाँ-जहाँ यह अधिक दौरे पहाँ से इन्हें रोका जाय तो वासनाओं पर विजय प्राप्त संभव हो जायगा, चण्डया नहीं।

मांसारिक दुःखों का कारण मन है। यदि मन को संतोष के पथ पर डाल दिया जाय तो बहुत कुछ शान्ति सम्भव है, मन को नियन्त्रित किये बिना शान्ति सम्भव नहीं है, संसार में जितने संयम, नियम, प्रवृत्ति, उपवास आदि कृत्य हैं, वह सब मन को नियन्त्रित करने के साधन हैं। अतः आवश्यक है कि अपने जीवन को संयम नियम आदि के नियमों से जकड़ दें और उन्हीं के तदनुकूल आचरण रखें तो बहुत कुछ सफलता प्राप्त हो सकती है।

संतोष की भी एक सीमा होती है। देश जाति और समाज का जहाँ तक प्रश्न है वहाँ तक मनुष्य संतोष को धारण करे किन्तु सेवा परोरकार और विद्योपाय के सम्बन्ध में असंतोष की माप्रा ही अधिक दृष्टि है वही दशा 'हृत्तन्त्रा' शक्ति की अभिलाषा है, वहाँ भी संतोष की सीमाओं का लाँघने से ही अधिक धैर्य है।

मनुष्य जब आपत्तियों में गिर जाता है, विपत्ति परिस्थितियों में विचलित होता है, तब वह घबड़ाता घबरा साहस को बैठता है तब उसे आशा का नाम मनुष्य जानता है। संतोष तो जीवन का बड़ा ठोस आधार है। जो यह सब धैर्य से सहन करे और जीवन में प्रत्येक मनुष्य को जीवित रखे और उसे जीवन का सन्तोष देकर अपने जीवन को सन्तोष से भर दे।



मगत परिश्रमशील रहे और मनोरंज को अपने हाथ से न जाने दें। तब ही मनुष्य-जीवन सार्थक हो सकता है। संक्षेप में, किसी ने सब कहा है :—

“मोघ-धन, शत्रु-धन, शत्रु-धन, और रतन-धन शून्य ।

जो चाहे संगोप-धन, सब धन भुरि समान ॥

## बाखर या बाय-स्काउट संस्था

विचार-मालिका:—

- (१) प्रस्तावना—बाखर संस्था का उद्देश्य और उद्देश्य ।
- (२) बाखर संस्थाओं की वर्गीकरण । (३) बाखर और उनके प्रतीक । (४) बाखर शिक्षा-विधि । (५) बाखरों के आवश्यकता । (६) बाखरों की सेवाओं और देश की प्रगति में उनका स्थान ।
- (७) प्रस्तावना—बाखर संस्थाओं का भविष्य ।

हमारे देश में बाखर संस्था एक विस्तृत बड़े बीज है। बीमारों को देखने से पहले बुनियाद में कही इसका नामोबिस्तार तक न था। बाखर संस्था का उद्देश्य दक्षिणी अफ्रीका में बीमार बुढ़ के समय हुआ। हमारे उद्देश्य में सर रीचर्ड बेडन वावज से पहले किसी के अस्तित्व में वह बात नहीं आई थी कि देश के छोटे बच्चे भी बीमारों की सेवा का अपना काम कर सकते हैं। सर रीचर्ड बेडन वावज के हृदय में यह विचार मई १९०० ई० में उस समय उद्भव हुआ जब बीमार बुढ़ से सेवाओं की कमी यह रही थी। सरिता इसका ध्यान बढ़ाते हुए बचपन का बच्चा था। उन्होंने बाखरों का संतुष्टि किया और इससे सेवा का न दिया। बढ़ते-बढ़ते अब बाखर संस्था संतुष्टि हुई, इसमें १९०० ई० और १९०० ई० का काम दिया गया। सर रीचर्ड बेडन वावज का नाम और बचपन का नाम भी काम करने को न रह गया जब ईस्ट एंड वावज का नाम बाखर संस्थाओं में



कार्य की भी शिक्षा हो जाती है। जैसे—गाँवें खगाना, पट्टी बाँधना, हप्ता बनाना और सिगनेचर आदि देना। बाज़ारों को थोड़ा पद, धुँआँ आदि परीचाये भी होते हैं। जिनको कभी-कभी बाज़ारों का पाप का सेवा पदा जरूरी है। अपनी खुदराई और बुद्धिमत्ता से कोई भी बाज़ार एक दिन थोड़ा स्काउट की पदवी तक पहुँच सकता है। हमने पर्याप्त बाज़ारों को कठिन कामों की शिक्षा दी जाती है। साथ ही अपने प्रकाश के क्षेत्र भी सिखाये जाते हैं जो मनोरंजन के विषय आवश्यक है।

बाज़ारों को युनिकार्म में परिचालित रहना पड़ता है, सबकी पोशाक एक ही रहनी है, टोपी या साका बापना आवश्यक है। एक छाटो, एक सोरी और भव्यी सबके पाप होती है। कभी-कभी बाज़ार आवश्यक भी-विषय भी अपने साथ रखते हैं।

सेवा करना बाज़ारों का उद्देश्य है। यह निर्बल, दुःखी, अभाव, और अशक्तों की सेवा करता है। दूसरों की जीवन-रक्षा में अपने साथ एक दे देने में बाज़ार अपना गौरव समझता है। बाज़ार सर्वत्र अपने कर्तव्य-वाचन में मगन रहता है, वह कभी किसी की परवाह नहीं करता। बाज़ार सर्वत्र अपने हृदय की परित्र और दयालु रहता है। भ्रातृ-भाव की ही मनोवृत्ति रहता है। निरन्तर बाज़ार संस्थाओं देश के जीवन को परिवर्तन करने में पूरी मकल हो सकती है।

बाज़ारों के कर्तव्य और सेवाओं भी-भाव और सेवाओं के अन्तर्गत पर ही देखे जाते हैं। कहीं बाज़ार पट्टी बाँध रहे हैं, कहीं सोये हुए बच्चों की उनके माँ-बाप के पाप पहुँचा रहे हैं। कहीं आग बुझा रहे हैं। कहीं दुखते हुएों को निश्चिन्त रहे हैं। कहीं लड़ाई के बीच शान्ति स्थापित कर रहे हैं। अतिसाय यह है कि बाज़ार किसी रूप में मानव-जाति की सेवा करने को उत्कल रहते हैं। यही कारण है कि बाज़ार







(१) युद्ध से हानियाँ—(क) युद्ध में अगणित नर-संहार होगा है।

(ख) विभिन्न राष्ट्र की स्वतंत्रता भंग होकर कर ली जागी है और इसकी दायता की शृंखला में लकड़ दिया जाता है। हमके आदिपक्ष और दुर्गोच-श्रेष्ठों का विहाय विजयकुल बन्द हो जाता है। देश में बेकारी और दरिद्रता का सर्वत्र साम्राज्य स्थापित हो जाता है। देश में सर्वत्र अशान्ति और संक्षिप्तता छा जाती है।

(ग) युद्ध में भाग लेने वाले दोनों ही राष्ट्रों की आर्थिक हानि होती है और दोनों ही को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

(२) युद्ध में लाभ—(क) विजयी राष्ट्र का हरे और श्वाभार का जाता है। (ख) नये-नये देशों की प्राप्ति होती है। (ग) विजय का राष्ट्र-विस्तार होता है। (घ) विजय आनि की संस्कृति विस्तार पाती है। (ङ) मनुष्यों के युद्ध में मारे जाने से देश में अव्ययता कम हो जाती है; इसलिये बेकारी की अतिवृत्ति समस्या स्वयमेव दूर हो जाती है। (च) युद्ध के बाद कुछ काज के लिये देश में शान्ति का जाती है। देश में परंपरा और सामर्थ्य कुछ काज के लिये बन्द हो जाती है। (ज) विजय को विभिन्न राष्ट्र की अपरिमित सम्पत्ति प्राप्त होती है।

(३) युद्ध से हानि अधिक और लाभ कम होने है। लम्बक-लम्बक से भूचकियों के लिये मनुष्य का रक्त बहाये, वह बड़े शत्रुता की बात है। क्या सम्पत्ति बड़ी चाहती है? ऐसी मनोहृति मनुष्य में नहीं मिली जाती। ऐसे युद्धों का अन्त होना चाहिये। जब ही विश्व-शान्ति स्थापित होगी।

## हिन्दुस्तानी-खेल

विचार-मालिका —

प्रस्तावना—शारीरिक और मानसिक शक्तियों का दूर करके युव-मूर्ति और शक्ति खर्च करने के लिये यह आवश्यक है।





सोझिनामें होती है। यू० पी० गवर्नमेंट ने इस क्षेत्र के त्रिपे पृथक् सहायता देने का निश्चय किया है। गाँवों में यह क्षेत्र माघः वर्षा और शरद ऋतु की चौरनी रातों में खेती जाता है। दो पार्लियाँ बनायी जाती हैं। रातों एक सामने-सामने पश्चिम-पूर्व दिशा में होते हैं। दोनों रातों के बीच में एक सीमित रेखा बनायी जाती है जिसे काफ़ा (पारी) कहते हैं। जब क्षेत्र शुद्ध होता है, तब एक पक्ष का चारमी कचड़ी, कचड़ी, कचड़ी.....कड़ना हुआ दूसरे पक्ष में प्रवेश करता है और उसमें रात के चारमियों को लूने का प्रयत्न करता है। दूसरे पक्ष वाले दूसरे काट काट कर हमकी तुम्हारे से बचते हैं और तुम्हको पकड़ने का प्रयत्न करते हैं। हमने जिसे लू दिया तो वह मरा, यदि वह स्वयं पकड़ा गया तो वह स्वयं मरा यदि किसी प्रकार वह लूट मार कर भयने कारे में जा गया तो वह भी मरा। नहीं तो मर तो गया ही। सब वह तब तक क्षेत्र नहीं मरना जब तक हमके माथी विपक्षी को मार कर हमें मरि हटा लेते। क्षेत्र में लड़ी कम जाती रहता है। जब एक पक्ष के सामने मित्रापी मर जाते हैं, तब वह पक्ष द्वारा हुआ और विपक्षी निग्रह मरवा जाता है।

गुल्मी कचड़े का क्षेत्र जो दोखियों में पारी-पारी में खेती जाता है। हमें बावच बड़ी बचिसे खेते हैं। हममें कम-से-कम दो व्यक्ति और अधिक-से-बधिक हितने ही जादमी हममें खेती सकते हैं। लूने के लिए तो एक तद्वत करता और लूनीका तद्वत लूने के हैं। हमें गुल्मी कहते हैं। गुल्मी में वह कचड़ी, जो सामान्यतः चंगूच की होती है, जिसे गुल्मी के नाम से पुकारते हैं, एक लेते हैं। फिर एक रात के पहले के हम गुल्मी की बदलते हैं। यदि गुल्मी बदलने वाले मित्रापी ने बदल की को बदलने वाला मित्रापी द्वारा हुआ मान लिया जाता है। जब गुल्मी को पकड़ने वाला मित्रापी उसकी मारद जाता है। तब से बदली कम जाती रहता है। तब से क्या सामान्य जाता है।

गुल्मी कचड़ की मित्रापी-लूनीका दमन कम कीज सकता है। इसे

भी खड़े घुताकार धंकि में खड़े होकर खेलते हैं। एक केन्द्र पर खड़ा होता है और एक दापरे के बाहर, मोतर का खिलाड़ी बाहर वाले खिलाड़ी को छूने का प्रयत्न करता है। दापरे को परिधि पर खड़े खिलाड़ी 'डमे छूने में बाधा डालते हैं। यह इधर उधर चोल की भाँति झपटता है। ज़रा धक्कर मिला कि वह दापरे से बाहर ही बाहर वाले खिलाड़ी को छू लेता है। यम यम भीतर का स्थान बाहर वाले को लेना पड़ता है।

बच्चों के प्रसिद्ध खेलों में चाल-मिथौनी का भी खेल है, इस खेल को भी बच्चे टोलियों में खेलते हैं। इस खेल में एक बच्चा अपनी धारों बन्द कर लेता है और दूसरे बालक जाकर छिपते हैं। जब सब छिप जाते हैं तब एक बालक चिखड़ाकर कहता है, "हमें छुँद लो।" यम चाल मीचने वाला खिलाड़ी इधर उधर घबकर काटकर अन्य खिलाड़ियों को छुँदता है। जिसे वह छुँद के छू लेता है उसी को उसका स्थान लेना पड़ता है।

गेंद का खेल भी देशी खेलों में सर्वप्रिय है। यह बड़े ताकत से खेला जाता है। सब से प्रसिद्ध घेरे का खेल है जिसमें नमाम खेलने वाले खिलाड़ी चारों तरफ एक गोळ दापरे में खड़े हो जाते हैं। बीच में घेरा खड़ा होता है। गेंद घेरे के एक खड़े से दूसरे खड़े तक पहुँचनी रहती है। जिस खिलाड़ी से गेंद गिर जाती है वही घेरा बनता है। यम यही क्रम जारी रहता है और नमाम खड़े खेल में तत्पर रहते हैं, जिस खेल में नमाम खड़े तत्पर रहते हैं वह खेल बतान समझा जाता है।

क्रिकेट का खेल भी दो पार्टियों में खेला जाता है। इस खेल में दो दल रहते हैं। प्रत्येक दल अपनी सीमा निर्धारित करता है। समान धारों के खिलाड़ी अपना अपना सीमाओं में गुप्त स्थानों पर गुप्त गति से खड़ा रहता है। उधर खड़े जाते पहुँचते हैं तब पार्टियों का तबादला होता है, प्रत्येक दल अपने विपक्षी की बाटो

सकियों को काटता है। जिस टोखी को खींची हुई खकीरे कम करती है और उनकी सकियों की संख्या अधिक होती है। बड़ी टोखी खींची हुई समझी जाती है।

बड़दा टोखी (बड़क बड़दा) यह पेड़ों पर खेला जाने वाला खेल है। इसमें बच्चों को खींच पेड़ पर चढ़ने का प्रयास होता है। हम खेल में एक बड़दा, जो अंगभंग एक हाथ जख्मी होती है, भूमि पर लाज हो जाती है। एक बड़का भंगी बनता है जो उस बड़की की रक्षा करता है। यह रक्षक मांग भांग कर मित्रादिपों को दूध का प्रयोग करता है। दूसरे मित्रादि बड़को को आकर अपनी टोख के नीचे होकर बैठ जाते हैं। रक्षक बड़की खेने शौकता है। बैठने वाला मित्रादि बड़ पर चढ़ जाता है। किसी विधि यह रक्षक मित्रादि दूसरे बड़क को छू पाता है तो दूधे दूधे मित्रादि को रक्षक को दूधड़ी देनी पड़ती है। वन, हम खेल में बड़ी कम जाती रहता है। हम खेल में बड़ी बड़के किन्तु समझे जाते हैं जो अधिक देर तक रक्षक का काम करते हैं।

हम खेलों के अनितिक कुन-कुन मूंगा, बरा बरी, कीदा अंगभंग लाही, कीदा मार, बैदा मार आदि ऐसी खेल हैं जो गांव के लड़कों में बहुततरंग में खेले जाते हैं।

घर के आंगूर खेले जाने वाले खेलों में सबसे बढ़िया शतरंज का खेल है। इसे दो आदमी खेलते हैं। दुबकी मुदरे होते हैं जिनकी आठें नियत होती है। हम खेल में मित्रादि आना आना मक मूक जाते हैं।

चौसर के खेल को चार आदमी खेलते हैं। यह खेल भी बरा विकसित खेल है। हम खेल में बड़ी लोग मित्रद्वारा समझे जाते हैं जो अपनी गोरी की सबसे बढ़ते केन्द्र में पहुँचा देने दे।

शतरंज और चौपा को खींच पच गुड़ का भी खेल है। इस खेलों में बहुरि मानसिक कर्तव्यों का विकास होता है किन्तु हम खेलों का चरचा बुरा है। इसी कारण समाज के मध्य स्थिति हम खेलों का निबंध करते हैं।



## सार्बभौम कवि रवीन्द्रनाथ

भारतीय इतिहास की महाशक्तियों की परम्परा-परम्परा में सार्बभौम कवि भी रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म निश्चय ही एक घड़ौलिक एवं अपूर्व घटना है । विगत अनेक शताब्दियों में अपनी सभ्यता और सम्पत्ता, कला और विद्वता की देश-देशान्तर में फैला कर अपनी प्रतीक जगद्भूमि के प्रति गौरव-गरिमा तथा प्रतिष्ठा की भावना स्थापित करने वाले महान् युग-पुरुषों में सर्वोच्च कवि रवीन्द्र का नाम सब से पहले लिया जाता है और इसी आभास-भावना के साथ युग-युगाभ्यन्तर तक बिना आता रहेगा । रवीन्द्र के व्यक्तिगत का निर्माण विराट् ने अपने कला-पूर्ण कुशल हाथों से मानों स्वयं ॥ किया था । इसीलिये अपने कवि के निर्माण के उपकरणों में मनःकी सेवा, पारदर्शी प्रज्ञा, रहस्यदशी महिम्न, उदात्त आत्मा, कुशल कला और माधुर्य रूप का ही उपयोग किया था । कवि के इन योरोदात्त ऊर्जासिक्त विराट् स्वकिर्णों की देखकर ही तो समस्त संसार विस्मयविभूषण हो उस महान् कलाकर पर मोहित हो गया था । सचमुच ही सर्वोद्भूत कवि के सर्वाङ्गीण सार्बभौम विकास की पक्ष समस्त मानवता आश्चर्य हो गये ।

कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म सोमवार, ७ मई सन् १८६१ ई० की कलकत्ते में अपने पैतृक मकान में हुआ । वे अपने माता-पिता की चौदहवीं सन्तान थे । इनकी माता भीमता शारदा देवी तथा पिता-बाबू भीमचन्द्र देवेन्द्रनाथ ठाकुर बंगाल में अपनी पुरातन परम्परा तथा कुल-सर्पाङ्ग के लिये प्रख्यात थे । महर्षि देवेन्द्रनाथ का उदात्त चरित्र ही कवि रवीन्द्र के प्रतिभा-विकास के लिये पूर्वाप्त था । महर्षि की कुल-कमागत अमुल्य सम्पत्ति के साथ आभिजात्य भावना का कवि को प्राप्त होता सहज स्वाभाविक था । कवि के पिताजी के ऊपर लष्करीय शासन-समाज का प्रभाव था किन्तु भारतीय अध्यात्म तत्त्व तथा दार्शनिक रहस्य का वातावरण ही मुख्य रूप से उनके धारों धार विद्यमान रहता था जो कि मुख्यतः पूर्ण भूमि के रूप वालक रवान्द्र का भा उपलब्ध हुआ । शैशव में ही रवान्द्रनाथ की प्रतिभा-विकास के विजयचक्र चिन्ह रश्मिगोचर होने



कलकत्ता विश्वविद्यालय से आरको दाखल पाठ खैरुल की उपाधि मिली।  
 मोरेन ग्राहम के कारण कवि की प्रतिदि देश देशान्तर में व्याप्त हो गई।  
 सन् १९१२ में आकर की ओर से आरको 'सर' की उपाधि भी मिली  
 जिसे बाद में आपने जलियाँवाला बाग की घटना होने पर सरकार के प्रति  
 रोष प्रदर्शित करते हुये खीझकर अपनी देश-वर्षा का परिचय दिया।  
 इसी विषयमिले में १९२० में हंगेरी आने पर वहाँ भारत-मंत्री से मिले।  
 और आपने प्रयत्न किया कि दाखर के सामाजिक कार्य पर उसे दृष्टि मिले।  
 इसके परभाव कवि खीरुल ने अनेक बार संपाद के माध्यम से प्रमुख  
 राज्यों और शहरों का पर्यटन किया। रवि बालू की इन यात्राओं का लक्ष्य  
 मात्र उद्देश्य अपनी अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का पुनरुद्धार तथा विशेष  
 में प्रचार करना ही था, इसी लिये आप हमेशा ही विभिन्न विश्वविद्यालयों  
 तथा सांस्कृतिक स्थानों में व्याख्यान तथा कविता पाठ करते जनता को  
 मंत्र मुग्ध करते थे। इस प्रकार अपनी विद्वत्ता और कला से अमिश्रित निरप  
 की आलोचना करके ७ अगस्त सन् १९४१ की दिन के बाद वृत्ति का वृत्ति  
 और आप मान की आपु की सुधीर्ष यात्रा समाप्त करके आपने वह लोक-  
 की का मरण की।

दाखर की रचनाओं में हमने संक्षेप में उनके जीवन की प्रमुख  
 घटनाओं की निम्नलिखित काव्य दा है, उनके मरण काव्यों का हमने  
 उपरोक्त नहीं हो सका है। बीरपुर में स्थापित शांति निकेतन, ओ-निकेतन  
 तथा विश्वभारती आपके काव्यों के प्रकाशक केंद्र बन सकते हैं। इस  
 संस्थानों की स्थापना के मूल में निरप कवियों का कामना के अनिर्णय  
 और कवि नहीं है। कवि के नाम विश्वभारती का एक प्रकार की ओर इसी  
 प्रकार के लिये कवि को विश्वभारती का वैचारिक समर्थक और प्रतिनिधि माना  
 गया।

कवि खीरुल के साहित्यिक परिचय के लिये इनका संपादनाधीन  
 गणना और संपादित विवरण के माध्यम इनके साहित्यिक कार्य जगत का भी  
 स्मरण करना आवश्यक है। कवि खीरुल का सबसे सुन्दर कविता का संग्रह,





anxious to come in touch with Hindi speaking people. We are doing here what little we can for the spread of culture."— I wish to make Hindi a living language in the Ashram. कवि की वह चमत्कर इच्छा थी कि हिन्दी भाषा की साहित्यिक रम्यता हो ।

संघर्ष में कवि के जीवन की मोड़ी वा सीने पर हम इसी परिणाम पर पहुँचते हैं कि गुप्तदेव मार्चभीम है। इसीजिसे साहित्यिकों ने मोन के साहित्यिक है, दार्शनिकों ने उन्हें राजनीतिज्ञ कहा, समाज-सुधारकों ने उन्हें सुधारक ही माना; चित्रकार उन्हें अपना गुप्त और पद्मदर्शक समझते रहे, वैज्ञानिक उन्हें आलोचनात्मक चमत्करण समझते हैं। एवं ने उन्हें विश्व को अपनी भेट समझा और परिचय ने उन्हें विश्वास का वैज्ञानिक समझ कर स्वीकार किया। निरमलदेव की रवीन्द्रनाथ का स्थिति मानासुख था। उनकी प्रतिभा और कार्य-प्रणाली इसी विषय क्षेत्र में प्रकाशित हुई। रसानुभूति सब चमत्कर है एवं वैज्ञानिक अवलोकन, गंभीर चिन्तन और कलात्मिक मूल्य राष्ट्रीयता और अखण्ड ज्ञान का अद्भुत समिश्रण मानव संस्कृति के इतिहास में पहले नहीं देखा गया। इस विचार से समय द्रष्टा और चिन्तक-नेता रवीन्द्रनाथ को छोड़ा, परन्तु, पतञ्जलि, गेह और सुवराज की कीर्ति में रखा जा सकता है। रवीन्द्रनाथ के स्थितिगत महत्व ने भारतभूमि को चमक दिया है, उनके जन्म से निरमलदेव 'कुल' परिवर्तन करने का इच्छा थी।

## आदर्श जीवन की आधार-शिला

विश्व पर दृष्टि दायिने वह चारों ओर सोचासुन तथा दुःख मोचन चमत्कार से मतलब मिलेगा। भारत का सोच कीजिये। पुस्तकों को देखिये किन्तु वे भी समीपवर्तीक चमत्कार में न सकेंगी। अपने अन्तर्गत को दृष्टिदिये तो वही पर अन्तर्गत के उपलब्ध होने की वास्तविकता का



उपनिषद्‌ओं में भी कहा है । “द्विषन्मयेन पात्रेण सत्परपादिदितं मुनयः”  
 मुन्य का मुल स्वयं के पात्र में रखा है, यही विरह-विभ्रान्त महात्मा  
 राजसदाय भी यही कह गये हैं:—What make a man good is  
 having but few wants.

कुछ लोगों का विचार है कि धन-हीन व्यक्ति को लोगों के  
 अनिच्छित और मित्रता ही क्या है ? किन्तु वेने चाहियों को ध्यान  
 रखना चाहिये कि विपन्नतायें वे सीढ़ियाँ हैं जिन पर होकर हम और भी  
 उच्च चरित्रों की सिद्धि के लिये बढ़ते हैं । समय की पड़ावों पर ज्यों-ज्यों  
 मनुष्य बढ़ता है उसकी प्रगतिता भी उत्तरोत्तर बढ़ती है । जेम्स वेज़न नामक  
 पाश्चात्य मनोवी ने कहा है ‘दुःख पवित्र परमाणु के मार्ग तक पहुँचाता  
 है । पवित्र विचार, कथन तथा कर्तव्यों के लिये मार्ग-प्रदर्शक बनता है । वे  
 बाइबल, जो शोकोपादक होने हैं और वे किराँतों, जो जीवन-मार्ग में बराबर  
 साथ देती हैं, दोनों चरित्रों की प्रमती हैं । दूसरे सुख और दुःख तो जीवन  
 के लिये अनिवार्य हैं । कविवर पत ने लिखा है:—

यह साध-उपा का सांगन, साजिगन विरह-मिथन का ।

चिरं हाम-प्रभुमय आनन, रे इस मानव जीवन का ।

किन्तु सुख सांवातिक विषयों में नहीं रहता । यदि कोई तमन-बुद्धी  
 मनोवर के बृक्ष और सूखती हुई पत्तियों से भरे दुःख-गुहों में होकर  
 सुख का अनुमान करे कि मैं उसे अपनी पृथ्वी बना लूँ, वह भागता ही  
 जायगा, तिरछी पर्यटन-मालाओं, लहरों, लेनों, चरागाहों और सुनहली  
 न्हाइयों में होकर उसका पीछा करे रखकर मारती हुई चरियों में होकर  
 उन निर्जन चट्टानों पर आकाश हो जहाँ गिर और पकड़ होजत है और  
 हीमलया से प्रत्येक समुद्र और स्थान पर करना खड़ा जाय, तो भी सुख  
 उसे सदैव पोषा ही देता रहगा ।

यह मय होने हुये भी क्या धन मानव को सुख द सकगा । उसकी  
 खाद्या तो कमल-पत्रों पर जल बिन्दु मय क मेष-समागोद तथा इनसे  
 भी चन्द्र मोहार-कणिकाओं की प्रभाव-धीला म भी अधिक अस्थिर है । अतः



सुलभ नहीं पाया है। एक ऐसे सुगम मार्ग को निर्धारित करने की आवश्यकता है जो सर्वमान्य एवं सर्वग्राह्य हो। यही समस्या हमो गिर में विशेषतः विचारणीय है।

प्रत्येक राष्ट्र अपनी एक निश्चित राष्ट्र-भाषा रखता है और पात्र के इस लक्ष्य में तो प्रायः भारत के अनिश्चित सभी देशों में उसको निश्चित राष्ट्र-भाषा का राष्ट्र-भाषा है। भारत में जितने यह अभाव एक अनि कटु अनुभव है। हमकी धर्म के निमित्त प्रचलन भी यहाँ से प्रचलन चल रही रहे हैं किन्तु समस्या का कोई निश्चित हल नहीं निकल पाया। इस विषय में प्रमुख भाषा भारत की प्राचीनता तथा विभिन्न-प्राचीन भाषाओं का बाहुल्य ही उल्लेख करना है। अब तक तो भारत की पराधीनता के कारण अंग्रेजी राष्ट्र-भाषा को अथवा अतिशय व्यक्तिगत के विषय यहाँ की हम यह पर आश्रय करने के रहे किन्तु मौलानावरत भारत की स्वतंत्रता में हम निराश्रय तथा सर्वोच्च रहि-रहने को निर्मूलक कर दिया है। पात्र अंग्रेजी के वक्तव्यी तथा अल्पसंख्यक पुत्रियों की संख्या स्वतंत्रता के पश्चात् घटती गयी है। हमें ये वैयक्तिक रूप से विदेशी भाषा की प्रथा के कुछ को भी तथा अपने अल्पसंख्यक विज्ञान तथा अल्पसंख्यक साहित्य और इस का अनुमोदन करें किन्तु कुछ और सामाजिक रूप से कोई भी प्राचीन भाषा नहीं जो अंग्रेजी का राष्ट्र भाषा का राष्ट्र-भाषा बनाने की योजना करने का दुष्साध्य कर लगे। हाँ, प्राचीनता के पुत्रों के अल्पसंख्यक हम मार्ग के कटक बने हुए हैं। बंगाली, बिहारी, संथाली, गुजराती, महाराष्ट्रीय, तमिल, मारवाड़ी, रेवाड़ी, इन्दीयनदी आदि अनेक भाषा हमारे देश में प्रचलित हैं। हम अन्य भाषाओं में बंगाली, महाराष्ट्रीय, गुजराती तथा बिहारी के साहित्य अतिशय उन्नत हैं। बंगाली में प्रायः इन सभी भाषाओं में अतिशय उन्नत हैं। बंगाली में अत्यन्त रसिकता तथा वैयक्तिकता के अल्पसंख्यक हैं। हम भाषा के साहित्य पर विदेशी भाषाओं का भी पराधीन प्रभाव पड़ा है। महाराष्ट्रीय और गुजराती की हम उन्नत से उन्नत हैं किन्तु यह सब कुछ बावजूद भी हम प्राचीन भाषाओं में से एक को अपना नहीं किन्तु भाषा का एक पर



देने को कहा है। उनकी दूसरी दलील इस विधि की सार्वभौमिकता भी है। उनका यह कथन एक निरिच्छन सीमा तक ही उचित हो सकता है। पूर्णतया नहीं। भारत के छिये रोमन विधि का प्रचलन उतना ही अनुन्दर है जितना एक अंग्रेजी मेम को भारतीय ग्राम्य स्त्री का पाधरा पहना कर मजा करना। कोई भी वस्तु अपनी स्थान पर ही शोभा देती है। पदप्लुत या स्थान-भ्रष्ट होकर वह मदारबहोन तथा पुष्पास्पद बन जाती है। हमारे वेद-पुराण, स्मृति-ग्रंथ, संस्कृत काव्य तथा हिन्दी ग्राम्य सृष्टि सभी रोमन विधि में लिसे जाने लगे तो उनका रूप कितना विकृत होकर रहेगा हमका अनुमान ही कष्टप्रद है। कालीदास का शेषदूत तुलसी का रामचरित मानस और बिहारी और मूकज की कविताएँ इस रोमन विधि के फेर में पड़कर क्या की क्या बन जाएंगी? विदेशी लोग अपनी हृष्टता से अपनी सुविधानुसार हमारे ग्रंथों का अनुवाद अपनी अपनी विधियों में करें, हमें उनका अनुकरण करना उचित नहीं। भारत के सैनिकों को आज तक रोमन विधि ही सिखाई जाती रही है, यह एक दुःख-प्रद विषय रहा है किन्तु अब इस ओर हमारी सरकार विशेष ध्यान दे रही है और सैनिकों को भी हिन्दी की ओर प्रवृत्त किया जा रहा है।

किसी राष्ट्र की भाषा में उसकी सामाजिक मज्जा का होना अनिवार्य है। यह तो निर्विवाद-स्पष्ट बात है कि हमारी सभी ग्रामीय भाषाएँ पुराने हिन्दी के विकृत रूप हैं। इन भिन्न भाषाओं के साधारण स्वर से अगर उठकर - जो भाषा अपना अस्तित्व स्थापित कर सके वह अत्यन्त मजान शक्ति है। पुराने वायु सन्तों ने, जिन में कबीर, मानक, तुकाराम आदि मनी गिने जा सकते हैं, विभिन्न ग्रामीय भाषाओं की प्रतिवृद्धि में योग दिया किन्तु आज की हिन्दी साधारण चराचर से बहुत ऊपर पहुँच चुकी है, उसका साहित्य उष्णकोटि का साहित्य बनता जा रहा है, उसकी कला में अनुदिक कृत्रिम विकास हो रहा है। उसके सूत्रनामक





इस निषय में एक प्रमुख युक्ति यह भी है कि जब वाकिफान की दिम्पुरगान दो दृगक-दृगक पानिगत बन चुके हैं तथा वषात रूप में इन-संगता का विभाजन भी हो चुका है तो केवल अनासंगिकों के विषे 'रू' प्रिथिम दिम्पी को राउ-भाता का स्थान देना उचित नहीं। इन् का निषय है कि केन्द्रीय माका ने इन ओर कुछ प्वात दिया है। जो वृत्तोनमात इहम चादि नेना दिम्पी के अन्तुधान के विषे प्रयत्नशील है। किरी भाता के रूप को मंद-मंद करना इसे शुद्ध अशुद्ध तथा वापस से निषयी बनाना है।

इसार्थ 'रू' अपने रात्रमैलिक जीवन में वसति दिम्पुरगानी के ही रचनाती रहे हैं पर किमी भी भातर की कल्पना को इनमें भी स्वीकार किया है। उनका कथन है 'किमी भी कीमी अ्वात के हुकने नहीं किये ता सकने। कीमी ज्वात कमी तरह अल्पक होती है जिस तरह कल्पार्थ। विधान परिषद् ने भी इन ओर प्रशंसापूर्ण कथन पढ़ाया है। अभी कुछ दिन पूर्व विधान की भाता मन्थारन भाता न राकर संकल्पित जाता ही स्वीकार कर भी गई है क्योंकि मन्थारन भाता हुनगी गिरा नहीं कि इनमें सबसे की कान्नी तथा पाशाची को समर्पित करने के विषे प्रमुख संसद् भिन्न भेद। संकल्प के साथ यह मुख है। 'इरातरा' के विषे सबसे की के का ( 1.50 ) संसद् का प्रनयित भाता में 'कान्नी' अर्थ होता है किन्तु यह एक सही-सही अर्थ हुआ। निम्नां के का का अर्थ 'विधि' किया है। इसी प्रकार के अल्प कसद् की ओर का रहे हैं तथा यह सब हा हुआ है कि अल्प की ओर दिम्पी दोनों भाताओं से भातर का विधान किया। 1.50 काकाओं के विषे सामान्यक विधानक ( Ter hiar il ) कल्प का स्थान वा रही है। 'मार्थ की वृत्तान' देना कर्तव्य मैत्रुम वरक का कल्पन के साथ से प्रविष्ट हो नहीं है। विरी राइता-राइता का कल्पन के साथ वृत्तान की मार्तव्य। कर्तव्य दोनों में भी, इनमें कल्पन के साथ वृत्तान का कल्पन है, 'इन्दी का संसद् भाता बनाने के विषे







प्रकार भगवान् कृष्ण का शुभ अन्वेषण हमारी छोटी बहिनो में प्रसन्नता के स्थान पर प्रायः हमें उस अद्वितीय महापुरुष की मौन का अभिधा सुनने ही आता है। भंसार की अनेक दुःख प्रातिर्घातों का कविरत आदर्शों के आश्रय पर ही उन्नति के उच्चतम शिखरों पर विराजमान है। हमारी जानि के बिने आदर्शों का अभाव नहीं, फिर भी हम दुर्गति के गहन गर्त और आग की आदिमा में अग्नि ही रहने दें। क्या यह सब आदर्शों का अट्टहास मात्र नहीं? क्या 'आदर्शवाद' ही हमारी दुःखता का कारण बनता है? नहीं, हाँ है हमारी अवस्था भीकृष्ण-चरित्र को मूर्तबोधन करके उसके अनुसार कार्य करने बनाने की।

आज अन्धकार की सहाय हमारे शिरो केवल एक आभोग प्रसीद नया आने पीने का विषय रह गया है। अतः प्रथम ही कुछ आदर्शों को लेते हैं वस्तु अधिकतर अमना देवी है जो केवल आदर्शों के अनिर्दिष्ट कृष्ण-चरित्र से कोई शीघ्र शिका नहीं लेनी। वे तो विस्मयपूर्ण अपने स्वर्गीय प्रभाव से वह दिन दृष्ट-नै-दृष्ट तथा गती से भी गती हृदय में वाचनना की किरणें फैल ही देना है। वाचकों तथा साक्ष और अर्थात् वाचिकाओं को श्रितनी प्रसन्नता होती है वह केवल अनुभव का विषय है कर्म की ओर से उनका ही नहीं जीवित या मरणा। पुनः और पुनर्निर्माण ही कृष्ण के योग और आनन्दानन्द स्वयं का समान कर आनन्द-विभवा ही आनन्द है और उन्हें वाचन एवं महोन्नत योग-चरित्रों की उन्नति ही उन्नति है श्रितन स्वाङ्ग होकर मोक्षिकाओं वह ही भी 'अभिषेक हृदि-दर्शन की भूमी' पर हमें केवल 'तीव्र मोक्षिक' के कृष्ण की ही आदर्श मानकर संतुष्ट होकर नहीं बँसता है। यदि सब कदा प्राय ही हमें हम स्वयं के आनन्द से हृदय और जानि का अभाव अकल्पित किया है। आनन्द के हम नृपत पुनः से, अब आनन्द वस्तु ही बुझा है, हम कर्मात् के कर्मात् बनकर अपनी अन्तर्द्वारों का परिचय नहीं देना है वान् दृष्टान्तिना य काम अकर कृष्ण के 'महावाचन स्वयं' से ही उन्नत उन्नत आनन्द है वह श्रित-अनन्द नहीं कि उनके आदि में प्रसन्नता है। हम अन्न है अन्न दूध अन्न य अन्नान्न के हैं, हमसे ना हम आनन्दार्थ



रघुवीर्यवत, रामचन्द्रजी और शीतलजी का महत्त्व कहीं अधिक है। भाता ।  
 नृपनगा के प्रेमी इस अवधि में को छोड़कर दूसरे को मर्ी की पूजा को पर  
 मूर्ख जायेंगे तथा करने पुरातन कृष्ण के पुरातन चारुओं को नृपन  
 में आकर उन पर आचारण करने का प्रयत्न करेंगे ।

—:ॐ:—

## राष्ट्र के कर्णधार पं० नेहरू

प्रत्येक राष्ट्र जब पवन की पराकाष्ठा को पहुँचने को होता है तो ईश्वर  
 कुछ देवा विभूतियों का आधिपत्य करता है जो समाज को नृप-दानावध से  
 निवारण करने-मुखा का पान कराते हैं । टर्की का कमाजरासा, इटली का  
 मुसोलिनी, जप का दाक्यदाय तथा नृपान का सुकरान ऐसे ही उदाहरण हैं।  
 भारत में ही 'परा कदा दि धर्मैव आधिभवंति' के अनुसार प्रत्येक युग में  
 उदात्त कर्मवीर उदभूत होते रहे हैं । भारत के इस नृपन युग में हमने  
 'बापू' तथा 'नेहरू' के रूप में उद्भूत देखा । स्वर्गीय बापू की विरह-विधा  
 और महत्त्व तो सगम्य है ही किन्तु राष्ट्र के कर्णधार पं० नेहरू को भी  
 भारत का, समस्त विश्व के मानसिक आनन तथा अज्ञा की दृष्टि से देखने  
 हैं । जगिदा के ही भारत भारत प्रधान व्यक्ति हैं तथा एशिया के चीन जगि  
 राष्ट्र भारत भारत-भूतन के निमित्त भारत की मानसिक अनुमान के इच्छुक  
 रहते हैं । जगिदाई नती में नृपन वर्ष हुए एक समा (Consolation)  
 के साथ प्रधान समाज तथा व । भारत का अन्तिम अविद्या और विवर्धन  
 मानसिक समता हमारे ही भाता । समती है । इस महान् विभूति के  
 जीवन और के नृपन के उद्भूत नृपन का मानना करने से पूर्व हमें सम  
 नती । जिस समान के समान में उद्भूत नृपन का मानना है क्योंकि वेने  
 ना उद्भूत के समान के समान के समान । उद्भूत नृपन का मानना नहीं होने, समान  
 नृपन में उद्भूत के ही के समान के समान । उद्भूत नृपन में उद्भूत का मानना  
 के नृपन के समान के समान के समान । उद्भूत नृपन और समान के समान  
 का समान के समान के समान के समान ।





रक्षाबंधन, रामनवमी और शीतलपत्री का महत्त्व बढ़ी जा रहा है। जाति और धर्मता के प्रेमो हल बननी माँ की खोजकर दूधो को माँ की दूध को बन मूल जायेने तथा करने पुनर्जन हल के पुनर्जन चारों को दूध बन में लाकर उन पर आचार्य करने का प्रयत्न करेंगे।

—\*—\*—

## राष्ट्र के कर्षाचार पं० नेहरू

प्रत्येक राष्ट्र जब धन की वसुधाया को बढ़ाने को होता है तो ईसा कुछ ऐसी विधियों का आविर्भाव करता है जो समाज को दुःख-दायक में निराकर शान्ति-सुख का पान कराते हैं। इन्हीं का कलाश्रय, इन्हीं का सुसोचनी, हल का दारुपराय तथा पुनर्जन का सुकाल ऐसे ही उदाहरण हैं। भारत में ही 'बड़ा बड़ा दि धर्मरत्न आविर्भवति' के अनुसार प्रत्येक युग में उदात्त कर्मवीर उत्पन्न होते रहे हैं। भारत के हम धन पुनर्जन में हमें 'बापू' तथा 'नेहरू' के रूप में उन्हें देना। स्वर्गीय बापू की विश्व-प्रियता और महात्म्य तो सर्वमान्य है ही किन्तु राष्ट्र के कर्षाचार पं० नेहरू को भी आप प्रायः समस्त विश्व के नागरिक जानते तथा भद्रों की दृष्टि से देखते हैं। एशिया के तो आप आप प्रधान व्यक्ति हैं तथा एशिया के चीन और राष्ट्र अपने मार्ग-प्रदर्शन के निमित्त आपकी राजनैतिक अनुमान के दृष्टि रहते हैं। एशियाई देशों में, कुछ वर्ष हुए, एक सभा (Conference) के आय प्रधान बनाये गये थे। आपको अवनिम प्रतिभा और विश्वव्यपक राजनैतिक समता इसी से जानी जा सकती है। इस महान् विभूति के जीवन और कार्य-क्षेत्र के ऊपर विस्तृत आलोचना करने से पूर्व इनके व्यक्त तथा पत्रिक सम्बन्ध के विषय में कुछ खिखना अनिवार्य था है क्योंकि हमें तो नेहरू के समान कर्मवीर किसी राष्ट्र विशेष को सम्पत्ति नहीं होने, समूचे विश्व पर उनके कार्यों का प्रभाव पड़ता है फिर परिवार से उनका सम्बन्ध कुछ विशेष नहीं रह जाता किन्तु फिर भी पारिवारिक और सम्मत्ता संबंधों का स्थान आवश्यक हो जाना है।

सन् १८८१ ई० में एक कारमोरी ब्राह्मण परिवार में पं० नेहरू का जन्म हुआ। आपके पिता प्रयाग के एक सुप्रसिद्ध एडवोकेट थे। पं० मोतीलाल नेहरू ने अपने व्यवसाय से इतना धनार्जन कर रक्खा था कि नेहरू परिवार की कई पीढ़ियों तक उसे हम विषय में चिन्ता नहीं हो सकती थी। पं० मोतीलाल एक कुशल एडवोकेट थे तथा साधारण अभियोगों में न जाकर बड़े-बड़े राज्यों और रईमों के अभियोगों का पक्ष समर्थन करते थे। पंडित नेहरू को पिता के लिये कैम्ब्रिज भेजा गया। वहाँ रहने-सहने आहार-व्यवहार सब कुछ पारचाय्य ढंग का बन गया। वस्तुतः जन्म से उच्च धनिक परिवार में उत्पन्न होने से आपका जीवन का भार-दंड बहुत ऊँचा था। इंग्लैंड में जाकर भी वह वैसा ही रहा। अध्ययन-काल में आपके वस्त्र पेरिस से पुत्रकर आते थे। अंग्रेजों आपकी मातृ-भाषा भी बन गई थी तथा इसी संस्कार के प्रभाव से हम नेहरू को माहिंद्रिक क्षेत्र में देखते हैं। इंग्लैंड के वातावरण ने नेहरू के मस्तिष्क में वह मुगन्धि भर दी जो स्वाधीन राष्ट्र अपने निवासियों को प्रदान करता है। उसे अपने देश की दुर्दशा पर शोक हुआ और जब वह विदेश में एक बैरिस्टर तथा कैम्ब्रिज प्रेजिडेंट होकर भारत आया तो उसने देश-हित के लिये जीवन समर्पण करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

सब प्रकार से सम्पन्न तथा धैर्य और धन में पके हुए एक तरफ के लिये यह कार्य कितना कठिन था इसे वही समुचित रूप से समझ सकता है जिसे स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रयास के ये दिन देखे हैं। अपने प्रथम प्रयास में, जबकि नाना में, श्री गिद्दानी को बन्दी बना लिया गया, पं० नेहरू ने मार्पी के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने का निश्चय किया। उन्होंने अपने वित्त को विवश किया कि स्वयं भी नाभा की ओर चले किन्तु कुछ अन्य मित्रों के कथन, जो नियन्त्रात्मक थे, के सहार से रुक गये। उन्होंने स्वयं स्थाकार किया है—मैंने मित्रों को सम्मति को शरय्व ली तथा अपना कायरता को द्विपान का एक बहाना निकाला...

मैंने प्रायः अपने एक साथी को इस प्रकार

एकाकी छोड़कर वल्ले जाने से स्वयं सत्ता का अनुभव किया है। मानवी-  
 चित्त-स्वभाव के कारण मन और सुख में वल्ले एक युवक के लिये अपने  
 प्रारम्भिक रात्रिमैत्रिक वर्षों में ऐसा ही जाना कोई अस्वार्थजनक घटना नहीं  
 सदुपयान्त एक बार जब पं० नेहरू स्वयंसेवकों की एक टुकड़ी के समक्ष  
 बने खल रहे थे उन्होंने देखा हमरी और पुलिस के अधिकारी स्वयंसेवकों  
 को घुरी तरह पीट रहे हैं। उनका हृदय धक-धक करने लगा किन्तु पाठो हुई  
 निर्भयता को वह निरचय के वल्ल पर रोक कर सड़क पर बढ़ते रहे। वह  
 एक कायर का सा व्यवहार करने के लिये अब उत्पन्न न थे; पुलिस के निर्भय  
 आघातों ने, हृदय में उत्पन्न प्रतिजिवा के विषम भावों ने उन्हें प्रायः  
 अन्धा-सा बना दिया, उनके अन्दर से निकली हुई रोषमय विचारधारा  
 ने कहा कि अस्वार्थ पुलिस अचसर को भीचे गिराकर स्वयं उसका  
 स्थान ले लिया तब किन्तु निवर्तन तथा अपनी पारियों के अनुशासन ने  
 उन्हें रोका, तथा उन्होंने चोट से रक्षा करने के लिये अपने मुँह को  
 दोनों हाथों से केवल बँक लिया। नैहरू दिन प्रतिदिन अपने को नियंत्रित  
 तथा कुह-सहिष्णु बनाते गए। अहिंसात्मक संघर्ष के लिये उन्होंने कितना  
 त्याग किया। अपनी आत्म-कहानी में वह स्वयं लिखते हैं 'दक्षिण-सी लकी  
 तथा सड़क पर पड़ी हुई मीके विचार ने मुझे विद्वल बना दिया। यदि मैं  
 उसे देखने के लिये वहाँ होता तो मुझे विस्मय है, मेरा व्यवहार न  
 जाने कैसा हो गया होता। अहिंसा के सिद्धान्त पर मैं कहीं तक चल सकता  
 मुझे भय है कि वह कदल दरम मुझे उस पाठ को सुखा देता जिसे मैंने  
 दर्जनों सालों में सीखा है। उपरोक्त उदाहरण ने उदमुर अराधन है जिन्हें  
 विरय इतिहास का कोई भी पाठक कभी भूल नहीं सकता।

अपने रात्रिमैत्रिक जीवन में पं० नेहरू को युग के अवतार स्वर्गीय  
 बारू से ही प्रेरणा मिली है। नेहरू सदा बारू के सम्पर्क में रहे हैं।  
 इसमें अद्वितीय कार्यशक्ति तथा प्रतिभा है किन्तु जहाँ कहीं उन्हें अपने  
 कर्तव्य में घटकता पड़ा, बारू के आध्यात्मिक वल्ल ने उनकी सहायता  
 की। नेहरू की पर गोपी की को चट्ट निरवास रहा। १० जी भी समित अद्या



कमीठी पर कमने से सही इतरने बीग्य ही है उसमें केवल विश्वास के सहारे कहा गया कुछ भी नहीं। बीग्य के समयानुक्रम तथा इसके ऐतिहासिक अध्ययन से नेहरू को विश्वस्त बना दिया है कि मानव की धार्मिक आवश्यकताएँ उसका ध्येयद्वार बनाती हैं किन्तु विश्वासी पात्रियों के समुदाय को अपने द्वार में एकत्रित देखकर एक बार यह कह लें :— 'इस धार्मिक विश्वास में कितनी आश्चर्यजनक शक्ति थी जो सदस्यों परों तक इन्हें तथा इनके पूर्वजों को भारत के प्रायिक स्थान से तंगा-स्तान के द्विमे छाती रही है। पं० नेहरू ने अपने निजी दृष्टिकोण से धर्म को विश्वास न मानकर भारतीय सम्प्रदाय को राजनीति से निष्का देने का प्रयत्न किया।

जीवन की सरलता के साथ पड़पाठी अवस्था है किन्तु जीवन के मापदंड को ऊँचा उठाना चाहते हैं। आपकी उत्कट इच्छा रही है कि भारत के हृदय केवल साधारण रीति से जीवन चालन करके ही संतुष्ट न हो वेदों वरन् ब्रह्मका रहस्य-महसस का स्तर ऊँचा होना चाहिये। मरुद्गो तथा किसानों के द्विमे आपके हृदय में समित कदवायी गयी है। साधारण जनता ने आपके जीवन से इसे पूर्णतया जान लिया है। कार्य के आश्रित ने पं० जी की इतना समय नहीं दिया कि आप अपने इस प्रेम को पूर्ण रूप से प्रकट कर सकें। उन्होंने कई बार स्वयं अपने को साम्प्रदायी घोषित किया है किन्तु कार्य रूप में कोई प्रयत्न वह इस दृष्टि में नहीं उठाया। आपका यह साम्प्रदाय हृदयवाद या मजहूरवाद की एक प्रतिष्ठावा है। 'विरह इतिहास की मछल' नामक विचार प्रथम में आपके विचारों का उद्घाटन किया है तथा ससार के विभिन्न 'वादों' पर प्रकाश डाला है। आपके विचार इसी साम्प्रदाय से पूर्णतया नहीं मिलते और यदि मिलते हैं तो कम-से-कम अपने राजनैतिक जीवन में आपने उन विचारों को मुख्यता नहीं दी। आप प्रजातंत्र के मित्र तथा अमेरिका द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर ही सब तक चले रहे हैं। प्रसीधारी क पं० नेहरू उल्टे हैं। होन किसान के जीवन को आप सुखी देखना चाहते हैं। उनका कथन है 'Why this



**"देश को विद्वान् हेतुओं की आवश्यकता है"**

“इषजित ते सुकृतिनो वसमिदुहवीश्वराः ।

नामिह वैवा पशुःकाये लरामरशुर्भ भयम् ॥<sup>११</sup>

बाल्यः विद्याओं में सदैव से चला जाने वाला यह उपरोक्त कथन समान नहीं, एक अनादि कात्र से विद्वान् क्षेत्रज्ञ तथा भागुक्त कवि हो-  
दुःख-दारात्मक से दाय मानव जाति को सुख-संगीत तथा शांति का मार्ग  
दिनागे रहे हैं। उनकी अमूल्य कृतियाँ विश्व के भूरे भदके परिजनों के  
हिये प्रकाश-रसमय बनीं, उनके जीवन सम्बन्धी अनुभव तथा संशुद्धि  
विचार ही विश्व के अनुज्यों के जीवन में काम आए। होमर मिलन,  
हैमन्सीयर गीत तथा कामसन, बर्ल और रमिकन की रचनाएँ केवल  
वाचसाध्य देशों के लिये नहीं बल्कि समस्त विश्व के लिये विचारार्थ तथा  
जीवनार्थ हैं। वह अमूल्य उपदेशों का काम देती रहेंगी। सावधान और  
सुधाम के जीवन-सम्बन्धी सिद्धांत कौन सहृदय पाठक मूल्य मकना है।  
वाचसाध्य समीक्षकों के जो तथ्य अपने ग्रन्थ-रत्नों में भर दिये हैं वे इन  
विद्वान् क्षेत्रज्ञों के कठिन परिश्रमों के परिणाम हैं तथा किसी भी भारतीय  
अथवा पूर्वी सम्प्रदाय के अनुयायी अथवा प्रतिपादक के लिये शुरुचीय है।  
हमारे भारतीय नाट्यत्व में जो ऐसे विद्वान् क्षेत्रज्ञों की कमी से ही एक  
अनवरत वृद्धि हो चली जाती है। उपनिषद् तथा ब्राह्मण ग्रन्थों की  
व्याख्याना को कौन समुक्ति नहीं करता? बुद्ध के ज्ञानक ग्रन्थ विवेक  
नहीं? पाणिनीय व्याकरण संस्कृत व्याकरण कौन बढ़ने के लिए बाध नहीं  
रहता? एवं, कादम्बरि और वाण के ग्रन्थ-रत्नों के लिये नहीं अलंकार?।  
वाण और मुद्ररक्त के जीवन-सम्बन्धी ज्ञान को कौन मूल्य बंद से रोकता  
नहीं कर रहता? सामुद्रिक परमार्थ तथा विवेकानन्द के देशान्त से आने  
की विजना नरक या तन 'मकना है' बरन मूल्य दाज का मूला कवि अनाद,  
अमूल्य, अकल्य का'ह छ अथवा कवन मकना छ अह है? मूल्य, मुद्रकी  
और कवन न मानव के छ अथवा कवन 'अथ' देना है। दुःख में क्षेत्रज्ञों  
नया कवि को न दुःखता बुद्ध 'अथ' अथ है अथ मक का बर्लन करना  
अथमक है। विवेकानन्द न अमकन दूध मक मकना का'माना नहीं जा





किन्तु मूल्य ने उन्हें और भी प्रोत्साहित कर दिया। बन्दा की बापूी का खेलकूद की कक्षम में एक ब्राह्मण होता है जो मुनने का पकने वाले को उत्पन्न बना देता है। विद्वान् खेलकूद मुखा देना है कि वह वादक को गुणमय सिखा दे रहा है तथा उसकी शीघ्र कदाचिर्वा वादक के जिये स्वयं एक उपदेशक का काम करती रहनी है। इसी प्रकार बन्दा भी प्रोत्साहकों को मोहनी मन्त्र से मोह लेता है परन्तु मन्त्रा खेलकूद का बन्दा नहीं है जो केवल स्वार्थ भाव से प्रेरित न होकर निरवार्थता के प्रसरण वन वा वी तथा स्वार्थ-विस्मरण एवं त्याग के अनुकरणीय विद्वान्ओं पर बहना हुआ जनता का मार्ग-प्रदर्शन करे। स्पष्ट है कि भारत को वात्र देने विद्वान् खेलकों की नितात्म आवश्यकता है।

कुत्र धन-संप्रदा की देव तथा अधिकतम प्रभुति से साहित्य-क्षेत्र में घाने वाले खेलकों के जिये वह एक सज्जसास्पद विषय है, एवं इस से धन का अर्थन करना उचित नहीं। अपने कीर्तन-निर्वाह के जिये सभी को प्रयास करना पड़ता है। उद्भूति के बिना न साहित्य-सेवा संभव है न समाज-सेवा, किन्तु केवल धन की स्पृहा के सहारे ही चलना महा कष्टादाकारी है। जितना हमारे जीवन के जिये अनिवार्य है हमें उतना ही वात्रा चाहिये, अधिक जाना वा बरोरता महान् पाप है। महात्मा गांधी ने एक बार कहा था "कि भारत की हम हीन दशा का एक कारण यह भी है कि हम इतना ला लाने हैं जितना हमें महा जाना चाहिये और हम दूसरों की दुःख के कारण बनते हैं।" वस्तुतः वह प्रभुति जिस प्रकार भारत के अल्प क्षेत्रों में एनि-प्रत्यक्ष है उससे कहीं अधिक हालिश्व साहित्यिक क्षेत्र में भिन्न हो सकती है। कृपा-कर्मट इच्छा करके तथा उसे मुनहरी वी में बन्द करके जैनी कीर्तन पर चेचना जितना निय है उससे कहीं अधिक निय यह है कि चाक्यक शीघ्रक तथा डाहटिल क्षेत्र सुपनाकर विषय के जिये साहसीन पुस्तकें दूधानों पर रखवान का अवगन दिया जाय। भारत के बहुत से क्षेत्रों में, जो उत्तरदायी नहीं हैं, वह कुत्रानि दम्भन में घाली है कि शायः लेख चुनकर उन्हें नूतन आहूति देने का प्रयत्न किया जाता है।



कृषि-विज्ञान की भाविका उनके साथ की गई छायावाद और रहस्यवाद अपनी दूर निष्ठता के लिये विरकाज तक भारणीय रहेंगे किन्तु यह तो यथार्थवाद है, हमारा प्रगतिवाद हम यथार्थवाद की प्रतिज्ञा है, अनिर्दिष्ट कल्पना का स्थान जीवन की कठोर अनुमति को देना चाहिये, व्यक्ति कुंजी के परिकरणा पर भूमि को निज स्वर्ग पर सज्जमाना छोड़ दे यदि हमें सामर्थ्य है तो अन्न का निर्माण यही कर दे जिससे देश का निम्नतम प्रायः प्रथम में प्रवेश कर सके ।

आज के कुछ विद्वान् जेनकों ने प्रत्यक्ष नहीं तो एक उचित मीमांसा तक यह हम दिशा में उठाया है उनमें श्री विद्योती हरि का विरचनचतुष्टय कार्य, तादृश साहित्य-वाचन का अनुसंधान पूर्ण तथा श्री चैतन्य राय शारदा के द्वारा सृजनानामक जेनक मनुज प्रत्यक्षीय हैं । हमारे जेनकों को हम स्वाभाविक आशी का अनुकरण करना चाहिये । केवल आत्मगुण के लिये जिसने के दिन गए । आज भी जनता के मुख तथा चर्च के लिये ही जिनका कुछ साग लगा है । विरच-साहित्य का अनुसंधान काके हमारे जेनक अनुसाधारण पूर्ण जेनक जिनमें प्रचुर मात्रा में आज की विषय समस्याओं के विरच उपलब्ध हो सके । शास्त्रों पर लिखने की अपेक्षा आकस्मिक रहित सत्य की जनता के समक्ष प्रस्तुत करना अधिकतर है, जेनक विद्वान् बहुत मात्राओं को देश को निरालम सावरकमाना है जो विदेशी साहित्य का हिन्दी में अनुवाद कर सकें तथा विज्ञान और कृषि-प्रत्यक्षी लोगों को साधारण जनता के जिन जीवनगत बनाकर देश का लाभ कर सके, इसके लिये अधिनाय साहित्यिक जमाना तथा साहित्य-मनुष्य जन्म चाहिये । शास्त्र का पारंगत ही अनुवाद कार्य से अधिक हो सकता है, अपनी भाषा के विरच तक पूर्ण वैज्ञानिक ज्ञान बनाया आज भी विचार-विचार के लिये हिन्दी में सब ज्ञान प्रत्यक्ष बना सके । हम प्रकाश अथवा आदि विद्वान् भाषाओं में कुछ साहित्य-वाचन ज्ञान बढ़ने आज विरच साधारण विचार-विचार के लिये प्रत्यक्ष बन जायेंगे । यह ज्ञान बहुत पारंगत से साहित्यिक विचारों में बढ़ता किन्तु हमसे सम्पूर्ण तादृश का जो दिना दान हमसे तादृश न बनाए करो अधिक मनुष्य-वाची होता । आज के साधारण जेनक यदि बनने



भर देती है। इसीलिये भीरुत्व में जगन्मोहिनी शक्ति सभी अन्य गुणों से  
अपेक्षित है और यह कीर्ति का समय बड़ा वर्षक है।

जब भी किसी देश या जाति पर कठिनाइयों के बारूक मराने  
कीर सैनिकों और वीरों ने प्रबल एवमान बनकर उठें युद्ध-भित्त कर दिया।  
राम ने राक्षसों से देश की रक्षा अपने मुक्ती के बाणों से की। कृष्ण ने सैनिक  
शक्ति के बल पर ही कंस जरासंध और अघर्षों कीरों का विनाश कराया।  
वीरवर स्कन्दगुप्त कोचन पर्यन्त निर्मम हूषों से टपकर खड़ा रहा। श्री-  
शिरोमणि पोरस और चन्द्रगुप्त ने भारत भूमि को यूनापी अधिका से  
महा के जिये बचा दिया। शिवा और राणा अपनी चमकमाती लड़ाइयों से  
ही गौ, माक्ष्य तथा धर्म की रक्षा करते रहे। एक नहीं संसार में बनेक  
उदाहरण मिलते हैं। महारानीजी दिट्ठकर रयाकिन के घर में घुसकर भी  
जमका कुष विगाड़ न सका। ब्रिटेन और अमेरिका ने समस्त संसार में  
अपने उपनिवेश बना लिये। अफगानिस्तान के पठान तथा नेपाळ के  
मिराजी साज भी स्वतन्त्र हैं। आभिर किसी प्रकार ? केवल अपने सैन्य  
बल पर और भारत भी अपने वीर सुभाष के सहारे ही कर गया। यदि  
विश्वभार से भारतीय स्वतन्त्रता के सूत्र को खोला जाए तो स्वीकार  
करना पड़ता है कि जिनका कार्य कांग्रेस और समूचा देश मिलकर नहीं  
कर भी न कर सका उसे सुभाष और उनकी 'आज़ाद कीर्त' ने कुछ ही  
दिनों में कर दिया। हम दिव्य शक्ति के अन्तर में रखी हुई वीर  
बाणी गहरा रही 'Friends ! My comrades in the war of  
liberation ? I demand of you nothing above all,  
I demand of you blood. Give me blood and I  
promise you freedom' फिर क्या था अविन्द की शक्ति  
से वनों और अराधन के अंगण गुँगुना उठे। नेला भी दिखी वह स्वर्ण  
नहीं बँटूच सक तो क्या ? उनकी बार जा मान अपना काम स्वर्ण दिया।  
उनके अद्भुत कार्य न देश में दुःख पैदा कर दिया। इस प्रबल दुःख  
के समक्ष ब्रिटिश सत्ता का बल गोल जालन में टिक न सका और आज हम













सबल पुरुष परि भीरु बनें  
तो हमको दे बरदान सखी  
अबलाएँ सुठ पड़े देश को  
क्यों पुरुष समझान सखी  
देनें फिर इस अगली-रात ॥  
होगी कैसे द्वार सखी ! " ---

### सुमद्राकुमारी 'बौद्ध'।

सारांश यह है कि पुरातन नारी और आधुनिक नारी में कमीन साम्राज्य का अंतर है। नारी पुरुष के समान ही अपना सामाजिक रूप बनाने में प्रयत्नशील है और उसे उत्तरोत्तर सकलता मिलती जा रही है। वैवाहिक धर्म पर वर्चस्व विवाद और पाक-वर्षों के उत्तराग्न भारतीय विधान-निराद के नारी के विवाद-सम्बन्धी विषयों की एक सूची बनाकर हमें दण्ड, कानून का विधि के रूप में प्रकाशित का धोखा भी का दिया है। इस वैवाहिक विधान के अनुसार भारतीय नारी को प्रायः बेसव स्वतन्त्रताएँ मिली हैं जो आज के दिनों की राष्ट्र को प्राप्त हैं। हाँ, देश की कुछ अन्धी तथा अनिर्वाह परम्पराओं को अपरध्व ध्यान में रखना तथा है किन्तु जो कुछ इस विधान के अन्तर्गत है वह अपर्याप्त नहीं। अन्तर्गत में लेकर के अमिच्छित वर्गों की मित्रों तक समान रूप से एक ओर से में बंधी बरही से अपना जीवना सुवाहक बोध देना करना चाहती है व सम्मान की सम्मति भी अनेक सिद्धि मित्रों के लेख पत्रिका तथा पत्रों में अनिश्चित निकलने रहते हैं। वहाँ की पीठ से सुदृढता पाने के बिना के राष्ट्र की राष्ट्र के मृगशीर्षों को वैवाहिक युक्तियों से अनिश्चित-मिश्रण के निमित्त व रिश करती है। आज की अनामान विषय आज सम्मति-धर्म तथा परिमित-विषयों को देखते हुए यह कार्य अनुचित नहीं। इसमें नहीं राष्ट्र का दिव्य मान है वहाँ इसमें कहीं अतिरिक्त उपकार उन अवस्थाओं का है जो अनामानक सम्मान तथा नागरिक जीवन से उबरकर सुदृढता पाने का ध्येय है। रा. ककुमारी अमृतकीर ने इस दिशा में विधान सम्मति-धर्म से 'अमेर की-मर'।



की गई है। मैं मुझे इसलिये पूजनीय मानता हूँ कि मनुष्य का मनुष्यत्व केवल उसी से सिद्ध है।" श्रद्धा

२—"स्त्री के नश्वरों में परमात्मा ने अपने दो दीपक रख दिये हैं ताकि संसार के भूखे-मरके लोग प्रकाश में अपना खोया हुआ रास्ता देख सकें।" श्रद्धा

३—"तारे आकाश की कविता है जो स्थिरा दृष्टी को कविता है, दुनिया के भाग्य का निरन्तर इन्हीं के हाथों में है।" हार्नेब

४—"तेरा स्वर्ग तेरी माँ के पैरों तले है।" इमरतुद्दमद

५—"भारतवर्ष का धर्म भारतवर्ष के पुत्रों से नहीं पुत्रियों की कृपा से स्थिर है। यदि भारत-रक्षकों अपना धर्म छोड़ देंगी तो सब तब भारत नष्ट हो गया होगा।" स्वामी दयानन्द

जित्त मारी जाति के विषय में उपरोक्त विचार विरच के विख्यात पुरुष धोख गये हैं भारत के पुरुष वर्ग को उसकी प्रतिष्ठा तथा उसके बाधा बनना महान् पाप है। जिसमें देह स्त्री-स्वातन्त्र्य तथा शिक्षा-प्रचार से देश और समाज उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँचेगा किन्तु साथ ही-मात्र भारत की देवियों के लिये भी कुछ आवश्यक विषय हैं जिन्हें दृष्टिकोण में रखकर उन्हें प्रगति के दृष्टस्त पथ पर बढ़ना है। मर्यादा नदियों की भाँति उन्हें पर्वतशृंगों से स्वर्ध नहीं टकराना है। वरन् मिथु जैम गांधीयों पराजय करके बढ़ना है। निरम-बद्ध स्वतंत्रता ही वास्तविक स्वतंत्रता तथा दृष्टदृष्टता बन जाती है। केवल हमें इसे कि विरच हमारे राष्ट्रों में रही पूर्ण स्वतंत्र है। हमारी भारतीय महिलाओं को छोड़ो माँति अनुमति नहीं करना है। हमारा देश कुछ वास्तविकता साक्षरता बिरोधता रखता है जो विरच के अन्य किसी राष्ट्र के पाप नहीं। हम अपने पुरातन आदर्शों को पूर्ण भूलना नहीं है। हमारी सामाजिक धार्मिक तथा नैतिक परिस्थितियों अन्य राष्ट्रों से सामान्य नहीं रखती अतः भारतीय जातीय के आदर्शों को अपनाया भी एक भारी भूल हागी 'स्त्री शूद्रों का धीवर्ग' का प्रतिवन्द तो आज है नहीं। भारत की महिला









हमने प्रज्ञान-वश किये गये उभय अहम्भ भावनाओं को भी ध्वांस कर  
 दिया तथा पुनः प्रारम्भ में निरोद्धा कार्य में जुट गया। ऐसा ही एक  
 सुन्दर उदाहरण कार्वालय का है। प्रतीक राज्यकान्ति पर जितनी दूर  
 हमारी प्रसिद्ध पुस्तकें भेज कर रखी दूर एक सेवक द्वारा काफ़ी दूरी  
 थी किन्तु तबिक भी रोच प्रकट न करके उन्होंने इसे पुनः प्रारं-  
 भ में प्रेषित का कार्य प्रारम्भ किया था। एक महीने विरव इतिहास में  
 हमें अनेक विभिन्नियों ऐसी मिलती हैं जो अम-सूत्र के सहारे ही भिन्न  
 में प्रेषित स्थान बना सके हैं। अम और अक्षय-साध का प्रसिद्ध  
 यह कुछ सम्भव बना देता है। एकदम का अक्षय-भेद का इतराचार  
 हमारे कठिन परिश्रम का प्रतिफल था। राम का कठोर इतोनास  
 उन्हें सर्वोत्तमोत्तम बना सका। अमचार्य कर्म-व्यापकता से  
 ही कर्म जैसे कर्मवीर, कर्मिहास जैसे मुक्ति तथा विरवाभिन्न और  
 कर्मिहास जैसे अवि और योगीश्वरों का निर्माण हुआ है। आज भी  
 ऐसे स्वर्णियों की स्मृति नहीं जो अम को जीवन में प्रदानना देकर  
 एक अति कुलकोटि के नेता, बना और राजनैतिक बने हैं।  
 हाकर राजेन्द्रप्रसाद पंडित नेहरू तथा स्वर्गीय 'बापू' अमिक जीवन  
 के उत्तम उदाहरण हैं। विरव में साधनरीय और शीत-इतिहास साधन  
 का ही आधिकार है ऐसे जो नमक में चाहे के समान मिलते हैं जो  
 सुन्दरी पाक्यों में कुत्तर उन्नति के पद को सचके धर्म में प्राप्त  
 कर सके। यह जो एक निर्विवाद साध है कि देर-बच और अम अक्षय-  
 वचना की ओर से अति है और किसी भी समाज या व्यक्ति के  
 विकास में आवश्यक है। कठोर अम करके इतर-पूर्ण करने वाले ही  
 जाने अक्षय विरवाकाल के समकाले हुए विनाश बने हैं। सुप्रसिद्ध  
 राजवाण्ड विज्ञान हाकर प्रामाण्य के अम और कार्य शक्ति की मदद  
 इन शक्तियों में प्रकट की है, जाने कुत्ती की कथाओं है और कार्य अम के पुनः।  
 उन्होंने यह स्थापना है जो नम-नम हाव भाव सभी समादायिकों इन  
 कुत्ती की कथाओं का विरव अक्षयमान अम कुत्ती में परिवर्तित कर  
 रंगा है।



भारत के बुद्धिजीवी अपनी सारीसिफ व्यस्तता नहीं कर पाते। कार्य-कुशलता गहन गर्त में गिरती जा रही है और भारत के शिक्षा, कलाकला तथा अन्य आदि प्रमुख क्षेत्रों में यह कथन सर्वोच्च में ठीक बैठता है 'आधुने मिलने नहीं पाए बुद्धा को दण्ड हुआ'—शिक्षित वर्ग में तो उद्यम का घमास है ही भारत का पत्रिक वर्ग और भी कीचरीय अवस्था में है। उनकी दिनचर्या के प्रमुख आधार आकरष और प्रमाद ही रह गये हैं।

इसी क्षेत्र पत्रिकों में दण्ड व्यस्तियों की घबिहता होती जा रही है। इसके विपरीत भारत का कृषक-अमुराध आज भी उद्यमी होने के कारण स्वस्थ और 'बढ़ता मुक्त विरोधी भावा' की दृष्टि से सुखी है। इसमें समझ नहीं कि हमका सामाजिक स्तर और जीवन का मापदण्ड उतना उच्च नहीं जिसका नागरिक जनता का है परन्तु उसका स्वस्थ शरीर और रूढ़िगुण अवश्य हमें सर्व सन्तोष प्रदान करते हैं और यह प्रायः उन पार्श्व से क्या रहता है जिन्हें निरवधी पत्रिक 'An empty mind devil's workshop' के अनुसार कमाने रहते हैं। वस्तुतः भारत का निरवधी वर्ग भ्रम की निरवधी देकर मानव न गढ़कर शुष्क मल बनने का प्रयास कर रहा है।

आज का युग सर्व-युग अवस्था है किन्तु जिस देशों में मशीनों का अधिकार है वहाँ भी भ्रम का हुनार निरादर नहीं। कम और अमेरिका आदि देशों में स्त्री-पुरुष आज भी समान रूप से उद्योग करते हैं। वहाँ के नेता अन्धेरा भावा का सर्वोप कल करते हैं परन्तु दैनिक कार्यों की मात्रा बढ़ाते हैं। वहाँ के राजनैतिक आनिश-बाजी का प्रदर्शन नहीं करते निर्माण के साधारण किन्तु महत्वपूर्ण प्रयत्नों की ओर अधिक ध्यान देते हैं। इन्हीं आदर्शों की कार्यन्विन योजना के बलवर रूप के भाव विपाता स्वर्गीय लेनिन को सफल करके रूप के राजा लुम्बेयवर्ग ने एक बार कहने का साहस किया था —'मम आदमी की अच्छी तरह देख लो। बड़ी लेनिन है, उसके आत्म-निश्चयी और कभी न झुकनेवाले मिर की ओर देखो योही-भी एशियाई आकृति जिये हुये वह एक नमो किसान का





निर्णय अधिकार गया। उत्तरदायी शासन की मांग मधुबे पहलें सन् १८११ में उपस्थित की गई। इस मांग में ब्रिटिश सत्ता को स्पष्ट और चिह्नित कर दिया। भारतवर्ष में शासन करने वाले ब्रिटिशों में हमारे भारतीय जनता के कुछ गिने-चुने लोगों का परमपूज्य सम्मान और श्रद्धाशक्ति हमें लोगों को दवाने का प्रयत्न किया। हमों का परिचय पंजाब में जलियाँवाला बाग का दया-कांड हुआ। उसके बाद सन् १८२० में महामा गांधी के प्रयत्नों से देश में ब्रिटिश साम्राज्य शाही को मंचित करने का नया असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। इस आन्दोलन में हम पूर्ण सहिष्णु बने रहे। इसके बाद सन् १८२१ में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के नेतृत्व में हमने 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' की पुकार की। विदेशी सरकार ने इस पुकार की ओर पूर्ण रूप से उदासीनता दिखाई। फलतः क्रिया होकर भारतवर्ष की जनता को असहयोग की भावना का अपने भीतर जागृत करना पड़ा और विदेशी वस्त्र तथा वस्तु के सहिष्कार के भी आन्दोलन करने पड़े। जिसके फल-स्वरूप अनेक नेताओं की कारावास का कठोर दंड दिया गया। इसके बाद फिर देश में करवट बदला और फिर देश के नेताओं ने स्वर्गीय श्री मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में और निवेशिक स्वराज्य का एक नूतन विधान तैयार करके सरकार को दिया। और साथ ही यह पुनीती भी दी कि यदि सरकार २१ दिसम्बर १८२६ तक इसे स्वीकार नहीं करेगा तो देश में फिर से स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अहिंसा से आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया जायगा। सरकार ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और २१ दिसम्बर १८२६ को रावी नदी के तट

हर साहोर में अष्टौषात्रि के समय भारतीय जनता ने अपनी दुर्लभ स्वतन्त्रता की घोषणा कर ली, और उसी दिन २१ जनवरी को हमने अपना स्वातंत्र्य दिवस मिरिचन किया । यही दिन आज भी हमारी स्वातन्त्र्य आकांक्षा का दिन है ।

हमारे बाद देश के सर्वोच्च नेता महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन के नूतन आयोजन प्रारम्भ हुए । नमक-सत्याग्रह हम आन्दोलन का मोड़-दबड़ बना और देश के कोने-कोने में नमक का की दूर करने की पुकार सुनरिन हो उठी । नमक सत्याग्रह में भाग लेने पर हजारों देशवासी कारागृहों में बन्द कर दिये गये । दो वर्ष के अहिंसात्मक आन्दोलन के बाद वह अन्त्यतः सफल हुआ और साम्राज्यवादी शासन मुड़े । उन्होंने महात्मा गांधी जी को पुनः समझौता किया । किन्तु वह स्वीकार्य न बन सका । सरकार ने महात्मा गांधी के साथ और अहिंसा को छोड़ डीक न समझकर बूढ़ गौरी से अपने पत्रों को और अधिक दबा करने की आज्ञा जारी किन्तु वे सफल नहीं हुए । इस प्रकार १९३९ में देश में कांग्रेसी नेताओं की अपने अपने प्रांतीय में मन्त्रिमण्डल बनाकर काम चलाने का अवसर मिला किन्तु वह भी स्वीकार्य न रह सका और पुनः प्रांतीय के गवर्नरों ने कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल को भंग करके शासन की जगहों पर अपने हाथ में ले ली । हर प्रांत में फिर से तानाशाही शासन स्थापित हो गया । इसी समय उधर बाहरी में द्वितीय महायुद्ध की उग्रकाण्ड प्रचण्ड रूप से खपक उठी और कांग्रेसी को भी उसमें शामिल होना पड़ा । युद्ध की हम पक्षा न कांग्रेसी ने भारतवर्ष की धन, सम्पत्ति, जनता तथा समस्त उपकरणों से देश को बिना इच्छा के भी अपने हित में लगाया । परिणाम यह हुआ कि





लिए सदैव स्वयंशरी में निम्ना जायगा और भारतीय जनता के हितों में तो वह प्रेम और पुत्रक के साथ सदैव सक्रिय रहेगा ही ।

इस पराजय के बाद ही भारतीय राजनीति के क्षेत्र में पुनः मौलवादी भावों की उगावारी जग उठी । स्वतंत्रता संग्राम के 'समर्थक' या 'सहयोगी' बनकर और स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए देश के बाहर, रूस, पश्चिम और दक्षिण में पुकार उठे—'संयोज भारत छोड़ो' । इस पराजय के बाद स्वतंत्रता आन्दोलन के विवेक भरीय प्रचलन जारी थे । कथन अन्तर्देशीय विधि की हत्या कर दी गई थी कि चम्पेओ का औद्योगिक संसार समस्त संसार में जहाँ रहना सम्भव न था । संयोज द्वारा से राज्य और गणतन्त्र बने हुए भी भीतर ही भीतर निश्चित और स्वातंत्र्य की उठे थे । ऐसे कोई कथन सुनकर न रहा था कि भारतीय जनता कि विरसित भावनाओं के द्वारा भारत का प्रथम राज्य सके । मध्य, पश्चिम और दक्षिण के द्वारा भारत के नेतृत्वों ने संसार के राजनैतिक वातावरण में अपने लिए स्वातंत्र्य प्राप्त कर ली थी और यही सही सही राज्य राष्ट्र मान्य की स्वतंत्रता दिलाने के पक्ष में अपना मन प्रकट करने लगे थे ।

द्वितीय महायुद्ध समाप्त हुआ । संयोजों की सैनिक विजय हुई । इस युद्ध में भारतीयों की स्वतंत्रता करने के जो वचन दिये थे उनके पुरे करने का समय आ पहुँचा किन्तु चम्पेओ ने प्रत्यक्ष में कुछ आवाकानी की । उन्होंने भारत की पुरानी समस्या—सांस्कृतिक समस्या को प्राथमिक करके मुस्लिमवादीय की भाँति की

दिने दिने प्रोत्साहित किया। मुस्लिमलोग भारत का बटवारा  
 चाहती थी अपना पूराक राष्ट्र पाकिस्तान बना कर। इनकी मांग  
 पर में एदर होती चली गई और अन्त में ३ जून १९४७ को पार्लियमेंट  
 ने यह निर्णय दिया कि १२ अगस्त को भारत का बटवारा करके  
 'इरिडियन डोमिनियन' तथा 'पाकिस्तान डोमिनियन' दो राष्ट्र बना दिये  
 जायेंगे। उसी के अनुसार देश का विभाजन करके १२ अगस्त ४७ को  
 हमारी स्वतन्त्रता का प्रथम सूर्य उदित हुआ।

देश स्वतन्त्र हुआ। हिन्दु साम्प्रदायिक बैमनस्य की ओ  
 चिनगारी सुझग रही थी वह अगस्त के आगम में और के सा.  
 बषक लड़ी और लाखों निर्दोष प्राणियों का बष और बहिदान  
 होने के परचाइ देश का गला रूप पैदा हुआ। एक करोड़ के  
 बगमग जवना एक देश से दूसरे देश में जाई हम प्रका संसार  
 के इतिहास में शरादणियों की मनसवा का सबसे बड़ा उदाहरण दर्शित  
 हुआ।

आज हम स्वतन्त्र हैं। १२ अगस्त हमारी स्वतन्त्रता का  
 प्रथम प्रभाउ है और हमें १२ अगस्त की स्मृति में ही करने  
 देश में जीवन और जागृति के बिन्दु बनाने होते होयते हैं।  
 शिर के इतिहास में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए जो अमोघ्य पुरा समय  
 समय पर होते रहे हैं। आठवर्ष की स्वतन्त्रता का यह पुरा उन  
 सबसे बड़ग बचनों पड़िया में एक गला रूप पैदा करता है। साथ  
 बहिमा और साधना का स्वल्प खेडा मिलि साक्षात् में हमारे द ३

नेताओं ने सभीके धर्म में सहिष्णु रहकर ही विजय प्राप्त की है । यह संसार  
 विनाश और लालच के इस युग में एक नया आदर्श उपस्थित करने वाला  
 है । हमें जानना है कि यही सत्य हमारे मातृी शासकों का दाय होगा और  
 अहिंसा ही हमारे शासकों पर नजर डूबेगी ।



दुसरे अक्षरों में तोर पर एक कर्मचारी से दूसरे कर्मचारी को भेजे जाते हैं।

आजकल पत्र लिखने की दो विधियाँ प्रचलित हैं, एक पुरानी प्रथा तथा जिसका चलन कुछ धार्मिक दृष्टिों और व्यापारी लोगों तक सीमित रह गया है। दूसरी मशीन द्वारा जिसमें जगहों की वृत्त पर एक पत्र लिखे जाते हैं। इन पत्रों में शब्दों का समुदायन नहीं होता। संक्षिप्त दशरिक्त लिखकर मुख्य विषय लिखना आसानी से करने हैं।

प्रतिष्ठा के अनुसार पत्र तीन प्रकार के होते हैं—( १ ) बड़ों की ओर से बड़ों को ( २ ) बड़ों की ओर से बड़ों की ओर बराबर बाजों को। प्रत्येक पत्र के मुख्य निम्नलिखित चार होते हैं :—

(क) पत्र भेजने की तिथि और ठिकाना, (ख) शिष्टाचार और प्रशस्ति, (ग) पत्र का मुख्य विषय (घ) पत्र की समाप्ति और (ङ) पत्र भेजने वाले का नाम तथा पूरा पता। इसके अनतिरिक्त पत्र पाने वाले का पूरा पता लिखा जाता है।

## पुरानी प्रथा के अनुसार पत्र लिखना

पुरानी प्रथा में दशरिक्त में बड़ों को 'सिद्धि' और बराबर बाजों को 'दयस्वित्ती' लिखा जाता है। पुरानी प्रथा में भी लिखने की बड़ी परिपाटी थी किन्तु आजकल भी लिखने की परम्परा मिट गई है। पुरानी प्रथा में बड़ों को आशु-मृदु शब्दों द्वारा ही सम्बोधित करते हैं। पत्र के अनतिरिक्त कहीं बड़ों का नाम नहीं लिखते। बड़ों को 'परम पूज्य', 'पूज्य पाद' और 'महोदय-सम्पन्न' आदि विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हैं। बराबर बाजों के लिये 'श्रेष्ठ' 'श्रेष्ठकर' या 'हितैषी', आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं।



जोतोप्रवाद वाले मामले में कोई पैमाना नहीं बनना। दादा जी के काफ़ी कोशिश कर रही है। रामबाबू रामप्रसाद का बहिस्र बना दिया गया है। दादा जी कल के मुकदमे में गए हुए हैं। देखिये क्या होगा ? कहीं चल गया है। चार छोटे दादा जी के नाम का एक पाथर सवरस बनवा जाना। देखी बाबा अब तो ठीक ठीक हैं, बाबा भी दादा के पास बड़े बड़े हैं। गोंड के कुत्ताएँ दुर्बल हैं। गाँव की रात्रिनी किमी की समझ में नहीं आती। मामा चाली चले गये हैं। बड़े मामा का काम कभी-कभी मैं ही कर देता हूँ। इस वर्ष मैं परीक्षा में पास हो जाऊँगा। चार एक साहसिक सवरस करवा दीजियेगा। मामा अभी बेजोड़ से नहीं आई है। विशेष नहीं को क्या मिले ?

मिली काकगुल हण्डा दादजी गुल्बारा सं० १४२० विक्रमी

### नवीन प्रथा के अनुसार पत्र लिखना ।

(क) नवीन प्रथा में पत्र के बहिरी ओर पत्र लिखने का दिशाणा और डिक्ले के भीचे पत्र भेजने की तारीख इस प्रकार लिखी जाती है :—

( १ )

( २ )

( ३ )

जनवरी २२, १९४१, २ मार्च, १९४१, काकगुल गुल्बारा १) सं० १९४०

२३-१ ३१

३-३ ४१

अथवा

(ख) नवीन प्रथा में प्रत्येक पत्र-पत्र लिखी जाती है। नवीन प्रथा को प्रारम्भ और निवेदन बहिरी ओर लिखना है :—

1. बड़े मंडंधियों को	मान्यवर, पूज्यवर, पूज्य	आज्ञाकारी, स्नेहभाजन,
2. छोटे मंडंधियों को	पिता जी आदि चिरंजीवी, प्रिय	कृपा-वाली शुभचिन्तक, हितैषी
3. बराबर वालों को	प्रियवर, प्रिय	सुम्हारा मित्र, सुहृद
4. परिचितों को	प्रिय कथवा प्रिय गुणा जी	आरका (आगे अपना पूरा नाम)
5. अपरिचितों को	महाराय, प्रिय महाराय	"
6. स्त्रियों को यदि वे परिचित न हों	महोदया	"
7. स्त्री को	आद-मिसे	"
8. अधिकारी को	मान्यवर	सुम्हारा, भवदीय
9. निमन्त्रण-पत्र में	श्रीगुरु, मान्यवर	आर्य, संवक
		दर्शनभिन्नादी

(ग) प्रशस्ति के पत्रवाचक पत्र का मुख्य विषय लिखा जाता है।  
सदैव निम्नलिखित वाक्यों में आरम्भ करना चाहिये —

आपका पत्र पाकर मुझे हार्दिक हय प्रिया, मुझे कभी-कभी  
आपका पत्र मिलता है, आरका पत्र पाकर हय की  
हय मान्यवर मुझे, आपका पत्र पाकर मुझे आपका  
हय हय पत्र का 'हय मान्यवर' मान्यवर से है।



बनाए और आइसबर्ग न प्रकट हो रहा हो । पत्र में कर्षकों का उपयोग न करना चाहिये । पत्र लिखने में देना प्रतीत हो, मानो गुप्त रूप से 'बाँट' कर रहे हो ।

(घ) समाचार-पत्रों को जो पत्र लिखे जायें, वह सम्पूर्ण के नाम लिखना चाहिये । सम्पादक को सदैव 'धीमार्' ब्रह्मा 'महाशय' लिखना चाहिये । अन्त में आपका 'विरवापी' ब्रह्मा 'महदीप' लिखना चाहिये ।

(ङ) कुछ लोग पत्र के अन्त में तारीख हाथों दे, जाहें-पत्रों में तो प्रधानतया अन्त में तारीख हाथों का प्रथम है । हमने का पत्र बाँट दिया जाना है :—

## (२) पत्र मित्र को (नवीन प्रकाश से)

धर्म-समाज-कावेर, बलीगढ़ ।

१२ मार्च, १९११

मित्र कर्मों श्री ।

आपका पत्र पाकर मुझे हार्दिक दुःख हुआ । आज दो ७ मास मैं आपका पत्र लिखा । मुझे आश्चर्य हुआ कि आज ७ वर्ष के लोके हुए गिने गये । तमो मृत हो बने कठोर स्थिति । बार मास से आपने कुछ पत्र नहीं लिखा । मैं तो निराश था, कहीं आपको पत्र लिखना । आपका 'मौलिक-देव' को आपने मृत ३० में लिखा था स्वेपोमैय में लिखा था हम हम ही है आगे से मैं पत्र तो वा डिम्बु उन्होंने ही आपका कुछ पत्र नहीं लिखा । आपका 'आर्जुन निवन्ध' अनीमातायक के स्वेपोमैय में भेदा है । आपका पत्र और आपका आर्जुन निवन्ध दोनों साथ साथ मिले । आपका पत्र हुआ कुछ ना बाद पर मास्वनी की प्रकाश हो गई है । बड़ा सुन्दर लिखन है । मेरे मित्रों में बाबाय में 'दकन बाबा' निर्वनी में आप आपका आर्जुन-निवन्ध के समकक्ष पाई नहीं वेदावा का प्रकाश । आपका आपकी







अदात्मनता का परिचय देता है तो उसको पाठशाळा से निहाल दिया जाता है । अनुष्ठान का बहुत ध्यान रखा जाता है ।

। विद्यालय में एक वाक्-वर्द्धिनी मना है जिसमें विद्यार्थियों को व्याख्यान देने का सम्मान कराया जाता है । वाक्-वर्द्धिनी मना को अतिरिक्त साप्ताहिक होती है, प्रत्येक पन्द्रहवें दिन सदस्यों की प्रतिस्पर्द्धा की परीक्षा होती है । जीतने वाले को पुरस्कार दिया जाता है जिससे छात्रों के उत्साह में वृद्धि होती है । बच्चे स्वायत्तारिक रूप से पाठ्यपत्र और कीमिसे बनाते हैं, उनका नियमानुसार गुनाज होता है । पाठशाळा के विद्यार्थियों की तरफ से एक 'विद्युत्' नामक साप्ताहिक पत्र भी निकलता है जिसमें छोटे बड़े बच्चे सभी प्रकार के भाव प्रकट करते हैं । छोटी-बड़ी कहानियाँ और कविताओं का ज्ञान भी बच्चों को कराया जाता है । स्कूल विज्ञान रसायन छत्र पर चलाया जा रहा है । पूरे विद्यालय में ७ कक्षाएँ हैं । प्रत्येक कक्षा में २० विद्यार्थी हैं । सब विद्यार्थी सब बोर्डर हैं और भूमिदान में रहते हैं । सारे स्कूल में पढ़ी एक राष्ट्रीय संस्था है जो महात्मा जी की योजना के अनुसार काम कर रही है । हरि राजा के लिये २० एकड़ भूमि विद्यालय के पास है । एक ट्यूबवैल भी खोदा दिया गया है । ४ 'ओपी देव' हैं । १० हिमाल की मस्जिद की गायें भी काम में लायी गई हैं । हरि कला के लिये देहली गवर्नमेण्ट ने २००० रु० का महापत्र 'गिफ्ट' वर्ष दी थी ।

अभिप्राय यह है कि विद्यालय राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक, और नैतिक-दृष्टि से बहुत उत्तम कार्य का है । इस जनता का सारा श्रेष्ठ पण्डित निर्मलनाथ सराव, मजदूर का है । उन्होंने अपना सारा सर्वस्व खाना जो को खपवा कर रखा है । विद्यालय बच्चों का बड़ा मित्र । सारा जी को धरल गुना कहना ।

पाठशाळा द्वारा पुत्र—

विन्नामणि जमा—

दस्तावेज



नेज़ने को । नेत्र का मैदान भी उगता है । चावरण है जितना बजाप  
 कम । कभी तोप न करो, कभी किमी से चवे-नवे से न बीजो । एक दूसरे  
 के सहयोगी बनो, उठने बैठने के तरीके सीखो । अपने आप पर शासन  
 करने की प्रवृत्ति को विकसित करो । तुरे चावरण के चक्कों के पाप  
 कभी न बैठो । अपने प्लासी समय को सायनरी की पुस्तकों के पाने में  
 व्यतीत किया करो । अपने अभ्यासों का सदैव धादर को और उनकी  
 शायेक साज़ा का पालन करो । कभी उनके ऊपर आलोचना न करो ।

तुम 'पारा जीवन और हरव विचार' के विद्वान को कभी न  
 भूलो । कभी दूसरों को नकल न करो । भावस्थ और विश्वास की अपने  
 पास न जाने दो । तुम पैशन के चक्कर से दूर रहो । तुम्हें अपने की एक  
 योग्य नागरिक बनना है अतः तुम अपने दायित्व को समझो । अपने  
 चावरण को बनाओ, गुरधों की सेवा करो । मिगरेट आदि कुट्टियों को न  
 पढ़ने दो । सिनेमा, गेज़-तमाशे और कुरबिदुर्ष नाच-रंगों में कभी न  
 जाओ । पूरी ठावरता और लगनवता के साथ विद्याध्ययन करो । तभी  
 तुम्हारे आन्दर उन गुणों का विकास होगा जिसमें तुम अपने बरा (मानदान)  
 और देश का मुक्त उगमन कर सकोगे ।

तुम्हारे मित्रिपक साहच के पाम मैंने १२०) जमा कर दिये हैं,  
 जब तुम्हें आवश्यकता पड़े । उनसे ले लिया करना । हमसे तुम्हें सुविधा  
 रहेगी । मैं समझता हूँ कि तुम इस सुविधा का समुपयोग करोगे ।  
 तुम्हारी माता जी तुम्हें प्यार कहती हैं । प्रिय दिनेश तुमको नमस्ते  
 कहता है ।

तुम्हारा पिता,  
 वासुदेव शर्मा ।









पारो तरफ देवदार के गगनचुम्बी वृक्ष अपनी मन-भावनी छटा से दूरों से  
 का मन मोह रहे हैं । उबड़ी-उबड़ी हवा के झोंके हृदय में एक धाम्प्य  
 उत्पन्न कर रहे हैं । हमारा कालेज १३ मई को बन्द हो गया था । १० दिन  
 पिता जी के साथ जलनदक बिताये । १० जून तक मामा जी के पास  
 इलाहाबाद का धाम्प्य लूटा । १२ दिन म्यू देहली में चाचा जी के पास  
 रहा । चाचा जी के मेरी गिरणी हुई आरोग्यता की देखकर कहा कि इन  
 सुविधों को किसी पहाड़ी स्थान पर क्यों न बिताओ ? हमारे दफ्तर के  
 अनेक बापू गए हुये हैं, वही किसी के पास उतर आया । मुझे उनका  
 परामर्श बड़ा सुन्दर लगा । सबकुछ मुझे यहाँ बड़ा आनन्द अनुभव हो  
 रहा है ।

रैल में बकी भीष थी । हम कारण कुछ विशेष आनन्द नहीं पाया ।  
 काठिका पहुँचते-पहुँचते कुछ सहूलियत हो गई थीर वित्त की कुछ  
 आनन्द हुआ; क्योंकि काठिका पर मैदान से काफी दूर थी । कुछ पहाड़ों  
 के मजबूतारी दरभ भी सामने आकर झोझ रहे थे । गाड़ी पहाड़ियों  
 की बीरनी हुई मिमला पहुँचती है, रैल की परदिवी बने चक्करदार मार्गों  
 से गुजरती है । गाड़ी के एक तरफ महने लहु थे और दूसरी तरफ ऊँची २  
 चोटियाँ । ऐसी वाता में रेंडोवन की पहाड़ी बाधा थी ।

हमारी गाड़ी शाम के २ बजे कर ५२ पर मिमला पहुँची ० रात्रिमा  
 हाउस मुझे पहुँचता था । स्टेशन पर किशोरी की देवमा का । देवमा ने बहर  
 खेती हुई बना लकी से चरती थी । हमसे मरा जो बड़ा खड़ावा था । मैर,  
 राम राम करके परलगा हाउस पहुँचा । शाम के मान बत ११ ५ । शाम की  
 मि. मद्राचापों का अन्तिम रंग । १२ न मरा बना म कप किवा तिमि मे  
 हमसे मर नहीं लुँगा ।

१३ न कप उवाचन मरती १२ १२ ५ । १३ न की प्रथम मन्नाद मे  
 ही आचक मरती का मुँह बहाँ अनुभव हुआ । मार मरने करके बरक,  
 और मर की बक पहा । केमा अनुभव १ केमा मन्नादा ११ और केमा  
 आचक बहाँ का दरभ है १११ मन्नाद मरती के बहाँ मरने बर १६ है.



## (७) छोटे माई की पर

कन्या अमनास इण्टर कालेज,

मथुरा

१६ अगस्त, १९६६

प्रिय मेराजसिंह,

यह सुनकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि तुम परीक्षा में प्रथम सीढ़ी में उत्तीर्ण हुए हो। तुम्हारी मिठाई और पुरस्कार दोनों सुखित रह गये हैं। मेरे पुरस्कारों का निरीक्षण तो तुम जानते ही हो कि मैं ऐसी वस्तुओं पारितोषिक में देता हूँ जो मनोरंजन तो करें ही, साथ ही ज्ञान-बुद्धि और चरित्र-निर्माण करने में भी सहायता प्रदान करें। मेरी समझाव है कि तुम्हारा तुम्हो का अवकाश महापुरुषों के जीवन-चरित्र पढ़ने में व्यतीत हो तो बड़ा ही उत्तम है क्योंकि महापुरुषों के जीवन में ज्ञान और चरित्र दोनों की पर्याप्त सामग्री होती है। जीवन-चरित्र 'भारतीय-मनन' मथुरा के मैनेजर के द्वारा मैंने मंगा लिया है, उन्हें प्रिय बदनसिंह के हाथों समझे इच्छे भिजवा दूँगा। बदनसिंह २४ अगस्त को माता जी से मिलने पारसौख आ रहे हैं। तुम्हें चाहिये कि तुम इन पुरस्कारों की काफ़ी समझदारी के साथ इदर्यगम करते हुए गले लगे; पढ़ना। इस तरह से काफ़ी दिनों की तुम्हारे पास पढ़ने की सामग्री हो जायेगी।

मैं लगभग डेढ़ो पुरखों के जीवन-चरित्र तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। जिनका मुझे थोड़ा बहुत परिचय है। उन चरित्रों के पढ़ने से तुम यह बात अच्छी-भाँति समझ सकोगे कि समाज में नाम और शक्ति बड़े परिश्रम और तपस्वियों से प्राप्त होता है। जीवन-चरित्रों से एक और अच्छी बात देखोगे कि समाज में जिनके या महापुरुष हुए हैं, पर साधारण कष्ट से बढ़कर उम्दायन अथवा का क्लेश हुआ बना जिया है। इन महापुरुषों में प्रायः ऐसे महापुरुष निकले जिनका राज्य राज्य बड़ा कठिनाइयों में व्यतीत हुआ है। जिनके पास वे साधन का साधन या और न पण्ड का और न पढ़ने-लिखने का हा सुविधा रही थी। उनसे कुछ एवं भी है जिन्हें राज्य-



१—दृष्टी-प्रदर्शिका, १० प्रतिष्ठा

७—छोट-व्यवहार, १० प्रतिष्ठा

मन्दीप—  
विनोदकुमार वर्मा  
संस्थापक।

## ( १६ ) शोक-प्रस्ताव

हिन्दो-प्रचारिणी सभा देहली के सदस्यों की यह सभा पहिले  
वासुदेव शर्मा साहिबराज के अनेक पुत्र रमेशचन्द्र शर्मा की असाधारण  
मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि  
यह दिवंगत आत्मा की शान्ति प्रदान करे और उक्त वं जी तथा उनके  
संतत परिवार की धैर्य प्रदान करे ।

देहली  
२८ मार्च, १९२० ई०

## ( १७ ) याचना-पत्र

होशो दायाल, मधुगा ।  
१० मार्च, १९४६ ई०

श्री० शिवमनोमोह जी, एम. ए.

पत्र पत्र या मधुगा ।

प्रिय महाशय,

विगत तीन मास से आपन हमारे शान्ति निकलन बगले  
का किराया अब तक नहीं चुकाया । यद्यपि प्रमोदसद स मास  
प्रति मास चुकान का वचन है । इस समय तक बगले का किराया ५५) रु०





म्युनिमिपैन्डिटी से हमने छोड़ी है। प्रार्थना है कि आप हमारे हृदय में प्रेम को स्वीकार करेंगे।

देहली,

२० अक्टूबर १९४६

महोदय—

महावीरसिंह “राजपूत वंश”

दीदीबाग-देहली।

(२०) बघाई-पत्र

( मित्र को पुत्र-जन्म बघाई )

कैलाश कुटीर, काठपुर।

१६ मूल, १९४६

प्रिय राधाकृष्ण,

बघाई ! बघाई !! बघाई !!!

आप आनन्द का आराधक नहीं। आप अनुसूचित मुझे आनन्द ही आनन्द दृष्टिगोचर हो रहा है। संसार में पुत्र-रत्न से बड़ा कोई वस्तु नहीं है। क्यों न हो ? पुत्र है भी तो वंश का आधा। त्रिमय में पुत्र नहीं वह परमेश्वर तुल्य है। घर में धन है, कपड़ा है और देवर्षि है किन्तु एक पुत्र नहीं है तो सारा का सारा निरर्थक। निस्सन्देह पुत्र माता-पिता का शिखीना है, उनके सम्भोजन की वस्तु है, उनका सर्वस्व है और उनका प्राण है। पुत्र की सीतलो बाखी हृदय में अपना आनन्द उत्पन्न करती है हृदय को आकृषित करती है, और हृदय में अनुभूत शान्ति उत्पन्न करता है। संसार में पुत्र से बड़ा कोई धन नहीं और मुल्य नहीं। पुत्र विपत्ति के समय प्रायः हृदय की आश्रि, दुःख की लक्ष्मी और भाँसों की पुगली है। भगवान् को अपना कृपा है कि आपके घर पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ है। भगवान् इसको दीर्घजीवन, वंश, कीर्ति और देवर्षि प्रदान करें।



हमें जीवन में जिस प्रकार भोजन और निद्रा की आवश्यकता है वही प्रकार निर्वाण ध्यायाम की भी आवश्यकता है। ध्यायाम शरीर के अवयवों को ठीक रखता है। रक्त-संचार को तीव्र करता है। पाचन-शक्ति को बढ़ाता है। शक्त सुदृढ़ करता है। सुख की कानों को बढ़ाता है। निर्मलता कादि गुणों को विकसित करता है। मस्तिष्क में श्रृंखला प्रदान करता है।

**“शक्ति बने पुरती खडे, खोट न अधिक विराय ।**

संलग्न वृत्ते संज्ञा रहे, कस्यतः सद्यः सहाय्य ॥<sup>११</sup>

संसार में जितने बख्शाली और बख्शबी गुदर चुके हैं वह किसी-न-किसी रूप में अपराध व्यापाम करते थे । कोई रदखता था, कोई मद्रि-मिरीचक को निरक्ष आता था । कोई मृगया-विहारी था । कोई शौगान से प्रेम रखता था । अभिप्राय यह है किसी-न-किसी प्रकार का व्यापाम करते बर्हाम्य पुनर्जन्म करते थे और पुनर्पार्थ को बढ़ाने थे ।

कब तक स्वस्थ रहेंगे न होगा तब तक मरितक भी स्वस्थ और  
 रज्जुत्वादक न होगा। स्वस्थ रहने के लिये व्यायाम आवश्यक है। व्यायाम  
 में नहीं नहीं है कि हँसी हो लेखी जाये। पुटपुट लेजिये, बाजीबाज  
 लेजिये, तैजिये, थोड़े पर सवाही कीजिये, प्रातः काय छाये ज़ुमने निज  
 जाह्ये। निश्चय यह है कि किसी प्रकार हाथ-पैर को दिखाह्ये दूजाह्ये।  
 यह विचार होकर नहीं कि बहने में बाधा आती है और समय नहीं मिलता।  
 इसका जवाब कि जिसमिल व्यायाम के बिना समाज में जीवन सुन्दर नहीं  
 बन सकता।

अब दूसरे प्रश्न आता है कि दूसरे मठ हुए विचारों पर क्या स्थान देना चाहिए? अपने कर्मों का दूसरा फल नही आता? जिस सम्बन्ध में यह बात कहना : मित्र-मित्रता ही श्रेष्ठ व्यवस्था है। मित्रता ही ही सदा-सदायक ।

5297

15. संस्कृत भाषा में संज्ञा का व्यंजन ह है।







मुसाफिर सामिक पास खेकर गाथा करते हैं वही लक्ष्योक्त है । १ बजे के बाद २७ बजे तक कोई गाथी न ई. पी. जात. की और न ई. चार्ज. जात. की इधर जाती है । पूरे ४० घंटे तक हमें देहली में बसा रहना पड़ता है या छान्नी से जाना पड़ता है, जिसमें हमारे पास खेने का मलखल दख नहीं होता । ऐसी परिस्थिति में हम चापसे प्रार्थना करते हैं ३ और २ बजे के बीच कोई रेलख ट्रेन निकल देहली से मुजिबाबाद तक जारी करदी जाए तो हम लोगों का बहुत कुछ कष्ट कम हो सकता है । भगता है हमारी हम आशा पर ध्यान देने, और कोई रेलख ट्रेन के छोड़ने का प्रयत्न करेंगे ।

हम हैं चापके आशाकारी:—

शाहजहा-देहली  
१२ मार्च, १९२०

1-रयाममोहन इन्जीनियर, १-रायाममल  
कासर, ३-किशनकिशोर पोट्टमास्तर, ४-मल  
बाबू कुम्भेश्वर, इत्यादि इत्यादि ।

## (२७) कलक्टर साहब को लगान माफ करने का प्रार्थना-पत्र

भीमान्

श्रीमान् कलक्टर साहब

अलीगढ़ जिला, अलीगढ़ ।

सेवा में निवेदन यह है, अचानक १२ मार्च को हमारे गाँव पर ओखे गिरे । जिसके कारण सारी फसल खराब हो गई है । खेतों में न एक वर्गक मात्र होगा न एक तिनका । हम तो पारसाख ही अनापूर्ति के कारण बहुत परेशान हो रहे थे । अब इन पत्थरों ने गिर कर हमारे ऊपर पूरे पारसर गिरा दिये हैं । आशंकज हम भूखों मर रहे हैं । हमारे बाक-बखे बाने-दाने को तरसते हैं । लखर हमारी मजेस्त्रियों बिना चारों के मरी जा रही हैं । ऐसी परिस्थिति में हम गन-मस्तक हो चापसे प्रार्थना करते हैं कि आप गनी का सारा लगान माफ करने का हुक्म दे दोषियेगा ।

हमें पूर्ण आशा है कि आप हमारी हम महाकरुणिक रसा पर खरख ध्यान देने और रबी का सारा लगान माफ करके हम रोन-दुखियों

को रखा करेंगे। हम हरा के हन मने जीवन आभारी रहेंगे।

भीमान् के आजाकारी—

रबीपुर

लहमोख हगबाम

दिवा बलोग

१२ मार्च, १९२० ई०

१—नारायणसाद सुखिया, २—बाबू  
बम्बरदार, ३—निहोताव माझप, ४—  
गिरवर घोमर, ५—जीना खत्रीक हत्यादि

## (२८) नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र

भीमान् सेक्रेटरी साइव,

कनरुब-इटर-मीडर-कावेज, देहली १

माननीय महोदय जी,

सेवक ने आपका धुनीबर्निटी से फुल्टे दिवाज्वन (मयन थेदी) में  
बी. ए. पास किया है। पंजाब धुनीबर्निटी बी. टी. और एम. ए. बी.  
विपार्टमेन्ट परीक्षाएँ पास भी की हैं। हिन्दी की 'ग्रामाकर' और  
एडवान्स परीक्षाएँ भी सेवक ने पास की हैं। कद-पुस्तकें भी मिली हैं  
बी. ए. बी., सी. बी. और देहली यूनि में पार्स जर्नी हैं आपसे निबन्ध  
मानक पुस्तक, जो आपके स्कूल में सिम्नेर है, वह सेवक की ही बनाई  
हुई है। सेवक आजकल संस्कृत हाई स्कूल इलाहाबाद में हैं हिन्दी  
ग्रामाकर के पर पर काम कर रहा है। सेवक का स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।  
सब प्रकार के सेवकों का शौक है। सेवकों की उत्तमता के कद माटीकिंडेन्स  
और मैडिसन भी प्राप्त किये हुए हैं।

कद के हिन्दुस्तानी-युद्ध में वह सुवर्ण पदक कि





कमा हो जाने का आदेश है । जब सभी लोग भी  
और टीकों का जोर स्वाभाविक है । जिसमें कनेक्ट होना है  
सम्भावना है ।

कनः हम आपसे जल-मालक हो प्राप्ति करने है कि  
समय में परम ही परम हमारे इन कपों को जान लाना  
करा देंगे ।

हम हैं आपके आशावादी :-

- (१) रामप्रसाद गौड़, पकील, (२) लाल
- कमरचन्द, गौड़ बाजे । (३) रामनारायण मुनार
- (४) मुगलाल धोबी । (५) शम्भू रंगरेज ।
- (६) विविध पदारी इत्यादि ।

आशा ।

३० जून, १९६१

## (३०) सम्पादक के नाम पत्र

( बाद के सम्बन्ध में )

श्रीयुक्त प्रताप सम्पादक जी कानपुर,

बाद के समाचारों ने मेरे हृदय को व्यथित कर दिया । मैं  
कुछ सहायता और सेवा भावना लेकर पहुँचा था । वहाँ  
तोमाचकारी दरय, जो मैंने अपनी आँखों देखा है, बर्तन करने में  
रखनी बावली है । मेरे उत्तरी बिहार प्रान्त में भयंकर दल्लदकॉट  
चा हुआ है । मेरा पूर्वी प्रान्त -लमय हो गया है । पानी क  
निर्गम काट वस्तु नजर नही आता । पृथ्वी का शान्ति मात्र नजर  
ना है । लोग जल कुँव पर रन और दिन व्यतीत कर रह  
उनके ३५०० घन की मानन बढ गया है । गंगा, गडका  
और मान ने अपनी विकराल मूर्ति बना ली है । हमारे



इस विवाह के परचाव पिता जी कहते थे कि अबकी बार हम तुम्हें दम्पई ले चलेंगे । सम्भवतः पिताजी मई के आरंभिक सप्ताह में दम्पई जायें । दम्पई की अनायास सैर का आनन्द मिलेगा । मैंने मसुदा और जहाज़ नहीं देखे हैं । अतः दम्पई जाकर इन दोनों वस्तुओं के देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा । दम्पई के पास ही महादेवश्वर हैं, महादेवश्वर में छोटे चाचाजी रहते हैं । सुनते हैं महादेवश्वर की जलवायु यही स्वास्थ्य-वर्द्धक है । वहाँ यहाँ की भाँसमी नहीं पड़ती । प्रायुक्त ठण्ड रहती है । दम्पई गृह के बड़े लोग गर्मियों में महादेवश्वर की हवा खाने बहुत जाते हैं । सुनते हैं कि यहाँ प्राकृतिक द्रव्य बड़े ही मनोहारी हैं । कहीं कल-कल शब्द करने हुए झरने झरते हैं । कहीं सुन्दर बागों की शोभा निराली है । चाँों तरफ़ हरियाली-ही हरियाली दृष्टिगोचर होती है । मेरा बड़ा सौभाग्य होगा कि इन स्थानों की सुन्दर शोभा को अपने नेत्रों से अवलोकन करूँगा । यदि आव भी आ जायें तो बड़ा ही आनन्द हो । आपके साथ रहने में पूरी स्वतन्त्रता भी रहेगी और मनोरंजन भी भूव रहेगा ।

२० मई को यही जोड़ी को बिदा कराने लगनऊ जाना है । अतः महादेवश्वर से १८ मई के लगभग लौटूँगा । मुझे बड़ा हर्ष है कि इन घुट्टियों में मुझे लगनऊ देखने का भी सौभाग्य प्राप्त होगा । सुना है लगनऊ भी बड़ा सुन्दर नगर है । वहाँ का अजायब-घर, बनारस बाग़, अमानाबाद बाक़े, कोमिल हाऊस, पुनिर्विशेश भवन दखन योग्य है । हर्ष है कि इन वास्तव दृश्य का भी मुझे सौभाग्य प्राप्त होगा ।

मैं इसाहाबाद से ऊपर गया हूँ। इस वर्ष मेरी कुछ अभिलाषा है कि मैं बनारस यूनिवर्सिटी में अपना भागदान दान कर दूँ। १० बीलाई को बनारस यूनिवर्सिटी मुख रही है। मैं चाहता हूँ कि राज्य में अपना कामा सिद्ध कर, इसलिये यूनिवर्सिटी मुखने में कुछ दिन पहले बनारस पहुँच जाऊँ।

इस कामा यात्रा में आप मेरे साथ रहें तो बड़ा आनन्द हो। कृपया अपने पिता जी से अनुमति लेकर इस यात्रा के लिये तैयार हों। मुझे पूर्ण आशा है कि आप मेरी इस योजना को सहर्ष स्वीकार कर मुझे लिखेंगे।

मेरा नाम सब पूर्ववत् है।

आपका दूरदर्शक मित्र—

सदस्य-सद्वत्तापनी ।

